आज़ादी का अमृत महोत्सव

अक्षय्यम्

बैंक ऑफ़ बड़ौदा की हिन्दी पत्रिका

अक्तूबर–दिसंबर, 2021 अंक

बैंक ऑफ़ बड़ौदा
Bank of Baroda

कार्यपालक निदेशक द्वारा भुवनेश्वर क्षेत्र की ई-पत्रिका का विमोचन

कार्यपालक निदेशक श्री देबदत्त चांद द्वारा दिनांक 01 दिसंबर, 2021 को भुवनेश्वर क्षेत्र की तिमाही ई–पत्रिका ''उत्कलप्रभा'' के प्रथम अंक एवं भुवनेश्वर–2 क्षेत्र की तिमाही ई–पत्रिका ''कलिंगायन'' का विमोचन किया गया. इस अवसर पर मुख्य महाप्रबंधक (कॉर्पोरेट फाइनेंस) श्री सुब्रत कुमार, अंचल प्रमुख एवं महाप्रबंधक, पटना अंचल श्री संजीव मेनन, नेटवर्क डीजीएम (पटना अंचल) डॉ. रमेश कुमार महांती, क्षेत्रीय प्रमुख, भुवनेश्वर क्षेत्र श्री राजीव कृष्णा, क्षेत्रीय प्रमुख, भुवनेश्वर–2 क्षेत्र श्री अन्मय कुमार मिश्रा तथा क्षेत्रीय प्रमुख, संबलपुर क्षेत्र श्री ए पी दास तथा तीनों क्षेत्रों के शाखा प्रमुख उपस्थित रहे.

नराकास, वडोदरा का वार्षिक राजभाषा समारोह आयोजित

दिनांक 22 दिसंबर, 2021 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), वडोदरा द्वारा वार्षिक राजभाषा समारोह–2021 का आयोजन किया गया. कार्यक्रम की अध्यक्षता मुख्य महाप्रबंधक (परिचालन) श्री अजय कुमार खोसला ने की. इस अवसर पर निदेशक (सेवा/ कार्यान्वयन) भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, नई दिल्ली श्री बी.एल. मीना एवं उप निदेशक (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पश्चिम), मुंबई डॉ. सुस्मिता भट्टाचार्य विशेष रूप से उपस्थित रहे. कार्यक्रम में अन्य गतिविधियों के साथ–साथ वडोदरा के साहित्यकार डॉ. वंसीधर शर्मा को 'सयाजी साहित्य सम्मान पुरस्कार' प्रदान किया गया.

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश

प्रिय साथियो,

नर्व वर्ष 2022 की आप सभी को बहुत-बहुत शुभकामनाएं.

'अक्षय्यम्' के माध्यम से आपसे संवाद करना मेरे लिए प्रसन्नता की बात है. सर्वप्रथम मैं आप सभी के प्रयासों की सराहना करना चाहूंगा जिसके कारण आज हमारा बैंक कोरोना महामारी के विभिन्न दौरों में इन कठिन परिस्थितियों का अत्यंत साहस से सामना करते हुए एक बार पुनः नई उड़ान भरने को तैयार है. कोरोना का नया वेरिएंट 'ऑमिक्रॉम' भारत में दस्तक दे चुका है और तेजी से फैल रहा है. हालांकि स्टाफ-सदस्यों के टीकाकरण का कार्य काफी हद तक पूरा हो चुका है तथापि, हम सभी को काफी सावधानी बरतने की जरूरत है. आप सभी से अनुरोध है कि शाखा, कार्यालय एवं अपने घर में भी कोरोना संबंधी नियमों का पूरा ध्यान रखते हुए एवं अपना, अपने परिवार एवं अपने सहकर्मियों का पूरा ख़याल रखें.

दिसंबर 2021 तिमाही बैंक के व्यवसाय विकास के साथ-साथ अन्य सामाजिक पहलुओं की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण रही है. बैंकिंग संस्थान में काम करते हुए व्यवसाय संवर्धन हमारा मुख्य लक्ष्य तो है ही परंतु इसके साथ हमारे कुछ सामाजिक दायित्व भी हैं जिनका निर्वहन व्यवसाय विकास के समानांतर ही अत्यधिक महत्व रखता है. समय की मांग के अनुसार स्वयं में अपेक्षित परिवर्तन लाना जरूरी है. हम अपने बैंक की ही बात करें तो हमें बैंकिंग जगत में अपने समकक्ष बैंकों के बीच अपनी स्थिति को बेहतर बनाए रखने के लिए अपने उत्पादों और सुविधाओं के दायरे में विस्तार करते हुए इन्हें बेहतर बनाना आवश्यक होता है. इसी प्रसंग में बैंक ने पिछले दिनों *बीओबी बीपीसीएल रूपे को-ब्रांडेड डेबिट कार्ड* की शुरूआत की जिसमें ग्राहकों के लिए इंसेंटिव अर्जित करने की भी सुविधा प्रदान की गई है. माह अक्तूबर में हमने *'बड़ौदा किसान पखवाड़ा'* के चौथे एडिशन का आयोजन किया. इस आयोजन का उद्देश्य आर्थिक विकास में कृषक समाज की भूमिका को रेखांकित करने के साथ-साथ उनके उत्थान के लिए भी कार्य करना है.

बैंक ने कृषि ऋण प्रोसेसिंग को सरल बनाने के लिए अपने अंचलों में *सीएएमपी* (सेंटर फॉर एग्रिकल्चर मार्केटिंग एंड प्रोसेसिंग) का भी गठन किया है. हम जानते हैं कि पिछले दिनों बेहद कठिन परिस्थितियों में भी कृषि क्षेत्र ने बेहतर कार्यनिष्पादन दर्ज किया है. विशेष बात यह है कि आज भारत में कृषि को तकनीक से जोड़ने के लिए कई एग्री कंपनियां आगे आ रही हैं. ऐसा इसलिए कि आज कृषि क्षेत्र को अपेक्षाकृत कम लागत में बेहतर परिणाम देने के अवसर रूप में देखा जा रहा है. यह भी महत्वपूर्ण है कि जब पूरा देश आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है तो ऐसे में हम कृषि और संबंद्ध गतिविधियों में सतत् विकास की राह को अपनाएं.

हाल ही में बैंक ने फिटनेस ऑइकन मिलिंद सोमन के साथ *'ग्रीन राइड- एक पहल स्वच्छ हवा की ओर'* की शुरूआत की. मेरा मानना है कि संवहनीयता (Sustainability) किसी भी मजबूत राष्ट्र के लिए जरूरी है. हमारा बैंक भी पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ *सस्टेनेबल लिविंग* की अवधारणा को बढ़ावा देता रहा है. बैंक ने इस दिशा में पेपरलेस बैंकिंग के साथ अन्य पर्यावरण-हित संबंधी पहलों पर जोर दिया है.

बैंक अपनी सेवाएं प्रदान करते समय सभी वर्ग के ग्राहकों का समान रूप से ध्यान रख रहा है. इस दिशा में कार्य करते हुए बैंक ने हाल ही में मध्य वर्ग के ग्राहकों के गृह ऋण की मांग को ध्यान में रखते हुए *सेंट्रम हाउसिंग फाइनांस लिमिटेड* (सीएचएफएल) के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं जो ऐसे टियर-2 और टियर-3 शहरों में वित्त की सुविधाएं दे रहा है, जो पारंपरिक ऋणदाता संस्थानों द्वारा अभी तक उपेक्षित हैं. इन इलाकों को पर्याप्त ऋण सुविधाएं मुहैया कराना निश्चित रूप से समावेशी बैंकिंग की दिशा में की गई एक अहम पहल है और बैंक के ऋण सेगमेंट व्यवसाय के लिए भी लाभदायक है.

बैंक द्वारा की गई पहलों में सभी स्टाफ-सदस्यों की सक्रिय भागीदारी का होना आवश्यक है. इस सोच के साथ कार्य करते हुए हम अपने प्रयासों को धरातल पर लागू करने में सफल हो सकेंगे जो हमें स्वप्रेरणा प्रदान करेगा. वास्तव में हमारी स्वप्रेरणा ही हमें सकारात्मक दिशा में कार्य करने के लिए अभिप्रेरित करेगी. आनेवाले दिन बैंक के व्यवसाय विकास के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण हैं. वित्तीय वर्ष 2022 की शेष अवधि में हमें अभी तक की कमियों को दूर करने के लिए अपने प्रयासों को तेज करना चाहिए ताकि हम निर्धारित व्यावसायिक लक्ष्यों को प्राप्त करते हुये बैंक व्यवसाय को नई ऊंचाइयों तक ले जा सकें.

शुभकामनाओं सहित,

संजीव चड्ढा
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी

कार्यपालक निदेशक की डेस्क से

प्रिय साथियो,

बैंक की हिंदी पत्रिका *'अक्षय्यम्'* के माध्यम से आप सभी से संवाद करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है. हम वित्त वर्ष 2021-22 की समाप्ति के आखिरी दौर में हैं. इस दौरान हमारे द्वारा किया गया कार्यनिष्पादन साल भर की उपलब्धियों की दिशा तय करेगा. इसलिए हम सभी को इस बचे हुए समय में बैंक के लिए गुणवत्तापूर्ण व्यवसाय संग्रहित करने हेतु सक्रिय एवं समन्वित प्रयास करने की आवश्यकता है.

हम बैंक में व्यवसाय विकास के साथ-साथ एक जागरूक संस्थान के रूप में समाज के प्रति अपने दायित्वों को भी निभाते आए हैं. हम एक ऐसी ब्रांड छवि के रूप में स्थापित हैं जो समाज के सामने व्यवसाय के साथ सामाजिक सरोकारों का अच्छा संतुलन प्रस्तुत करता रहा है. हाल ही में 2 दिसंबर, 2021 को राष्ट्रीय प्रदूषण नियंत्रण दिवस के रूप में मनाया गया और बैंक ने भी प्रसिद्ध अभिनेता एवं फिटनेस आइकन मिलिंद सोमन की साइकिल यात्रा को प्रायोजित कर एक हरित पहल के जरिए पर्यावरण संरक्षण और लोगों में अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता का प्रसार कर समाज के प्रति फिर से अपनी जिम्मेदारी व्यक्त की है.

बैंकिंग एक सेवा क्षेत्र है जिसमें ग्राहकों की सेवा सर्वोपरि है. अत: सेवा का भाव हमारे व्यवसाय की आधारशिला है. हम बैंकिंग-रहित एवं कम बैंकिंग सुविधा वाले दूरस्थ क्षेत्रों में अपनी सेवाएं तो पहुंचा ही रहे हैं साथ-साथ हमें समाज के प्रति अपने सेवा भाव को भी निरंतर पोषित करने की आवश्यकता है. हमें अपने मौजूदा ग्राहकों के साथ-साथ संभावित ग्राहकों को केंद्र में रखते हुए अपनी सारी गतिविधियों को अंतिम रूप देना होता है. हमारी शाखाओं में कार्यरत स्टाफ सदस्य हमारे बैंक का चेहरा हैं. कोरोना महामारी के इस चुनौतीपूर्ण समय में जिस धैर्य एवं हिम्मत से आप सभी ने ग्राहकों की सुविधाओं का ध्यान रखते हुए उन्हें बैंकिंग सुविधाएं उपलब्ध करवाई हैं, जिस सेवा भाव से काम किया है उससे हमारे बैंक की छवि और सुदृढ़ हुई है.

बैंक एक संस्थान है परंतु हम सभी मिलकर अपने कार्यों से इसमें जीवन का संचार करते हैं. हमने ग्राहकों का जो भरोसा कमाया है वह केवल बैंकिंग सुविधाओं के कारण नहीं है परंतु बैंकिंग सुविधाओं को जिस अपनत्व के साथ उन तक पहुंचाया जा रहा है, उसके कारण है. वैश्विक महामारी की स्थिति आज भी पूरी तरह से ठीक नहीं हुई है, ऐसे में व्यवसाय विकास के साथ-साथ सेवा भाव के गुण को भी आत्मसात करना जरूरी है. मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप सभी मिलकर बैंक की छवि को और भी अधिक ऊंचाई प्रदान करेंगे एवं हमारे बैंक को ग्राहकों का *'सर्वाधिक पसंदीदा बैंक'* बनाएंगे.

शुभकामनाओं सहित,

विक्रमादित्य सिंह खीची

कार्यपालक निदेशक की डेस्क से

प्रिय साथियो,

'अक्षय्यम्' के माध्यम से आपसे संवाद करना मेरे लिए प्रसन्नता की बात है. हमारी कार्यप्रणाली में निरंतर आंतरिक एवं बाहरी संवाद आवश्यक है और ऐसे संवाद के माध्यम से निर्धारित लक्ष्य वर्ग तक अपना संदेश पहुंचा पाना भी अत्यंत जरूरी है. आज के प्रतिस्पर्धी बैंकिंग जगत में अपनी स्थिति को मजबूत बनाए रखने के लिए व्यवसाय विकास के नवोन्मेषी तरीकों को अपनाना भी महत्वपूर्ण है.

आज बैंकों द्वारा अपने ग्राहकों को सरलतम बैंकिंग सेवाएं प्रदान करने के लिए डिजिटल माध्यमों का उपयोग किया जा रहा है. पिछले कुछ वर्षों में डिजिटल भुगतान लेन-देन की संख्या में काफी बढ़ोत्तरी हुई है. यह प्रसन्नता की बात है कि आज हमारे ग्राहक डिजिटल माध्यम से लेनदेन करना पसंद कर रहे हैं. ग्राहकों की पसंद को देखते हुए भारतीय रिज़र्व बैंक भी डिजिटल माध्यम से प्रदान की जाने वाली बैंकिंग सुविधाओं को सुरक्षित बनाने के लिए समय-समय पर नियामक उपाय कर रहा है जिससे हम अपने डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर को और मजबूत कर रहे हैं. गौरतलब है कि भारत सरकार के स्तर से भी ई-पेमेंट्स को प्रोत्साहित किया जा रहा है और मोबाइल नेटवर्क को बेहतर बनाने हेतु भी आवश्यक कदम उठाए जा रहे हैं. इस दिशा में डिजिटल विलेज की संकल्पना पर भी कार्य किया जा रहा है जिसके तहत डिजिटल माध्यम से शिक्षा, स्वास्थ्य और अन्य सुविधाओं के साथ वित्तीय समावेशन परियोजनाओं का क्रियान्वयन शामिल है.

बैंक ने अपनी रूपांतरण पहलों के तहत ***बॉब वर्ल्ड मोबाइल ऐप*** को एक डिजिटल बैंक का रूप देने के साथ-साथ ***शॉपिंग प्लेटफॉर्म*** का रूप दिया है. जहां ग्राहक किफायती कीमत पर अपनी पसंद और जरूरत की चीजों की खरीदारी कर सकते हैं. इसके अलावा समय की मांग और ग्राहकों के रूझान को देखते हुए बैंक ने प्रमुख ई-कॉमर्स साइटों तथा स्टार्ट-अप कंपनियों के साथ करार किया है जो बैंक के व्यवसाय विकास के साथ-साथ ग्राहकों के लिए भी हितकर है.

बॉब वर्ल्ड मोबाइल ऐप प्लेटफॉर्म पर वीडियो केवाइसी की सुविधा के साथ तत्काल खाता खोलना, वैयक्तिक ऋण, लॉकर, बीमा, स्वर्ण ऋण, कार ऋण, कृषि ऋण, बॉब क्रेडिट कार्ड, एनपीएस में योगदान, रिचार्ज एवं बिल भुगतान की सुविधाएं दी गई हैं. हाल ही में बैंक ने ***बॉब वर्ल्ड वेव – वियरेबल पेमेंट सॉल्यूशन*** की भी शुरूआत की है. ***बॉब वर्ल्ड वेव*** का उद्देश्य लोगों को अपनी सेहत की देखभाल की सुविधा प्रदान करने के साथ-साथ भुगतान की प्रक्रिया को आसान बनाना है. यह जरूरी है कि हम अपने डिजिटल उत्पादों के बारे में ग्राहकों के बीच जागरूकता फैलाएं तथा उन्हें इन सुविधाओं का अधिकतम लाभ उठाने के लिए अभिप्रेरित करें. इससे न केवल हम अपनी ग्राहक सेवा को बेहतर बना सकेंगे बल्कि इन माध्यमों के जरिए अधिकांश सेवाएं प्रदान करने पर हमारा समय भी बचेगा जिससे हम बैंक के व्यवसाय विकास के दूसरे पहलू पर अपना ध्यान केंद्रित कर पाएंगे.

मुझे विश्वास है कि हम समय की मांग के अनुरूप अपने बैंक में ग्राहकों के अनुकूल अच्छे परिवर्तन लाने में सफल होंगे जो हमारे बैंक को नई ऊंचाइयों पर ले जाने में सहायक साबित होगा.

नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

अजय के खुराना

कार्यपालक निदेशक की डेस्क से

प्रिय साथियो,

बैंक की हिंदी पत्रिका *'अक्षय्यम्'* के माध्यम से आप सभी से पुन: मुखातिब होते हुए मुझे सुखद अनुभूति हो रही है. सर्वप्रथम मैं आप सभी को नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं और ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि यह वर्ष आप सभी के जीवन में सुख, समृद्धि एवं प्रगति के नए द्वार खोले.

हम एक लंबे समय से अत्यंत ही चुनौतीपूर्ण दौर का सामना कर रहे हैं. जब जब वैश्विक महामारी के कम होने का अहसास होता है तब-तब यह एक नए रूप के साथ हमारे सामने फिर चुनौती प्रस्तुत कर देता है. हमारे जीवन में भी चुनौतियों का सिलसिला ऐसे ही जारी रहता है. हर दिन हमारे सामने एक नई चुनौती होती है और जीवन की सुंदरता इसी बात में है कि हम इन चुनौतियों का कितने धैर्य एवं हिम्मत से सामना करते हैं. चुनौतियों पर जीत पाकर हम अपने व्यक्तित्व को और अधिक निखारते हैं. इस प्रक्रिया में हम कल से ज्यादा बेहतर और अनुभवी बन जाते हैं. अपने कार्यालयीन जीवन में भी हम हर दिन कुछ नया सीख कर नए अनुभव प्राप्त करते हैं और अपने बेहतर अनुभव के जरिए ग्राहकों को श्रेष्ठतम सेवा प्रदान करने में सफल हो पाते हैं. संतुष्ट ग्राहक हमारे व्यवसाय संवर्धन के आधार हैं.

बैंकिंग संस्थान होने के नाते हमारा मुख्य उद्देश्य है कि हम जन-जन तक बैंकिंग सुविधाएं पहुंचाएं. इसी लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए हम व्यवसाय वृद्धि और लाभप्रदता के साथ ग्राहकों तक श्रेष्ठ बैंकिंग उत्पाद एवं सेवाएं पहुंचाने के लिए प्रयासरत रहते हैं. हमारी इसी सद्भावना के कारण राष्ट्रीयकृत बैंकों पर आम जन का भरोसा अटूट रूप से बना हुआ है. हमें उनके इस भरोसे को कायम रखना है. भाषा ग्राहकों के साथ रिश्तों को प्रगाढ़ करने का एक सार्थक माध्यम है. हमारा बैंक अपनी सभी सुविधाओं में हिंदी एवं अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के समावेश हेतु लगातार प्रयास कर रहा है. हमारे ग्राहकों एवं बैंक के बीच संबंधों में प्रगाढ़ता के लिए भी इस ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है.

मुझे पूर्ण विश्वास है कि नव वर्ष के आग़ाज़ के साथ वित्त वर्ष की इस अंतिम तिमाही में आप सभी अपने प्रयासों से निर्धारित व्यावसायिक लक्ष्यों को न केवल हासिल करेंगे बल्कि आदर्श स्थिति अर्जित कर पाएंगे.

शुभकामनाओं सहित,

देबदत्त चांद

कार्यपालक निदेशक की डेस्क से

प्रिय साथियो,

बैंक की हिंदी पत्रिका *'अक्षय्यम्'* के नवीनतम अंक के माध्यम से आपसे पहली बार संवाद करना मेरे लिए विशेष अवसर है. पत्र-पत्रिकाएं हमारे ज्ञान के विकास के इंधन के रूप में कार्य करती हैं. अपने ज्ञान में बढ़ोतरी करने के लिए नियमित रूप से इनका पठन-पाठन जरूरी है. बैंक की इस हिन्दी पत्रिका में हम बैंकिंग सहित अन्य सामाजिक, समसामयिक विषयों पर आलेख और बैंक की राजभाषा संबंधी गतिविधियों की रिपोर्टों को शामिल करते हैं जिससे हमें पूरे बैंक में राजभाषा संबंधी की जा रही पहलों की झलक मिलती है.

हाल के दिनों में पूरी दुनिया में बैंकिंग क्षेत्र के कार्य का दायरा पहले से कहीं अधिक विस्तृत हुआ है. भारत की बात करें तो देश के कई इलाकों में जहां बैंकिंग सेवाओं को पहुंचाना दुभर था, आज तकनीक और हमारे नवोन्मेषी प्रयासों के जरिए हम उन इलाकों में बैंकिंग सेवाएं उपलब्ध कराने में सफल हुए हैं. इस प्रकार समाज की उन्नति में बैंकों की भूमिका अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा कहीं अधिक बढ़ी है. समाज के उत्थान के लिए जो भी सरकारी पहलें की जाती हैं उनमें सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक आगे बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेते हैं और समाज के प्रत्येक वर्ग तक वित्तीय राहत पहुंचाना सुनिश्चत करते हैं. आज डिजिटलीकरण के दौर में बैंकिंग सेवाओं को डिजिटल रूप देने में हमने काफी प्रगति की है. आज बैंक सबके मोबाइल तक प्रवेश कर बहुत ही आसान तरीके से अपनी सुविधाएं प्रदान करने में सक्षम हुआ है. ग्राहक अब बैंकिंग ऐप विशेषकर हमारे बैंक के *'बॉब वर्ल्ड'* ऐप के जरिए न केवल बैंकिंग सेवाएं प्राप्त कर रहे हैं बल्कि बेहतर बाजार मूल्यों पर अपनी जरूरत की चीजों की खरीदारी भी कर रहे हैं. हम अपने ग्राहकों को उनकी ही भाषा में डिजिटल सेवाएं उपलब्ध करवा रहे हैं. डिजीटलीकरण के बढ़ते प्रचलन से वर्चुअल वर्ल्ड में बैंकिंग सुविधाओं को लगातार सुरक्षित रखने की आवश्यकता भी बढ़ गई है और इस दिशा में हमारे लिए स्वयं को भी अद्यतन रखकर ग्राहकों को जागरूक करना अत्यंत आवश्यक है.

यह महत्त्वपूर्ण है कि हम नए दौर की बैंकिंग में बैंक के लिए आय अर्जन के सभी उचित माध्यमों को तलाशें और इनके जरिए बैंक के व्यवसाय को बढ़ाएं. हिंदी और हमारी अन्य क्षेत्रीय भाषाएं बैंक के व्यवसाय विकास तथा लोगों की आर्थिक उन्नति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती आई हैं. इन भाषाओं के जरिए हम प्रत्येक वर्ग के ग्राहकों को खुद से लंबे समय तक जोड़े रख सकते हैं और उन्हें बेहतर एवं स्मरणीय ग्राहक अनुभव प्रदान कर सकते हैं.

मुझे पूरा विश्वास है कि वित्तीय वर्ष 2021-22 की बची हुई अवधि में आप सभी बैंक के लिए व्यवसाय संगृहीत करने में अपना श्रेष्ठ योगदान करेंगे.

शुभकामनाओं सहित,

जयदीप दत्ता राय

अक्षय्यम्

बैंक ऑफ़ बड़ौदा की हिंदी पत्रिका

वर्ष – 18 * अंक – 68 * अक्तूबर–दिसंबर 2021

-: कार्यकारी संपादक :-

संजय सिंह

प्रमुख – राजभाषा एवं संसदीय समिति

-: संपादक :-

पुनीत कुमार मिश्र

सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा एवं संसदीय समिति)

-: सहायक संपादक :-

अम्ब्रेश रंजन कुमार

वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

सुमेधा

प्रबंधक (राजभाषा)

-: संपर्क :-

राजभाषा विभाग

बैंक ऑफ़ बड़ौदा, बड़ौदा भवन, पांचवी मंजिल,
आर सी दत्त रोड, अलकापुरी, बड़ौदा – 390007
फोन : 0265–2316581
ईमेल : rajbhasha.ho@bankofbaroda.com
akshayyam@bankofbaroda.com

राजभाषा विभाग, बैंक ऑफ़ बड़ौदा,
पांचवी मंजिल, आर सी दत्त रोड, अलकापुरी,
बड़ौदा – 390007 से संपादित एवं प्रकाशित.

रुपांकन एवं मुद्रण

मे. प्रिंट प्लस प्रा.लि.,
212, स्वस्तिक चेंबर्स, एस.टी. रोड,
चेंबूर, मुंबई 400071.

प्रकाशन तिथि : 20/01/2022

सूचना :

बैंक के स्टाफ सदस्य पत्रिका में प्रकाशन हेतु अपनी रचनाएं/ सामग्री
ई–मेल: akshayyam@bankofbaroda.co.in
पर भेज सकते हैं.

अनुक्रमणिका

इस अंक में

सीखने की जिज्ञासा हमारे व्यक्तित्व विकास के लिए आवश्यक है: अलापाटी 8–10

कला और संस्कृति का संगम : केरल 11–15

स्वतंत्रता के 75 वर्ष 16–17

व्यवसाय वृद्धि में राजभाषा एवं क्षेत्रीय भाषाओं का महत्त्व 18–20

भाषा बहता नीर – आइये! सीखें भारतीय भाषाएं... 26–27

स्पर्श 28–29

बढ़ती जनसंख्या और पारिस्थितिकी सन्तुलन 30–31

बीसी केंद्र : निवारक सतर्कता 37–38

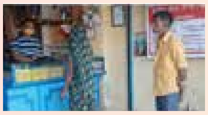

संस्मरण: मॉल विजिट का पहला अनुभव.......... 39–40

संप्रेषण की आवश्यकता एवं महत्त्व................. 41–42

समर्पण और ऊहापोह का वृत्तांत : ‘मल्लिका’ 43–44

अपने ज्ञान को परखिए 45

बैंकिंग शब्द मंजूषा 46

वक्त (कहानी) 47–49

चित्र बोलता है 50

अक्षय्यम्, बैंक ऑफ़ बड़ौदा की सभी शाखाओं/कार्यालयों में नि:शुल्क वितरण के लिये प्रकाशित की जाती है, इसमें व्यक्त विचारों से बैंक का सहमत होना आवश्यक नहीं है.

कार्यकारी संपादक की कलम से

नव वर्ष 2022 की हार्दिक शुभकामनाएं. *'अक्षय्यम्'* के जरिए आप तक अपने विचार पहुंचाना मेरे लिए विशेष अवसर है. मानवीय संवेदनाएं हमें पृथ्वी पर दूसरे प्राणियों से अलग बनाती हैं. हम चाहे किसी भी पेशे से जुड़े रहें, उस पेशे में अपने कार्य से लगाव होना अत्यधिक जरूरी है. बैंकिंग में तकनीक के समावेश से यह क्षेत्र अधिक गतिमान बना है. मौजूदा दौर में बैंकिंग उद्योग बहुत तेजी से बदल रहा है. प्रत्येक बैंकिंग संस्थान में ग्राहकों को बेहतर से बेहतर बैंकिंग सेवा प्रदान करने तथा अपने उत्पाद उन्हें प्रस्तुत करने की कड़ी प्रतिस्पर्धा देखी जा रही है. ऐसे में बैंक के स्टाफ सदस्यों का अपने कार्य से गहरा लगाव तथा इनमें समय के अनुरूप लगातार परिवर्तन लाना स्वयं एवं संस्थान दोनों के ही हित में है. लगातार अपने कार्य में बेहतरी लाना हमारी दक्षता और संतुष्टि को बढ़ाने में भी सहायक है. संस्थान में कार्य करते हुए हमारा यह भी दायित्व बनता है कि हम स्वयं के साथ-साथ अपने सहयोगी को भी दक्ष बनाने में अग्रणी भूमिका निभाएं. हमारी यह सोच हमारे कार्य को संतुलित बनाने में भी उपयोगी है.

नए विचारों का सृजन और इन्हें प्रभावी तरीके से लागू करना भी प्रगतिशील मानव समाज की अनोखी विशेषता है. इसके जरिए न केवल हम अपनी राह आसान करते हैं बल्कि औरों को भी सही दिशा तय करने में उनकी मदद करते हैं. इस प्रकार हम अपने सामूहिक प्रयासों से सफलता की राह पर आगे बढ़ते हैं. हमारा यह प्रयास हमारे आस-पास एक प्रसन्नचित वातावरण का निर्माण करता है, जो हमारे व्यक्तित्व को बेहतर बनाने में हमारी मदद करता है. नवीनता, उत्कृष्टता की यात्रा कभी न समाप्त होने वाली होती है. इस यात्रा में अनेक पड़ाव आते हैं एवं मील स्तंभ स्थापित किए जाते हैं. इसी यात्रा के अगले चरण के रूप में नूतन वर्ष 2022 में प्रस्तुत है पत्रिका का यह नवीन अंक. इस अंक में हमने व्यक्तित्व विकास के संबंध में टैगलाइन गुरु के नाम से प्रसिद्ध **श्री लक्ष्मीनारायण अलापाटी** जी के साक्षात्कार को शामिल किया है. साक्षात्कार में व्यक्तित्व के समग्र विकास हेतु ध्यान देने वाली बातों को काफी बारीक विश्लेषण शामिल है. निश्चित रूप से बड़ौदियन साथी इसे उपयोगी पाएंगे. इसके अलावा **शांति जोशी** के आलेख - केरल की कला एवं लोक संस्कृति, आज़ादी के अमृत महोत्सव पर **अभिषेक वर्मा** के आलेख, **मनीष झा** के आलेख- *बैंकिंग व्यवसाय वृद्धि में क्षेत्रीय भाषाओं का महत्व*, **किरन सिंह** का *बढ़ती जनसंख्या और पारिस्थितिकी संतुलन* जैसे महत्वपूर्ण आलेख सहित, अन्य रचनाएं एवं गतिविधियां भी शामिल हैं जो पाठकों को रूचिकर लगेंगी.

मुझे विश्वास है कि पत्रिका का यह अंक आपको पसंद आएगा और आप हमें अपनी प्रतिक्रिया से भी अवगत कराएंगे.

शुभकामनाओं सहित,

संजय सिंह

प्रमुख - राजभाषा एवं संसदीय समिति

इस अंक में

कला और संस्कृति का संगम : केरल 11-15

व्यवसाय वृद्धि में राजभाषा एवं क्षेत्रीय भाषाओं का महत्त्व 18-20

स्पर्श 28-29

बीसी केंद्र : निवारक सतर्कता 37-38

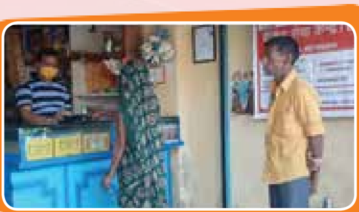

सीखने की जिज्ञासा हमारे व्यक्तित्व विकास के लिए आवश्यक हैः अलापाटी

बैंक द्वारा शुरू की गई 'भाषाई चौपाल' की तीसरी कड़ी में हमने टैगलाइन किंग के नाम से मशहूर मोटिवेशनल स्पीकर श्री लक्ष्मीनारायण अलापाटी से कार्यालयीन जीवन को सुचारू रूप से जारी रखने के साथ-साथ व्यक्तित्व विकास के जरूरी पहलुओं पर उनके व्याख्यान को सुना. आप एक एडवरटाइजिंग विशेषज्ञ एवं मोटिवेशनल स्पीकर हैं. आप संस्कृत, हिंदी, तेलुगु और अन्य दक्षिण भारतीय भाषाओं तथा अंग्रेजी के ज्ञाता हैं. अभी तक आपके 400 से अधिक फिक्शन एवं नॉन फिक्शन आलेख तथा पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं. आपने दूरदर्शन एवं अन्य चैनलों के लिए कई नाटक, लिरिक्स एवं डायलॉग लिखे हैं. अपने वॉइस बेस्ड परियोजनाओं के लिए आपको कई राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर के पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं. अक्षय्यम् के इस अंक में हम व्यक्तित्व विकास विषय पर उनसे हुई बातचीत के प्रमुख अंश अपने पाठकों के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं. **– संपादक**

कृपया पाठकों को अपने बारे में बताएं?

मैं मूल रूप से आंध्र प्रदेश से संबंध रखता हूं. मैंने साहित्य में स्नातकोत्तर की पढ़ाई की है. इसके अलावा मैंने अनुवाद में डिप्लोमा भी किया है. मैं संस्कृत, हिन्दी, तेलुगु और अन्य दक्षिण भारतीय भाषाएं जानता हूं. लिखने-पढ़ने में मेरी रूचि रही है और मैंने चार सौ से अधिक आलेख और पुस्तक लेखन भी किया है. वर्तमान में मैं अलग-अलग माध्यमों से मोटिवेशनल स्पीकर के रूप में सक्रिय हूं.

हम अपने व्यक्तित्व को कितने हिस्सों में बांट सकते हैं?

मेरे हिसाब से हम व्यक्तित्व को तीन हिस्सों में बांट सकते हैं. **पहला – भौतिक व्यक्तित्व, दूसरा – मानसिक व्यक्तित्व और तीसरा – आत्मिक व्यक्तित्व.** भौतिक व्यक्तित्व की बात करें तो यह हमारे शारीरिक व्यक्तित्व से संबंधित है. आज समाज में शारीरिक फिटनेस को लेकर कई समस्याएं देखी जा रही हैं. लोग अपने काम को लेकर भी शिकायत करते हैं, दुखी रहते हैं. पहले के जमाने में, जबकि आज की तरह सुविधाएं उपलब्ध नहीं थीं फिर भी लोग खुश रहा करते थे. वास्तव में हम जो काम पसंद करते हैं उसे करते हुए हम दुःखी नहीं होते. इसलिए हमें अपने काम से प्रेम करना चाहिए. दुःखी मन से काम करने से काम बोझिल हो जाता है. व्यक्तित्व विकास के लिए शारीरिक फिटनेस जरूरी है. इसके लिए चाहे हम पैदल चलें या योग करें, जो भी करें नियमित करें. मानसिक फिटनेस

और शारीरिक फिटनेस का तालमेल जरूरी है. शारीरिक फिटनेस में हमारे खान-पान की भूमिका अहम है. पहले के युग में अधिकांशतः लोग घर का ही खाना खाते थे. आज हमारे पास घर से बाहर तरह-तरह के व्यंजन उपलब्ध हैं. इनमें से कई फास्ट-फूड हैं और हम इनके शौकीन बन गए हैं, जो अंततः हमारे स्वास्थ्य पर असर डालता है. इसलिए हमें अपने खान-पान पर भी नियंत्रण रखना चाहिए. इसके अलावा हम जो सोचते हैं उसी की तरह हम बन जाते हैं. हमें अपने अंदर से नकारात्मक सोच को निकाल देना चाहिए. हमारा सुकून हमारी मानसिक स्थिति को तय करता है. धार्मिक व्यक्तित्व से आशय भी ध्यान की ऐसी स्थिति से है जिससे कि हमारे मस्तिष्क से अनावश्यक बातें बाहर निकल जाएं. हमारे मन में अच्छे और बुरे विचार दोनों ही आते हैं परंतु हमें बुरे विचार को बाहर भेजने की कोशिश करनी चाहिए. अच्छे व्यक्तित्व के लिए हमें अपने दिमाग को शांत रखना पड़ता है. इस प्रकार तीनों प्रकार के व्यक्तित्व आपस में जुड़े हुए हैं. हम जितना अपने आप को संयमित रख सकें, उतना ही अच्छा है. हमारे भीतर सीखने की जिज्ञासा होनी चाहिए. हमें हमारे चेहरे पर मुस्कुराहट बनाए रखनी चाहिए. व्यक्तित्व निखारने में मुस्कुराहट की भूमिका अहम होती है. इसके अलावा हमें स्वयं की तुलना दूसरे से नहीं करनी चाहिए. एक-दूसरे से हमारी तुलना कर कुंठित होना व्यक्तित्व विकास में बाधक है. अतः हमें ऐसी आदतों से बचनी चाहिए.

मानव जीवन हमारे लिए किस तरह से विशेष है?

ह्यूमन बीइंग और *बीइंग ह्यूमन* क्या है, इसे समझने की जरूरत है. व्यक्तित्व बनाने के लिए *बीइंग ह्यूमन* होने से बेहतर कोई बात न तो है और न ही होगी. जन्म से तो हम मानव हैं ही परंतु इसमें कोई बड़ी बात नहीं है. *बीइंग ह्यूमन* होना महत्वपूर्ण है. इसका अर्थ है किसी के साथ हमदर्दी होना, किसी के दुःख में शामिल होना, खुशियां बांटना. मनुष्य की दृष्टि से ये सभी विशेषताएं अहम हैं. इन्हीं से मानवीय मूल्यों का निर्माण होता है. किसी के उत्थान के लिए कुछ करना या किसी के काम आना ही *बीइंग ह्यूमन* है. नदी, पेड़ और हवा को ही देख लीजिए ये सभी केवल स्वयं के लिए नहीं जीते बल्कि दूसरे को जीवन देते हैं. हम किसी के काम आ सकें यह हमारे लिए प्रसन्नता की बात है.

बैंकिंग क्षेत्र में कार्य करते हुए ग्राहक सेवा की दृष्टि से हमारा विनयशील व्यक्तित्व कितना अहम है?

एक अच्छे व्यक्तित्व का निर्माण आज हमारी आवश्यकता बन गई है. विशेषकर बैंकिंग क्षेत्र में कार्य करते हुए हमारा बेहतर व्यक्तित्व बेहतर ग्राहक सेवा का अहम घटक है. ग्राहक सेवा के दौरान हमारा व्यक्तित्व ही ग्राहक को सबसे पहले नजर आता है. इसलिए यह आवश्यक है कि हम इस पहलू पर ध्यान केंद्रित करें. हमें चाहे कितना भी ज्ञान हो परंतु व्यावहारिक बैंकिंग सेवा प्रदान करते समय हमें अपने व्यक्तित्व पर काम करने की जरूरत पड़ती है. व्यक्तित्व को निखारने का सबसे जरूरी पहलू हमारा विनयपूर्वक रहना है. हिंदी में हम बोलते हैं कि *'अधजल गगरी छलकत जाय'* अर्थात् - जिसके पास भरपूर ज्ञान है वो विनयशील रहता है और जिसके पास पूरा ज्ञान नहीं वो स्थिर नहीं रहता है. इस प्रकार व्यक्तित्व की सबसे बड़ी खूबी है विनयशीलता. इसके अलावा जो हमने सीखा है वो मुट्ठी भर है और जो सीखना है वो अनंत है. इस मंत्र को आत्मसात करना जरूरी है. हमें अपने आप को निरंतर विद्यार्थी मानना चाहिए. हमारे भीतर समर्पण की भावना होनी चाहिए. विद्यार्थी का मतलब है, विद्या का आचरण करने वाला. मनुष्य का जीवन पाना सौभाग्य की बात है. हमें अपने व्यक्तित्व को निरंतर निखारना चाहिए.

व्यक्तित्व विकास की दिशा में हमारे समक्ष आने वाली बाधाओं को हम किस तरह दूर कर सकते हैं?

ऐसा होता है कि हम जब भी कुछ नया करने की दिशा में कदम आगे बढ़ाते हैं तो हमारे सामने कई प्रकार की बाधाएं आती हैं. स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि जब हम कोई नया काम करने के लिए आगे बढ़ते हैं, उसके साथ-साथ आलोचनाएं भी आती हैं. मुख्य बात यह है कि हमें इन आलोचनाओं के कारण पीछे नहीं हटना चाहिए. हम आगे बढ़ने की दिशा में डटे रहेंगे तभी हमारे कदम लोगों को स्वीकार्य होंगे. बाद में चलकर हमें प्रशंसा और सराहना भी मिलेगी. यही हमारा अर्जन है.

काल्पनिक तथा गैर-काल्पनिक विषय वस्तुओं से संबंधित बहु-विधात्मक सर्जनात्मक लेखक, अनुवादक, संपादक, विज्ञापन क्षेत्र के विशेषज्ञ एवं विविध स्तरों पर विशेष प्रेरणास्पद सबल वक्ता के रूप में सुख्यात श्री अलापाटी जी अपने लोकप्रिय टैगलाइनो के कारण ''टैग लाइन किंग'' के नाम से जाने-माने अक्षर-तपस्वी हैं.

दशकों लम्बी सफल यात्रा की पृष्ठभूमि में आप पत्र-पत्रिकाएँ, रेडियो, टीवी चैनल, मंचीय कार्यक्रम, यू-ट्यूब आदि सामाजिक माध्यमों से प्रसारित कार्यक्रमों के द्वारा देश-विदेशों में स्थित कई हृदयों के क़रीब रहते आ रहे हैं. साथ ही, आप संस्कृत, हिंदी, अंग्रेज़ी तथा कई दक्षिण भारतीय भाषाओं के जानकार भी हैं.

प्रत्येक मनुष्य में कुछ विलक्षण प्रतिभाएं होती हैं. क्या कोई व्यक्ति किसी विशेष प्रतिभा में निपुण हो सकता है? विशेषकर उसमें, जिसमें वह बहुत कमजोर हो?

जी हां, बिल्कुल हो सकता है. ईश्वर चंद्र विद्यासागर पढ़ाई में बहुत कमजोर थे. उस जमाने में गांव में एक कुंआ था जहां से सब लोग मीठा पानी लेते थे. उस कुंए की दीवार पर घड़ों को एक स्थान पर लगातार रखने से पत्थर पर भी चिह्न हो गया. हम तो फिर भी जीते जागते इंसान हैं. हमारे में क्यों नहीं बदलाव हो सकता है. मैं स्वयं के बारे में ही बताऊं तो शायद मैं जन्म लेते ही अच्छा स्पीकर नहीं था. एक बार मैं एक स्टेडियम में डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम जी के साथ उनके बगल में खड़ा था और चालीस हजार ऑडियन्स स्टेडियम में मौजूद थे. लोग बोल रहे थे कि डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम जी के बगल में खड़े होकर आपको भाषण देना है. आपको डर नहीं लग रहा है, मैंने बताया नहीं लग रहा है क्योंकि जो मैं जानता हूं, उससे भली-भांति अवगत हूं और क्या मुझे नहीं मालूम है, यह भी जानता हूं. जब तक यह मानसिकता हममें है तब तक कोई भी चीज असंभव नहीं है. हां, किसी कठिन चीज को पाने के लिए उसके लिए अभ्यास करना पड़ता है, साधना करनी पड़ती है, ऐसी चीजें रातों-रात हासिल नहीं होती हैं.

कई बार हम पेशेवर जीवन में कार्य के स्वरूप के कारण निर्धारित दिनचर्या का नियमित पालन नहीं कर पाते हैं. इससे कैसे निपटा जाए?

कार्य के स्वरूप से दिनचर्या खराब हो मैं इससे बिल्कुल सहमत नहीं हूं. दरअसल हमें समय प्रबंधन की विशेष आवश्यकता होती है. कुछ चीज़ें हमारे जीवन में बहुत ही जरूरी होती हैं. छोटा उदाहरण लें कि हमें विटामिन डी के लिए धूप की जरूरत होती है. परंतु आज एक बड़ी आबादी में विटामिन डी की कमी की बात सामने आ रही है. अंग्रेजी में एक कहावत है कि *अर्ली टू बेड, अर्ली टू राइज,* अर्थात् जल्दी सोना और जल्दी जागना. परंतु हममें से कितने लोग आज इसका अनुसरण करते हैं. हम देर से सोते हैं, सुबह देर से उठते हैं. हम सुबह की धूप नहीं लेते, जोकि स्वास्थ्य की दृष्टि से बहुत ही जरूरी है. खाली समय में हम मोबाइल जरूर देख लेते हैं परंतु इसका सदुपयोग हम सेहत की दृष्टि से उपयोगी कार्य में नहीं करते हैं. हम सुबह से शाम तक कितनी चीजें करते हैं. इन सभी कार्यों पर गौर कर हम यह अवलोकन करें कि हमें इन्हें अंजाम देने में कितना समय लगा और इस बीच और क्या उपयोगी कार्य कर सकते थे. हमारा उत्तर हमें स्वयं ही प्राप्त हो जाएगा.

एक से अधिक भाषाओं की जानकारी रखना व्यक्तित्व विकास के लिए किस तरह जरूरी है?

इसको भी हम एक छोटे से उदाहरण से समझते हैं. अभी करीब 1 घंटे से जब हम हिंदी में बात करते-करते, अंग्रेजी, तमिल और तेलुगु में वाक्यों का भी उपयोग कर रहे हैं तो इसमें आपको वैरायटी मिल रही है. बात यह है कि हम जिस भाषा में संवाद कर रहे हैं वो लक्ष्य श्रोता को समझ में आनी चाहिए. तभी इस विविधता में रोचकता आती है. मेरा मानना है कि भाषा का जानकार होना बड़ी बात नहीं है बल्कि श्रोता से कनेक्ट होना बड़ी बात है. एक बेहतर व्यक्तित्व वाले स्पीकर के लिए अपने संवाद के जरिए श्रोता को स्वयं से जोड़े रखना महत्वपूर्ण है.

▼▼▼

कला और संस्कृति का संगम : केरल

भारत के दक्षिण-पश्चिमी सिरे में स्थित, पश्चिमी घाट और अरब सागर के बीचोबीच केरल की हरी पट्टी अद्वितीय है और देश के बाकी राज्यों से यह बिल्कुल अलग है. प्रकृति और पानी की प्रचुरता से समृद्ध, केरल को बारिश की भूमि के रूप में माना जा सकता है. केरल का इतिहास प्राचीन है, विदेशी व्यापार से इसका सदियों पुराना संबंध है और कला व साहित्य में इसकी एक लंबी परंपरा है. उच्च साक्षरता दर के साथ देश में सामाजिक न्याय, लैंगिक समानता, स्वास्थ्य और शिक्षा में उच्च मानक स्थापित करने में केरल सबसे आगे है. केरल को विश्व का मसाला उद्यान माना जाता है. इससे पहले दूर-दराज के व्यापारी मसालों की तलाश में केरल में आते थे. बाद में, यूरोपीय शक्तियों ने केरल पहुंचने के लिए इस मसाला मार्ग का अनुसरण किया.

आइए, हम इस भूमि के इतिहास और संस्कृति के माध्यम से एक यात्रा पर निकलें जो अद्वितीय है, जीवंत रंगों, स्वादों और संगीत से परिपूर्ण है. यह हमें केरल की विस्तृत जानकारी उपलब्ध कराएगा. **– संपादक**

केरल के त्योहार

केरल के त्योहारों को अनुभव करने के लिए हमें उसकी ऊर्जा, उसकी जीवंतता और उसकी चमक को अनुभव करना होगा. केरल के त्यौहार यहां के लोगों की सांप्रदायिक और सामाजिक एकता को प्रकट करते हैं.

त्रिशूर पूरम – त्रिशूर पूरम केरल में हर साल आयोजित होने वाला सबसे बड़ा त्योहार है. विभिन्न जिलों से कम से कम 20 लाख से अधिक लोग इसमें शामिल होते हैं. सजे-धजे हाथियों, भव्य छतरियों और जोरदार ढोल संगीत के साथ मनाया जाने वाला यह शानदार त्योहार केरल की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक तत्वों का सम्मिलन होता है. त्रिशूर पूरम की शुरुआत आज से 200 साल पहले त्रिशूर के महाराजा शक्तन तंपुरान (राजा राम वर्मा) ने इस मकसद से की थी कि सारे मंदिर एकजुट हो जाएं. सभी पूरम का जनक माना जाने वाला यह वार्षिक मंदिर महोत्सव कोच्ची के महाराजा शक्तन तंपुरान (राजा राम वर्मा) द्वारा आरंभ किया गया था जिन्होंने इस त्योहार

का शुभारंभ 10 मंदिरों (पारामेक्कावु, तिरुवम्बाडि, कणिमंगलम, कारामुक्कु, लालूर, चुरक्काट्टुकरा, पनामुक्कुंपिल्ली, अय्यन्तोल, चेम्बूक्कावु, नैतलक्कावु) की सहभागिता के साथ किया था. केरल के इस लोकप्रिय पूरम त्योहार की शुरूआत कोडियेट्टम या झंडा फहराने की रस्म से होती है. यह एक ऐसा समारोह होता है जिसमें सभी देवता साथ मिलकर वडक्कुन्नाथन मंदिर में भगवान् शिव की वंदना करते हैं. त्रिशूर पूरम में हाथियों का जुलूस सभी के आकर्षण का केंद्र रहता है जिसे देखने के लिए भारत के अलावा दुनिया भर के पर्यटक आते हैं. तेज गति से लयबद्ध तरीके से रंग-बिरंगी चमकीली छतरियों की सजावट के साथ कुडमाट्टम समारोह एक अनोखा और दर्शनीय अवसर है. उत्सव का समापन भव्य आतिशबाजी के साथ होता है.

ओणम – ओणम केरल का राजकीय त्योहार है. ओणम के पीछे एक कथा प्रचलित है. बहुत समय पहले, केरल पर महाबली नाम के एक राक्षस राजा का शासन था, जिसने तीनों लोकों को जीत लिया था. उन्होंने हमेशा अपनी प्रजा के कल्याण की परवाह की, जिसकी प्रसिद्धि से देवताओं को ईर्ष्या होने लगी थी. देवताओं ने अपनी महिमा और महत्व को पुनः प्राप्त करने के लिए भगवान विष्णु से सहायता मांगी. भगवान विष्णु उनके अनुरोध पर सहमत हुए. उन्होंने वामन (एक बौना ब्राह्मण) का रूप धारण किया और राजा महाबली से तपस्या करने के उद्देश्य से 3 फुट भूमि दान में देने का अनुरोध किया. राजा तुरंत मान गए और वामन ने भूमि मापना शुरू किया. अचानक उन्होंने एक विशालकाय रूप धारण किया और महाबली के पूरे

राज्य के बराबर का दो फुट नाप लिया और उनसे तीसरे के बारे में पूछने लगे. चूंकि राजा के पास और कोई उपाय नहीं था, उन्होंने अपना सिर उनके सम्मुख रखा और वामन ने अपना पैर उनके सिर पर रख दिया और उन्हें पाताल लोक में भेज दिया. वामन ने महाबली के अनुरोध पर उन्हें वर्ष में एक बार अपनी प्रजा से मिलने का अवसर प्रदान किया जिसे थिरुओणम के रूप में मनाया जाता है, जो ओणम त्योहार का सबसे शुभ दिन है. यह राज्य का फसल उत्सव भी है, जो अथम नक्षत्र से शुरू होकर थिरुओणम नक्षत्र पर समाप्त होता है. इस दस दिवसीय त्योहार को घरों में फूलों के कालीनों (पुकलम) द्वारा चिह्नित किया जाता है, दान में नए कपड़े (ओनाकोडी) और भव्य पारंपरिक दावत (ओनासद्या) दिए जाते हैं. ओणम के दौरान लोग तरह-तरह के मनोरंजन करते हैं. नौका-दौड़ उनमें से एक है, जिसमें वंचीपट्टू (नाव का गीत) गाकर सबसे पहले दूरी तय करने की होड़ लगती है. वंचिपट्टू एक तरह की कविता है जिसे एक स्पंदनात्मक ताल में गाया जाता है. तिरुवथिरकली, जिसे कैकोट्टिकली के नाम से भी जाना जाता है, एक महिला समूह नृत्य है जो ओणम के दौरान काफी लोकप्रिय है.

विशु – यह मलयालम माह मेडम (अप्रैल) के पहले दिन मनाया जाता है, जब दिन और रात की अवधि बराबर होती है. विशु के दिन, सुबह उठकर आंख मूंदकर सबसे पहले विशुकणि (घरों में और मंदिरों में देवताओं के सामने प्रसाद) को देखते हैं जिसे वर्ष की समृद्धि और सौभाग्य का अग्रदूत माना जाता है. प्रसाद में उरुली नामक धातु के बर्तन के अंदर रखे स्वर्ण फूल (कानी कोन्ना), सब्जियां, फल, पारंपरिक दीपक, धातु के बर्तन, सिक्के, चावल, पवित्र पाठ आदि शामिल किए जाते हैं. निलविलक्कु नामक एक जले हुए धातु के दीपक को भी इसके बगल में रखा जाता है. परिवार के किसी बुजुर्ग व्यक्ति द्वारा छोटे सदस्यों को दान (कैनीट्टम) देना उत्सव का एक अभिन्न अंग है.

केरल की कला-संस्कृति

केरल की विरासत में प्रदर्शन कलाओं का एक अलग स्थान है. विभिन्न कला संस्कृति, केरल की भूमि से जुड़ी हुई हैं और लोगों के जीवन के साथ सम्मिश्रित हैं. माना जाता है कि कला रूपों का जन्म केरल की समृद्ध संस्कृति से हुआ है.

कथकली – केरल का एक शास्त्रीय नृत्य है, जिसमें लंबे वर्षों के प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है. माना जाता है कि यह रामनाट्टम से विकसित हुआ है, कोट्टाराक्कारा थंपुरन द्वारा रचित एक और शास्त्रीय कला रूप, कथकली केरल के कुछ प्रमुख अनुष्ठान कला रूपों की तकनीकों को शामिल करता है. कथकली के पात्र बोलते नहीं हैं और कहानी पृष्ठभूमि से गीतों के माध्यम से प्रस्तुत की जाती है. कथकली संगीत इस कला रूप को बहुत ही महत्वपूर्ण घटक बनाता है. कथकली गीतों के पाठ को अट्टाकथा कहा जाता है. कथकली संगीत के साथ चेंडा, मदालम, चेंगिला और एलाथलम वाद्य यंत्रों का उपयोग किया जाता है. शानदार वेशभूषा और रंगीन शृंगार कथकली की अन्य प्रमुख विशेषताएं हैं. अधिकांश पात्रों के चेहरे के शृंगार करने में 3-5 घंटे लगते हैं. पात्रों का श्रृंगार और पोशाक उनके चरित्रों को उजागर करने के लिए डिज़ाइन किया जाता है.

कलरिपयट्टू – यह केरल का मार्शल आर्ट रूप है. केरल के अधिकांश कला रूपों में कलरिपयट्टू का प्रभाव देखा जा सकता है. अतीत में कलरी (लड़ाकू क्षेत्र या युद्ध क्षेत्र) लोगों के जीवन का एक अभिन्न अंग था. बिना किसी लैंगिक भेदभाव के लड़के-लड़कियों को बचपन में अभ्यास के लिए कलरियों में भेजा जाता था. यहां के लोग कलरि उपचार (दवा की एक प्रणाली के रूप में) और मर्मचिकित्सा (महत्वपूर्ण भागों का उपचार) में भी रुचि रखते हैं.

केरल के मंदिर

केरल के मंदिर उन भक्तों के लिए आशा की किरण हैं जो दुनिया भर से उनके दर्शन करने आते हैं. दैवीय स्थान होने के अलावा केरल के ये मंदिर वास्तुकला के चमत्कार माने जाते हैं.

1. श्री पद्मनाभस्वामी मंदिर, तिरुवनंतपुरम

भगवान विष्णु को समर्पित, श्री पद्मनाभस्वामी मंदिर, केरल के सबसे प्रसिद्ध मंदिरों में से एक है. द्रविड़ शैली की वास्तुकला में निर्मित, यह मंदिर 8वीं शताब्दी का है और इसे देश के सबसे

पुराने विष्णु मंदिरों में से एक माना जाता है. यहां की मूर्ति अनंत आठ सिर वाले नाग देवता पर टिकी हुई है.

2. अट्टुकल भगवती मंदिर, तिरुवनंतपुरम

पद्मनाभस्वामी मंदिर के करीब स्थित, अट्टुकल भगवती केरल के प्रसिद्ध मंदिरों में से एक है. मंदिर कन्नकी - पार्वती का एक अवतार, जिसे सर्वोच्च माता और पृथ्वी पर सभी जीवित प्राणियों के निर्माता के रूप में भी माना जाता है और समर्पित है.

यह मंदिर हर साल फरवरी या मार्च में आयोजित होने वाले अट्टुकल पोंगाला महोत्सव के लिए प्रसिद्ध है. भारत के विभिन्न हिस्सों से लाखों महिलाएं इस 10-दिवसीय उत्सव में भाग लेती हैं और पोंगाला बनाती हैं - देवी के लिए चावल, गुड़ और नारियल से बना एक प्रामाणिक मीठा व्यंजन. अट्टुकल पोंगाला महोत्सव को *गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स* में किसी एक धार्मिक आयोजन के लिए महिलाओं की सबसे बड़ी सभा के रूप में दर्ज किया गया है.

3. चोट्टानिकारा देवी मंदिर, एर्नाकुलम

एक पहाड़ी के ऊपर स्थित, चोट्टानिकारा देवी मंदिर केरल के सबसे प्रसिद्ध देवी मंदिरों में से एक है, जो देवी भगवती को समर्पित है. यह मंदिर अपनी मूर्ति के लिए प्रसिद्ध है. सोने की मूर्ति 4 से 5 फीट लंबी है और माना जाता है कि इसमें किसी भी तरह की बीमारी को ठीक करने की शक्ति है. इसके अलावा, इस मूर्ति का सबसे दिलचस्प हिस्सा यह है कि इसकी तीन अलग-अलग तरीकों से पूजा की जाती है. उसी मूर्ति को सुबह सरस्वती देवी, दोपहर में लक्ष्मी देवी और शाम को दुर्गा माता के रूप में पूजा जाता है.

4. सबरीमाला संस्था मंदिर, पत्तनमथिट्टा

यह मंदिर भगवान शिव और मोहिनी के पुत्र भगवान अय्यप्पन को समर्पित है. भगवान अय्यप्पन भी भगवान विष्णु के अवतारों में से एक हैं. एक पहाड़ी के ऊपर स्थित और पेरियार टाइगर रिजर्व के घने जंगलों से घिरा यह मंदिर कई मायनों में अनूठा है.

5. श्री परशिनिकडवु मुथप्पन मंदिर, परशिनिकडवु

केरल में सबसे शानदार हिंदू मंदिरों में से, श्री परशिनिकडवु

मुथप्पन - वलपट्टनम नदी के तट पर स्थित है. शानदार वास्तुकला, भित्ति चित्र और नक्काशी के साथ, यह मंदिर भगवान मुथप्पन को समर्पित है. केरल में यह एकमात्र मंदिर है, जिसके प्रवेश द्वार पर कुत्ते की मूर्तियां हैं, इसलिए मंदिर परिसर में कुत्तों को भी प्रवेश करने की अनुमति है.

6. गुरुवायूर मंदिर, गुरुवायूर

केरल के प्रसिद्ध मंदिरों की सूची गुरुवायूर मंदिर के बिना अधूरी है. गुरुवायुर श्री कृष्ण मंदिर के रूप में लोकप्रिय है, यह स्थान केरल में सबसे अधिक देखे जाने वाले मंदिरों में से एक है. यहां श्री कृष्ण की मूर्ति को पातालंजना पत्थर से तराशा गया है, जो औषधीय और चिकित्सीय मूल्यों के लिए जाना जाता है. हालांकि इस मंदिर में हर दिन कई भक्त आते हैं, लेकिन गुरुवायूर मंदिर विवाह और शिशुओं को चावल खिलाने के समारोहों के लिए अधिक प्रसिद्ध है.

7. थिरुनेल्ली मंदिर, वायनाड घाटी

वायनाड घाटी में स्थित थिरुनेल्ली मंदिर को अक्सर 'दक्षिण की काशी' के रूप में जाना जाता है. पवित्र पुराणों में भी इस मंदिर के निशान मिल सकते हैं और माना जाता है कि इसे स्वयं भगवान ब्रह्मा ने बनवाया था.

8. वैक्कम महादेव मंदिर, वैक्कम

वैक्कम महादेव मंदिर केरल के श्रद्धेय मंदिरों में से एक है. यह मंदिर शिव मंदिरों के त्रिजोम का एक हिस्सा है जिसमें कडुथुरुथी थलियिल महादेव और एट्टुमानूर शिव मंदिर भी शामिल हैं. माना जाता है कि जो कोई भी शिव मंदिरों में प्रार्थना करने के लिए

केरल जाता है, वह 'दोपहर पूजा' से पहले इन तीनों देव मंदिर का दौरा करता है. कहा जाता है कि इन मंदिरों में दर्शन करने से भक्तों की सभी मनोकामनाएं पूरी होती हैं.

प्रमुख पर्यटन केंद्र:-

1. एलेप्पी – हाउसबोट और बैकवाटर

एलेप्पी को आलपपुझा के नाम से भी जाना जाता है, जिसे लॉर्ड कर्जन द्वारा *'पूर्व का वेनिस'* का टैग दिया गया था. धान के खेतों और ताड़ के पेड़ों के साथ अंतहीन, आकर्षक बैकवाटर, इसे केरल में सबसे अच्छा बैकवाटर गंतव्य बनाते हैं. हर साल अगस्त माह में पुन्नमडा झील पर आयोजित पारंपरिक नेहरू ट्रॉफी स्नेक बोट रेस एलेप्पी का एक और आकर्षण है.

2. मुन्नार – चाय बागानों और मसालों के किस्से

मुन्नार केरल का सबसे लोकप्रिय पहाड़ी इलाका है जो इडुक्की जिले में स्थित है और केरल में घूमने के लिए सबसे खूबसूरत जगह है. कभी अंग्रेजों की ग्रीष्म कालीन राजधानी मुन्नार अब हरे-भरे चाय बागानों और चाय संग्रहालय के लिए प्रसिद्ध है. मुन्नार में अंतहीन हरियाली 'ढलान वाली घाटियों' का अनुभव कर सकते हैं और ताज़ा चाय की पत्तियों की महक का आनंद उठा सकते हैं. मुन्नार वन्यजीव उत्साही लोगों के लिए भी रोमांच प्रदान करता है. मुन्नार में अनामुडी चोटी पर हाथियों और लुप्तप्राय पहाड़ी बकरी को देखना आम बात है. मुन्नार में प्राकृतिक वातावरण में हाथियों के झुंड को खोजने के लिए हाथी झील एक और लोकप्रिय स्थान है.

3. थेक्कडी – हाथी, कथकली और मार्शल आर्ट

थेक्कडी केरल में सबसे अच्छे वन पर्यटन स्थलों में से एक है और हाथी, बाइसन, हिरण, नीलगिरि लंगूरों और बाघों जैसे वन्यजीवों का घर है. जानवरों, पक्षियों और सरीसृपों को देखते हुए पर्यटक नाव में झील में क्रूज कर सकते हैं. जंगल की हरी-भरी हरियाली और शांत पानी पर्यटकों पर सुखदायक प्रभाव डालती है. थेक्कडी में पेरियार राष्ट्रीय उद्यान भी है जो एक बाघ और हाथी अभयारण्य है, जहां जंगल जीप सफारी पर जा सकते हैं. टाइगर ट्रेल के साथ ट्रैक भी हैं, बांस राफ्टिंग, शिविर और मध्यरात्रि सफारी भी आयोजित की जाती हैं.

4. कुमरकम – केरल के बैकवाटर और हाउसबोट्स

कुमरकम वेम्बनाड झील के पास स्थित बैकवाटर है जहां शांत पानी में अपने पैरों को डुबोते हुए, हाउसबोट पर क्रूज कर सकते हैं और नारियल के पेड़ों के बीच सूर्यास्त को देख सकते हैं. इसके शांत वातावरण का अनुभव करने के लिए देशी और विदेशी पर्यटक बार-बार घूमने आते हैं.

5. वयनाड – धान के खेत और प्राचीन वन

एक सुखद हिल स्टेशन होने के नाते, वायनाड केरल के उन स्थानों में से एक है जहां पर्यटक पूरे साल घूम सकते हैं. वायनाड का अर्थ है 'धान के खेतों की भूमि'. वयनाड चावल के धान के खेतों, सुपारी के पेड़, कॉफी के बागानों और बांस के जंगलों से युक्त एक हरा-भरा परिदृश्य प्रदान करती है. इसमें नवपाषाण काल और मध्य पाषाण काल से संबंधित चट्टानों और दीवार की नक्काशी वाली गुफाएं भी हैं, जो इसे केरल के सबसे आकर्षक पर्यटन स्थलों में से एक बनाती हैं. वन्यजीवों, विशेष रूप से जंगली हाथियों को देखने के लिए एक शानदार जगह, वयनाड वन्यजीव अभयारण्य नीलगिरि बायोस्फीयर रिजर्व का एक हिस्सा है और केरल में घूमने के लिए वन स्थानों में से एक है.

6. अथिरापल्ली जलप्रपात – भव्य से भी भव्य

केरल में सबसे ऊंचे झरने (80 फीट) पर अथिरापल्ली झरने हैं और केरल में घूमने के लिए सबसे अच्छी

जगहों में से एक हैं. शोलायर रेंज के पास चलकुडी नदी पर स्थित अथिरापल्ली झरने भारतीय फिल्मों की शूटिंग के लिए एक विशेष स्थान हैं. रोमांचकारी अथिरापल्ली जलप्रपात कल्पनालोक के दृश्य की तरह दिखता है. पर्यटक झरने के ऊपर के स्थान के बिल्कुल करीब पहुंच सकते हैं और पैरों की उंगलियों से पानी की धारा को बहते हुए महसूस कर सकते हैं. अथिरापल्ली जलप्रपात को भारत के नियाग्रा जलप्रपात के रूप में जाना जाता है.

7. वागमन – अद्भुत घाटियां

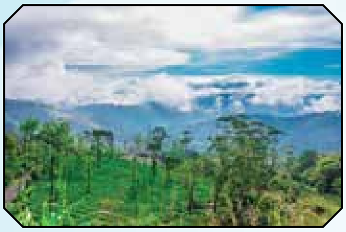

इडुक्की-कोट्टयम सीमा पर स्थित, वागमन एक रमणीय हिल-स्टेशन है जो घास के मैदानों और देवदार के जंगलों से युक्त है. वागामन की तीन पहाड़ियों- कुरीसुम ला, थंगल और मुरुगन को मुस्लिम, हिंदू और ईसाई धर्मों का प्रतिनिधित्व करने वाले कहा जाता है. वागामन में धुंधली पहाड़ियां, चाय के बागान और अंतहीन घास के मैदान पर्यटक को आकर्षित करते हैं.

8. वर्कला – सैंडी क्लिफ्स और सर्फिंग टाइड्स

केरल में वर्कला एकमात्र ऐसी जगह है जहां आप समुद्र के किनारे आकर्षक चट्टानें पा सकते हैं, जो वर्कला बीच को केरल के बाकी समुद्र तट स्थलों से अलग करती है. वर्कला अपने लंबे ज्वार और अनुकूल मौसम के कारण पैरासेलिंग और विंडसर्फिंग जैसे वाटर स्पोर्ट्स के लिए भी जाना जाता है. वर्कला में पापनासम समुद्र तट पर सूर्यास्त का दृश्य अद्वितीय होता है. 'भगवान ने अपने देश में' वर्कला वह जगह है जहां धूप और रेत का पर्यटक आनंद ले सकते हैं.

9. बेकल-समुद्र के किनारे केरल का सबसे बड़ा किला

बेकल कासरगोड जिले में स्थित एक छोटा बंदरगाह शहर है और ऐतिहासिक किलों का घर है. बेकल केरल में सबसे बड़ा किला है जो समुद्र तल से लगभग 130 फीट ऊँचा है. केरल में घूमने के लिए सबसे अच्छी जगहों में से एक 17 वीं शताब्दी का बेकल किला है, जो कई लोकप्रिय फिल्मों की आश्चर्यजनक पृष्ठभूमि रहा है. केरल का यह सबसे बड़ा किला सुंदर अरब सागर का मनमोहक दृश्य प्रस्तुत करता है. प्रवेश द्वार पर हनुमान मंदिर भी स्थित है.

10. कोवलम – नारियल के पेड़ और क्रिसेंट बीच

कोवलम केरल के सबसे अच्छे समुद्र तटों में से एक है.

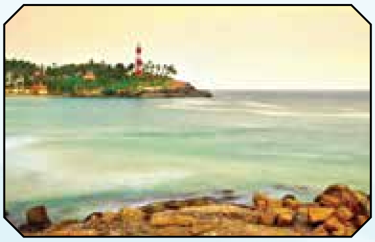

कोवलम तीन शानदार अर्धचंद्राकार समुद्र तटों – हवा, लाइटहाउस और समुद्र के साथ एक शांत समुद्र तट शहर है. कोवलम में बहुत सारे समुद्र तट के खेल का आनंद उठाया सकते हैं. यहां धूप सेकने जा सकते हैं या रोमांचक कटमरैन सवारी का आनंद ले सकते हैं.

11. मलमपुझा – मध्य केरल में दर्शनीय बांध

पालक्कड जिले में स्थित, मालमपुझा हरे भरे परिदृश्य और दिलचस्प आकर्षण प्रदान करता है. इस छोटे से गांव में सबसे

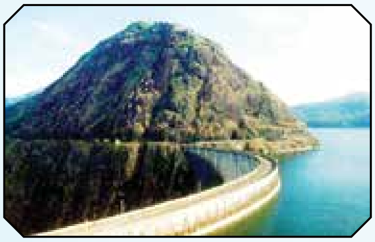

ज्यादा भीड़ आकर्षित करनेवाले मलमपुझा गार्डन और बांध हैं. इसकी प्राकृतिक सुंदरता और शांत वातावरण मलमपुझा उद्यान को एक लोकप्रिय पिकनिक स्थल बनाता है. यहां दक्षिण भारत में अपनी तरह का एक अनूठा रॉक गार्डन है जिसे टूटी हुई चूड़ियों, टाइलों, प्लास्टिक के डिब्बे, मेलामाइन डिशवेयर और टिन के टुकड़ों से बनाया गया है. बगीचे में मालमपुझा यक्षी (एक देवी) की मूर्ति भी लोकप्रिय है. बगीचे के बीच में से केबल कार की सवारी एक आकर्षक अनुभव प्रदान करती है क्योंकि ऊपर से हरे-भरे स्थान का एक सुविधाजनक दृश्य प्राप्त कर सकते हैं.

जब हम किसी को 'केरल' कहते सुनते हैं, तो हमारे दिमाग में कितने ही खूबसूरत नजारे आ जाते हैं. भगवान के अपने देश के रूप में प्रसिद्ध, केरल वास्तव में एक आदर्श पर्यटन स्थल है और इसे दुनिया के स्वर्गों में से एक स्वर्ग के रूप में भी जाना जाता है.

शांति जोशी
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)
क्षेत्रीय कार्यालय, पुणे शहर

स्वतंत्रता के 75 वर्ष

आज़ादी का अमृत महोत्सव

हमारा देश अपनी आज़ादी के 75 वर्ष पूरे करने जा रहा है. इस अवसर पर इन दिनों देश भर में आज़ादी का अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है. यह अमृत महोत्सव मार्च 2021 से आरम्भ होकर अगस्त, 2023 तक अर्थात् 75 सप्ताह तक मनाया जाएगा. अमृत महोत्सव का अभिप्राय देश की आजादी के 75 वर्ष पूरे करने से है.

हमने बहुत संघर्षों से 15 अगस्त, 1947 को अंग्रेजों की गुलामी से आज़ादी पाई थी. इस आज़ादी की लड़ाई में हमने सरदार भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, सुखदेव, राजगुरु, बंकिम चंद्र पाल, लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक, खुदीराम बोस, सुभाष चंद्र बोस, आदि अनगिनत वीर सपूतों और उनके साथ-साथ माताओं और बहनों की भी कुर्बानी दी है.

सन् 1947 से हमारा अब तक का सफर बिल्कुल असान नहीं रहा है. हमारा सबसे पहला संघर्ष रियासतों में बटे हुए सारे देश को एक तिरंगे के नीचे एकत्र करना था, जिसकी बागडोर लौह पुरुष सरदार बल्लभ भाई पटेल ने सम्भाली और कश्मीर से कन्याकुमारी तक सारे देश को एक सूत्र में पिरो दिया. शत्-शत् नमन है ऐसे वीर को. गणतंत्र बनने के बाद चीन ने हम पर आक्रमण कर दिया. एक तो गुलामी की जंजीर से मुक्त हुआ देश पहले से ही कई चुनौतियों से जूझ रहा था. दूसरी ओर पड़ोसी देश हमारी जमीन हथियाने के चक्कर में थे. नतीजा सन् 1962 की लड़ाई हम हार गए. किन्तु हम भारतीयों ने पराजय इतनी आसानी से स्वीकार नहीं की. तीन साल बाद ही सन् 1965 में चीनी सेना को नाकों चने चबा कर घुटने टेकने पर विवश कर दिया. नेहरू जी के देहावसान के बाद माननीय लाल बहादुर शास्त्री जी भारत के प्रधानमंत्री बने और उन्होंने देश को 'जय जवान, जय किसान' का नारा दिया. उनके मात्र दो वर्षों के शासन काल में भारत ने न केवल पड़ोसी देश पाकिस्तान के दांत खट्टे किए अपितु हमारे खेतों में भी अपार पैदावार हुई. हमें जो गेहूं विदेशों से खरीदना पड़ रहा था, वो हमें देश में भरपूर खपत के बाद भी विदेशों को बेचना पड़ा, क्योंकि हमारे पास इतना भण्डारण करने के लिए जगह ही नहीं बची और यह देश की सबसे बड़ी हरित क्रांति कहलाई. इसके बाद तो भारत ने पीछे मुड़ कर नहीं देखा.

स्वतंत्रता दिवस हमारे संविधान में संस्थापित स्वतंत्रता, समानता, एकता, भाईचारा और भारत के सभी नागरिकों के लिए न्याय के सिद्धांतों को स्मरण और उनको मजबूत करने का भी एक उचित अवसर है क्योंकि हमारा संविधान ही हमें अभिव्यक्ति की आज़ादी देता है. अगर देश के नागरिक संविधान में प्रतिष्ठापित बातों का अनुसरण करेंगे तो इससे देश में लोकतान्त्रिक मूल्य और अधिक मजबूत होंगे.

कोरोना से लड़ते हुए भारत में इस बार स्वतंत्रता दिवस को *आज़ादी का अमृत महोत्सव* के रूप में भारत की आज़ादी की 75वें वर्ष का जश्न मनाने के उपलक्ष्य में की गयी एक विशिष्ट पहल है. इस महोत्सव के तहत जन भागीदारी बढ़ाने के लिए कई कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं. केंद्रीय संस्कृति मंत्रालय द्वारा राष्ट्रगान से जुड़ी एक ऐसी अनूठी पहल की गई है, जिससे भारतीय नागरिकों में गर्व और एकता की भावना पैदा हो सके. यह दिन भारत के ब्रिटिश शासन से मुक्ति और स्वतंत्र भारत की स्थापना का प्रतीक है. 15 अगस्त, 1947 को भारत को करीब 200 सालों की अंग्रेजों की दासता से मुक्ति मिली थी. सालों-साल चले स्वतंत्रता संघर्ष, देश के सपूतों की कुर्बानी के बाद आखिरकार अंग्रेज भारत छोड़ने को विवश हुए. स्वतंत्रता दिवस की सालगिरह के मौके पर देशभर में जश्न का माहौल होता है. मुख्य कार्यक्रम राजधानी दिल्ली के लाल किले में होता है, जहां माननीय प्रधानमंत्री तिरंगा फहराते हैं और देश को संबोधित भी करते हैं.

भारतीय संविधान के आरंभ में ही 'हम भारत के लोग' वाक्य का जिक्र किया गया है. हमने यह शब्द अमेरिका के संविधान से लिया है. भारतीय संविधान हमें अपनी विविधताओं को एक करने और राजनीतिक सहमति कायम करने में मदद करता है. शासन की वर्तमान कार्यप्रणाली के रूप में लोकतंत्र ने नागरिकों को नई उम्मीदें दी हैं. राजनीति के एक मॉडल के रूप में इसने लोगों को राजनीतिक स्वतंत्रता और बराबरी के अधिकार से सशक्त किया है. यह भारतीय गणतंत्र पुरुषों या महिलाओं, जातियों, विभिन्न धर्मों के बीच भेदभाव नहीं करता है. यह सभी नागरिकों को एक समान दर्जा देता है. यहां के युवा एक स्वतंत्र समाज में रहते हैं.

भारतीय संविधान एक अच्छे समाज की अवधारणा को आकार देता है. दुविधा की स्थिति में देश के युवा सुप्रीम कोर्ट की ओर सही दिशा की उम्मीद देखते हैं. फरवरी, 2014 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा था कि हम एक युवा देश हैं, आधुनिक भारत कुल मिलाकर एक युवा देश ही है, यहां की अधिकांश आबादी युवा है, उनकी इच्छाएं नई हैं, उनके दृष्टिकोण नए हैं. 1.35 अरब की आबादी में से आधी आबादी

25 साल से कम आयु वालों की है. करीब 65 फीसद भारतीयों की आयु 35 साल में कम है. यह आबादी एक नई सोच रखती है, क्योंकि इसका विकास एक मुक्त वातावरण में हुआ है. देश की यह पीढ़ी एक ऐसी स्वतंत्रता में पली-बढ़ी है जो हमें अपने संविधान से मिली है. किसी बाहरी को लगता है कि भारत तमाम तरह की विविधताओं का घर है, लेकिन देखा जाए तो इसी विविधता में इसकी एकता के राज छिपे हुए हैं. विभिन्न धर्मों को मानने और विभिन्न भाषाओं को बोलने वाले भारतीय अपनी पहचान कायम रखते आए हैं. यह उल्लेखनीय है कि देश का लोकतंत्र भारतीय समाज में एकता का आधार है.

आधुनिक लोकतंत्र समतावादी विचारों पर आधारित है. जोनाथन इजरायल ने अपनी किताब *ए रिवोल्युशन ऑफ द माइंड* में लिखा है कि समतावादी विचारों के तहत विचार अभिव्यक्ति और प्रेस की पूर्ण स्वतंत्रता पर जोर दिया जाता है. जब एक निर्वाचित सरकार इनको सुरक्षित रखती है तो उसे ही एक बेहतर लोकतंत्र का दर्जा दिया जाता है. भारतीय गणतंत्र की मूल भावना भी यही है. 1.35 अरब भारतीयों की खुशियों और आजादी के लिए जरूरी है कि हम अपने गणतंत्र को सुरक्षित रखें. दूसरे शब्दों में कहें तो हमें न सिर्फ अपने, बल्कि सभी नागरिकों के अधिकारों को सुरक्षित रखना होगा. स्वतंत्रता के मायने तभी हैं जब स्वतंत्रता में मर्यादा, चरित्र और समर्पण का भाव हो. अगर स्वतंत्रता में मर्यादा चरित्र और समर्पण ही नहीं है तो यह आजादी की असली परिभाषा नहीं है.

भारत देश बेशक एक स्वतंत्र गणराज्य सालों पहले बन गया हो, लेकिन इतने सालों बाद आज भी देश में धर्म, जाति और अमीरी-गरीबी के आधार पर भेदभाव पूरी तरह से समाप्त नहीं हुए हैं. इसलिए जरूरत है कि देश में संविधान द्वारा प्रदत्त शिक्षा के अधिकार के जरिए लोगों में जागरूकता लायी जाये जिससे कि देश में धर्म, जाति, अमीरी-गरीबी और लिंग के आधार पर भेदभाव को दूर किया जा सके.

स्वतंत्रता का दिन अपने वीर जवानों को भी नमन करने का दिन है जो कि हर तरह के हालातों में सीमा पर रहकर सभी भारतीय नागरिकों को सुरक्षित महसूस कराते हैं. साथ-साथ उन स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को याद करने का भी दिन है, जिन्होंने हमारे देश को आजाद कराने में अहम भूमिका निभाई. 75वें स्वतंत्रता दिवस, *आज़ादी का अमृत महोत्सव* के अवसर पर भारत के प्रत्येक नागरिक को भारतीय संविधान और गणतंत्र के प्रति अपनी वचनबद्धता दोहरानी चाहिए और देश के समक्ष आने वाली चुनौतियों का मिलकर सामूहिक रूप से सामना करने का प्रण लेना चाहिए. साथ-साथ देश में शिक्षा, समानता, सदभाव, पारदर्शिता को बढ़ावा देने का संकल्प लेना चाहिए जिससे कि देश प्रगति के पथ पर और तेजी से आगे बढ़ सके.

यह दिन उन स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को भी याद करने का दिन है, जिन्होंने अंग्रेजों से भारत को आज़ादी दिलाने के लिए वीरतापूर्ण संघर्ष किया तथा भारत में विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र की स्थापना की.

तिरंगे के तीन रंग और इस पर चलता प्रगति का चक्र जीवन की असीम संभावनाएं बताता है. ये केसरी रंग हमें शहीद हुए हर सैनिक की याद दिलाता है, हमें नमन करना चाहिए उन सभी वीरों को, जिनका नाम तो गुमनाम है पर उनका स्वतंत्रता में बड़ा योगदान है. हमें नमन करना चाहिए उन वीरों के उन सभी परिवारों का जिनकी वजह से यह हिंदुस्तान कायम है. हमें नमन करना चाहिए उन सभी स्वतंत्रता के मतवालों का जो आगे आकर लड़े और उन्होंने ये बेशकीमती तोहफा हमें दिया. हम सभी इस युग में रहने वाले भी आज़ादी की कीमत तो पहचान ही चुके हैं क्योंकि कोविड के कारण जब हम सभी अपने घरों में बंद थे तो हमें आज़ादी की कीमत वास्तव में पता चली क्योंकि इससे पहले हमने अपनी आज़ादी को इस तरह महसूस नहीं किया है, 75 वें साल की उम्र की हमारी आज़ादी हो गई और हमने एक लंबा सफर तय किया है. इस आज़ादी में हमारे सैनिकों ने सरहद पर, खिलाड़ियों ने खेल के मैदान में, किसानों ने खेतों में, वैज्ञानिकों ने शोध पर, शिक्षकों ने कक्षाओं में और आम आदमी ने देश के विकास में अपना बहुमूल्य योगदान दिया है.

हमारी आजादी अमरता की ओर बढ़ती हुई उपलब्धियों के साथ एक नया हिंदुस्तान बनाने जा रही है जो आने वाली पीढ़ियों को अवश्य एक सुनहरा कल उपहार में देगी. हमने इन 75 सालों में बड़ी उपलब्धियां हासिल की है, चाहे वो रक्षा हो, शिक्षा हो, चिकित्सा हो, विज्ञान हो, खेल हो, खाद्यान्न उत्पादन हो, दुग्ध उत्पादन हो या मछली उत्पादन हो. ये बिलकुल सही है इन 75 सालों में हमने उपलब्धियां हासिल की है पर अभी भी बहुत कुछ पाना है, यह हम सभी जानते हैं कि प्रगतिशील भारत के प्रगति के पथ पर हम कई जगहों पर अपने को दूसरे देशों से पीछे पाते हैं, पर हम अपनी संस्कृति, संस्कार और विरासत पर गर्व इसलिए कर सकते हैं कि हम अपनी सीमाओं पर जीत पाने के लिए दिल से प्रयासरत हैं और हमने 75 वें वर्ष की आज़ादी पर इतनी उपलब्धियों को पा लिया है. हम इस पावन पर्व पर तिरंगे के रंगों के महत्व की बात करते हैं, केसरिया को साहस और बलिदान का प्रतीक कहा जाता है, सफेद रंग को शांति और सच्चाई का प्रतीक कहा जाता है जबकि हरा रंग संपन्नता का प्रतीक होता है. तो आइए मनाते हैं *'नए भारत का नया पर्व' आज़ादी का अमृत महोत्सव'*.

अभिषेक वर्मा
सूचना प्रौद्योगिकी विभाग
क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल

व्यवसाय वृद्धि में राजभाषा एवं क्षेत्रीय भाषाओं का महत्त्व

'बोली' किसी भी व्यक्ति की विशिष्टता का सूचक है. यह वह पहलू है जो हमारे व्यक्तित्व का भी परिचायक है. आज के प्रतिस्पर्धा भरे युग में जब हर कोई अपने आप को बेहतर साबित करना चाहता है और अपने एक निश्चित लक्ष्य की प्राप्ति चाहता है तो आवश्यक है कि उसमें कुछ विलक्षण गुण अवश्य हों जो उसे दूसरों से विशिष्ट बनाए. बैंकिंग जगत में भी विभिन्न बैंकिंग संस्थानों के बीच प्रतिस्पर्धा का माहौल है. जहां तक बैंकिंग सेवाओं और उत्पादों की बात है तो कमोबेश सभी बैंकिंग संस्थानों की सेवाएं और उत्पादों में बहुत हद तक समानता है. किसी बैंक द्वारा बेहतर और सरल ग्राहक सेवा ग्राहकों को उसकी ओर आकर्षित करती है. बेहतर ग्राहक सेवा प्रदान करने में ग्राहकों से संवाद करने की भाषा बहुत मायने रखती है. इसलिए बेहतर ग्राहक सेवा में ग्राहक की ही भाषा में किया गया संवाद अपने आप में एक विलक्षण विशेषता है.

लक्ष्य कोई भी हो, चाहे वह कारोबार में वृद्धि हो, लाभ कमाना हो, नए ग्राहकों को जोड़ना या पुराने ग्राहकों को जोड़ के रखना हो, इन सभी लक्ष्यों का रास्ता भाषा की गलियों से होकर ही गुजरता है. चाहे वह कोई साधारण मनुष्य हो, कोई व्यापारी हो, बड़ी कंपनियां हों या बैंकिंग कंपनियां ही क्यों ना हों, संवाद इनके विकास का प्रमुख माध्यम है. यदि केवल बैंकिंग परिवेश की बात की जाए तो, बैंकों का एक लक्ष्य यह होता है कि कैसे अधिक से अधिक ग्राहकों तक पहुंचा जाए और उनके जरिए बैंक की जमाराशि और लाभप्रद ऋण खातों को बढ़ाया जा सके. यह भी सत्य है कि जब तक लोग हमसे जुड़ेंगे नहीं तो हमारी सेवाओं का लाभ कैसे उठाएंगे. आखिर कारोबार में वृद्धि करने का जरिया अधिक से अधिक बचत व ऋण सेवाओं के जरिए ग्राहक आधार को लगातार बढ़ाना ही है. तभी बैंक निश्चित लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगे. संवाद की प्रक्रिया में सबसे अहम भूमिका भाषा ही अदा करती हैं. भाषा के अलावा हमारी कार्य-प्रणाली, सेवाएं, तकनीक, ग्राहक योजनाएं, कर्मचारियों की भूमिका, पूंजी, नियंत्रण आदि प्रमुख हैं जो किसी भी बैंक के कारोबार में वृद्धि के लिए जरूरी है. ग्राहक सेवा का क्षेत्र होने के नाते बैंक में भाषा की भूमिका और भी ज्यादा बढ़ जाती है और यह कहना भी सार्थक है- *'हम अपनी ही भाषाओं को बनाएं अपने कारोबार की भाषा.'*

बैंकों के संवाद की भाषा ग्राहक की भाषा ही होनी चाहिए, तभी हम बेहतर ग्राहक सेवा सुनिश्चित कर सकते हैं. हमारा देश अनेकता में एकता वाला देश है. यहां प्रत्येक प्रांत में कई बोलियां बोली जाती हैं. यह भी देखने वाली बात है कि किसी एक समय में कोई व्यक्ति गुजरात में रहता हो उसे गुजराती ही आती हो या जो कर्नाटक में रहता है उसे कन्नड़ ही आती हो. इसलिए ग्राहक को हमसे जोड़ने के लिए उसकी भाषा पहचान कर उसी की भाषा में सेवा प्रदान करना बहुत जरूरी है.

आज देश के नगरों में स्थित बड़े संस्थानों में अधिकांश कामकाज अंग्रेजी में किया जाता है. परंतु देश के बड़े भू-भाग जैसे छोटे शहरों और ग्रामीण इलाकों में प्रशासनिक कामकाज क्षेत्रीय भाषाओं में ही किए जाते हैं. इसी प्रसंग में हम यदि बैंकिंग क्षेत्र की ही बात करें तो इसका विस्तार केवल नगरों तक ही सीमित नहीं है. बल्कि नगरों से कहीं अधिक इसका विस्तार ग्रामीण इलाकों में है. इस प्रकार ग्रामीण इलाकों में बैंकिंग व्यवसाय वृद्धि का माध्यम क्षेत्रीय भाषाएं ही हैं. आज बैंकिंग संस्थाओं की हर छोटे बड़े शहरों में शाखाएं हैं, जिनसे करोड़ों ग्राहकों को बैंकिंग सेवाएं उपलब्ध हो रही हैं. नगरों में कॉर्पोरेट बैंकिंग की बात करें तब व्यवसाय बढ़ाने के लिए अंग्रेजी भाषा उपयोगी है, वहीं जब बात खुदरा बैंकिंग या वित्तीय समावेशन की आती है तो इस दिशा में व्यवसाय वृद्धि के लिए क्षेत्रीय भाषाएं ही अधिक सहायक हैं. उदाहरण के तौर पर यदि ग्राहक को अंग्रेजी नहीं आती है तो उसे अंग्रेजी भाषा में योजनाओं की जानकारी देना व्यर्थ है. यदि ग्राहक की ही मातृभाषा में उन्हें बैंकिंग सुविधाओं के बारे में समझाया जाए तभी ग्राहक हमसे लंबे समय तक जुड़े रहेंगे. तुलसीदासजी ने कहा है - ''ऐसी वाणी बोलिए की मन का आपा न खोय, औरों को शीतल करे ओर आपहुं शीतल होए.'' परिस्थितियां कैसी भी हों परंतु

संवाद ऐसा होना चाहिए की ग्राहक की भावना को ठेस न पहुंचे. ग्राहक यदि एक बार नाराज होकर चला गया तो फिर वह दोबारा वापस हमसे जुड़ने में कतराएगा.

भाषा का माध्यम चाहे मौखिक हो या अमौखिक, चाहे लिखित हो या अलिखित, ग्राहकों तक अपनी बात पहुंचाने का माध्यम जितना सरल व सुगम होता है, उतनी तेज गति से ग्राहक हमसे जुड़ता है. सरल भाषा के माध्यम से बैंकिंग संस्था और ग्राहक के बीच की दूरी कम होती है.

मौखिक माध्यमों की बात करें तो - व्यक्तिगत संवाद, दूरभाष संवाद, चल-चित्र, विज्ञापन, टीवी या रेडियो के माध्यम से जब हम अपनी सेवाओं और योजनाओं की जानकारी लोगों तक पहुंचाते हैं तो लोगों पर इनका असर ज्यादा होता है. क्योंकि व्यक्तिगत संवाद एवं दूरभाष संवाद में हम ग्राहकों को अपनी योजनाओं से अवगत ही नहीं कराते बल्कि ग्राहक की बैंकिंग से संबंधित समस्याओं का भी समाधान कर सकते हैं, जिससे ग्राहकों में हमारे प्रति एक विश्वास, भरोसे और आशा की भावना उत्पन्न होती है. यही भरोसा हमे सालों-साल व्यवसाय में बनाए रखता है. वहीं दूसरी ओर चल-चित्र, विज्ञापन, टीवी या रेडियो के जरिये योजनाओं का प्रचार-प्रसार क्षेत्रीय भाषा में करने से ज्यादा से ज्यादा लोगों के बीच पहुँचा जा सकता है, जिससे जो हमारे ग्राहक नहीं भी हैं, उन्हें खुद से जोड़ना आसान हो पाता है और इस तरह नए-नए ग्राहकों से अटूट संबंध विकसित होते हैं. समाचार पत्र, पेम्पलेट व पत्रिकाओं के जरिये क्षेत्रीय भाषा में योजनाओं के निरंतर प्रचार-प्रसार से ग्राहकों को हमेशा नयी योजनाओं की जानकारी मिल पाती है. हमारे ग्राहकों को नयी और सटीक जानकारियां मिलती रहनी चाहिए ताकि वे हमारा साथ छोड़कर किसी और संस्था का हाथ न थाम लें.

मौजूदा दौर में सोशल मीडिया से कोई अछूता नहीं है. आज कारोबार में वृद्धि के लिए लगभग सारी संस्थाएं सोशल मीडिया का इस्तेमाल कर रही हैं. आज भारत युवा आबादी वाला देश है तथा हर कोई सोशल मीडिया से जुड़ा है, युवा वर्ग के अलावा लगभग सभी वर्ग के लोग सोशल मीडिया से जुड़े हैं. गूगल जैसे बड़े सर्च इंजन भी अंग्रेजी को छोड़कर क्षेत्रीय भाषाओं में जानकारी उपलब्ध करा रहे हैं. वहीं क्षेत्रीय भाषाएं भी लगभग सभी सोशल मीडिया साइट पर अपने पैर पसार चुकी हैं. चाहे फेसबुक हो या ट्वीटर हो या व्हाट्सएप हो, इनकी सेवाएं सभी भाषाओं में उपलब्ध हैं. यही वजह है की सभी बैंक आज सोशल मीडिया से जुड़े हैं, और जो ग्राहक हैं और जो नहीं भी हैं उनतक अपनी बात सोशल मीडिया के जरिये पहुंचा रहे हैं.

डिजिटल बैंकिंग के दौर में लगभग सभी बैंक डिजिटल प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध हैं. सभी मोबाइल बैंकिंग एप्स हिन्दी एवं क्षेत्रीय भाषाओं दोनों में उपलब्ध हैं. जिससे अधिक से अधिक लोगों के घर तक बैंकिंग सुविधाओं की पहुंच हो सके. कोविड महामारी के दौरान मोबाइल बैंकिंग एप्स बैंकिंग सेवाओं के लिए वरदान साबित हुए हैं.

शाखा में आए ग्राहकों के साथ विनम्रतापूर्वक उनकी ही भाषा में बात करना उनके विश्वास को जीतने और उन्हें बैंक की कार्य प्रणाली से जोड़ने का श्रेष्ठ माध्यम है. इस तरीके से जो हमारे ग्राहक-संबंध तैयार होते हैं, वे सालों साल चलते हैं. उदाहरण के तौर पर देखें तो इस तरह के संबंध निर्माण होने से ग्राहक अपने पारिवारिक कार्यक्रम में भी बुलाते हैं, पूरे परिवार से मिलाते हैं. ऐसे अटूट रिश्ते से वे हमें अपने परिवार का हिस्सा समझते हैं और हमें मौका देते हैं कि हम उनके पूरे परिवार की वित्त से जुड़ी जरूरतों को पूरा करें, जिससे हमारा ग्राहक आधार बढ़ता है.

बैंक के कारोबार की वृद्धि के लिए शाखा में कर्मचारियों के बीच बेहतर संवाद आवश्यक है. बैंकिंग सेवा क्षेत्र दूर-दूर तक फैला है और हर कर्मचारी अपने गृह-प्रदेश को छोड़कर दूर-दराज के प्रान्तों में कार्यरत है. इसलिए कर्मचारियों को क्षेत्रीय भाषाओं की जानकारी बहुत जरूरी है जिससे वे ग्राहकों तक अपनी बात आसानी से रख सकें व उनकी बैंकिंग से संबन्धित जरूरतों को पूरा कर सकें. बैंक कर्मचारी भले ही उस क्षेत्र का ना हो परंतु जब वह वहां की क्षेत्रीय भाषा बोलता है तो ग्राहक अपने आप को बहुत सहज महसूस करते हैं.

ग्राहक की भाषा में समय-समय पर ग्राहक-सभा, विभिन्न योजनाओं के लिए मेले का आयोजन किया जाता है. इसके साथ ही सभी योजनाएं चाहे वह बचत से संबंधित हो या ऋण से, आसानी से समझाई जा सकती हैं. इन्ही सभाओं के जरिये हम ग्राहकों में वित्तीय साक्षारता का प्रसार करते हैं जिससे वे ऋण और बचत से जुड़ी योजनाओं का लाभ ले सकें.

एक संतुष्ट ग्राहक बैंक की व्यवसाय वृद्धि का सबसे बड़ा माध्यम है. बैंक को अपने संतुष्ट व असंतुष्ट ग्राहकों की प्रतिक्रिया का अवलोकन करना चाहिए. ग्राहक अपनी प्रतिक्रिया चाहे वह मौखिक रूप में अवगत कराये, या अमौखिक रूप में, उन पर अमल करना ओर सेवाओं को ग्राहक के अनुकूल बनाकर कारोबार में वृद्धि सबसे बड़ी उपलब्धि है. आज के परिवेश में

यदि 'हम अपने ग्राहकों का ख्याल नहीं रखेंगे तो कोई और रख लेगा'. मार्केटिंग में कहते हैं कि एक संतुष्ट ग्राहक 10 नए ग्राहकों को हमसे जोड़ता है और एक असंतुष्ट ग्राहक 100 ग्राहकों को हमसे तोड़ता है. इसलिए ग्राहक की प्रतिक्रिया और उनसे परस्पर संवाद ही लक्ष्य प्राप्ति की कुंजी है.

ग्राहकों की प्रतिक्रिया व्यवसाय का सबसे बड़ा स्त्रोत है, जो हमे जानकारी जुटाने में मदद करता है कि कैसे हम अपनी बैंकिंग सेवाओं व कार्य प्रणाली में सुधार ला सकें. इन्हीं के जरिये हमें पता चलता है कि ग्राहकों की रुचि किन योजनाओं में है और किनमें नहीं है. यह भी पता चलता है कि ग्राहक आखिर किस तरह की सेवाएं हमसे चाहता है और कैसे उन तक पहुंचाया जाए. इन्हीं की मदद से हम अपने पुराने ग्राहकों को रोके रखते हैं और ज्यादा से ज्यादा नए ग्राहकों के दिल में उतरने की कोशिश करते हैं. यही जानकारियां हमें बैंक व्यवसाय वृद्धि के मार्ग पर अडिग करती हैं.

''अपनी छाछ को भला कौन खट्टा कहता है'', यह कहावत तो यथावत है, खासकर आज के प्रतिस्पर्धा युग में, जहां भले ही किसी बैंक की योजनाएं प्रतिस्पर्धी बैंकों की तुलना में कम हों या कम आकर्षक हों. कोई भी बैंकिंग संस्था यह नहीं कहेगी कि उसकी योजनाएं अच्छी नहीं हैं. जब योजनाएं ग्राहक को लुभाने वाली ना हों तब ग्राहक-भाषा ही एक जरिया बचता है जिससे ग्राहक बैंक से निरंतर जुड़ा रहता है.

बैंक की व्यवसाय वृद्धि के लिए जरूरी है कि ग्राहक-भाषा के मार्ग में आने वाले अवरोधों को दूर किया जाए. जैसे कि वित्तीय साक्षारता, भाषा की समझ, ग्राहक की संवेदना आदि, तभी ग्राहक हमसे जुड़ा रहेगा. कारोबार में वृद्धि के लिए जरूरी है कि हम अपनी भाषा और वाणी पर संयम रखें. एक ग्राहक शाखा में थोड़ा समय ज्यादा व्यतीत कर लेगा, लंबी कतार में लगना भी सहन कर लेगा, परंतु उसके साथ यदि दो मीठे बोल न बोले गए तो वह इसे कभी बर्दाश्त नहीं करेगा. इसलिए हर कर्मचारी को इस बात का ख्याल रखना चाहिए की मुंह से निकले हुए शब्द बाण की तरह होते हैं, लौटकर वापस नहीं आते.

'ऊंट किस करवट बैठेगा, यह कोई नहीं जानता' उसी प्रकार ग्राहक कब किस बैंक की ओर रुख कर ले, बताया नहीं जा सकता. हमारे यहां खाता होने के बावजूद भी कब वह उस खाते का उपयोग करना बंद कर दे, यह भी बताया नहीं जा सकता. परंतु ग्राहक के साथ सही भाषा का चयन वह धागा है जो ग्राहक को बैंक की प्रणालियों में पिरोता है और एक बैंक और एक ग्राहक के बीच अटूट संबंध बनाए रखता है और कर्मचारी बैंक के पहाड़ जैसे लक्ष्यों को हासिल कर लेते हैं.

मनीष झा
शाखा प्रमुख
रेहटी शाखा,
भोपाल क्षेत्र

नराकास बैठकें

दिनांक 29 दिसंबर, 2021 को नराकास, वाराणसी की 20 वीं छमाही समीक्षा बैठक कार्यालयाध्यक्ष, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय गाजियाबाद श्री नरेन्द्र सिंह मेहरा के मुख्य आतिथ्य एवं सहायक महाप्रबंधक, राजभाषा एवं संसदीय समिति श्री पुनीत कुमार मिश्र के विशिष्ट आतिथ्य में श्री नीलमणि, अध्यक्ष नराकास बैंक वाराणसी एवं क्षेत्रीय प्रमुख की अध्यक्षता में भौतिक एवं वर्च्यूल दोनों ही माध्यमों से आयोजित की गई. इस अवसर पर प्रमुख राजभाषा एवं संसदीय समिति श्री संजय कुमार विशेष रूप से उपस्थित थें. समिति की 20 वीं छमाही समीक्षा बैठक में समिति की पत्रिका काशी वाणी के 19 वें अंक (जुलाई-दिसंबर 21) का विमोचन किया गया.

दिनांक 08 अक्तूबर, 2021 को नराकास (बैंक), वडोदरा के सदस्य कार्यालयों/ शाखाओं के कार्यपालकों एवं राजभाषा प्रभारियों की विशेष बैठक आयोजित की गई. बैठक की अध्यक्षता समिति के अध्यक्ष एवं बैंक ऑफ़ बड़ौदा के मुख्य महाप्रबंधक (परिचालन) श्री वेणुगोपाल मेनन ने की. इस अवसर पर प्रमुख-राजभाषा एवं संसदीय समिति श्री संजय सिंह, सदस्य सचिव एवं बैंक ऑफ़ बड़ौदा के सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री पुनीत कुमार मिश्र सहित समिति के सदस्य कार्यालयों/ शाखाओं के कार्यपालकगण तथा राजभाषा प्रभारी/ अधिकारी उपस्थित रहे.

अभिप्रेरणा कार्यक्रम / कार्यशाला

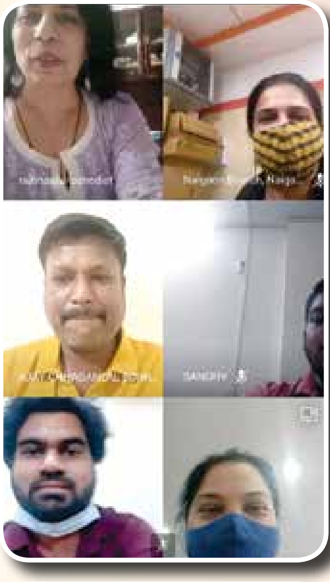

पुणे जिला क्षेत्र

30 नवंबर, 2021 को पुणे जिला क्षेत्र की शाखाओं के लिए हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें राजभाषा की प्रगति तथा काम काज के संबंध में शाखा की रेटिंग आदि के संबंध में विस्तार से चर्चा की गयी.

गुलबर्गा क्षेत्र

दिनांक 24 नवंबर, 2021 को मंगलूरु अंचल द्वारा गुलबर्गा क्षेत्र के व्यवसाय सहयोगियों के लिए हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया. कार्यक्रम में शाखा एवं क्षेत्रीय कार्यालय के स्टाफ सदस्यों ने सक्रिय रूप से भाग लिया.

हुब्बली क्षेत्र

दिनांक 25 नवंबर, 2021 को मंगलूरु अंचल के हुब्बली क्षेत्र के व्यवसाय सहयोगियों के लिए हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया. कार्यक्रम में 30 स्टाफ सदस्यों ने सक्रिय रूप से भाग लिया.

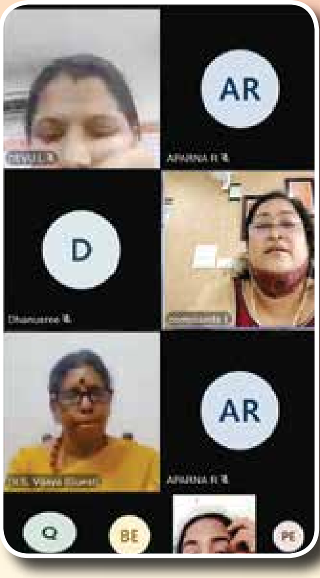

एर्णाकुलम अंचल

दिनांक 24 नवंबर, 2021 को एर्णाकुलम अंचल द्वारा 'ग्राहक सेवा में संप्रेषण कौशल का महत्व' विषय पर अभिप्रेरणा कार्यक्रम का आयोजन किया गया. कार्यक्रम में सहायक महाप्रबंधक-राजभाषा (सेवानिवृत्त) डॉ. विजया, मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहीं.

बड़ौदा अचंल

बड़ौदा अंचल द्वारा दिनांक 19 दिसंबर, 2021 को बड़ौदा अकादमी, बड़ौदा के सहयोग से अंचल के स्टाफ सदस्यों के लिए हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया. इस कार्यशाला में राजभाषा नीति-नियम की जानकारी देने के साथ बैंक में हिन्दी और भारतीय भाषाओं के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए तैयार किए गए तकनीकी टूल किट सामर्थ्य की जानकारी भी स्टाफ सदस्यों को दी गई.

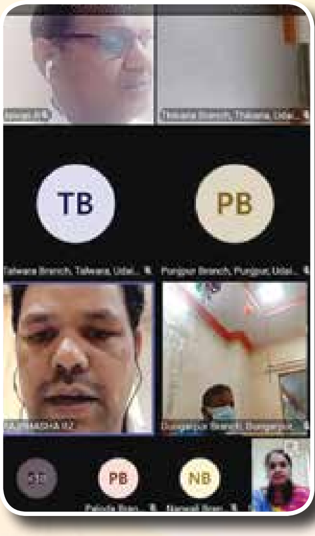

बांसवाड़ा क्षेत्र

दिनांक 13 नवंबर, 2021 बांसवाड़ा क्षेत्र की शाखाओं हेतु अभिप्रेरणा कार्यक्रम का आयोजन किया गया. उक्त कार्यक्रम को उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री जवानमल रमेशा की उपस्थिति में आयोजित किया गया.

प्रतियोगिताएं

एर्णाकुलम अंचल द्वारा स्कूल में प्रतियोगिता आयोजित

14 नवंबर 2021 को एर्णाकुलम अंचल और मलयालम दैनिक समाचार पत्र 'मलयाला मनोरमा' द्वारा बच्चों के लिए संयुक्त प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. सभी विजेताओं को दिनांक 30 नवंबर, 2021 को आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में उप अंचल प्रमुख श्री जियाद रहमान एवं क्षेत्रीय प्रमुख, एर्णाकुलम क्षेत्र श्री अनीष कुमार केशवन ने सम्मानित किया.

'बुझो तो जाने' प्रतियोगिता का आयोजन

दिनांक 18 नवंबर 2021 को क्षेत्रीय कार्यालय, के सभी स्टाफ सदस्यों हेतु बुझो तो जानो प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. इस प्रतियोगिता में करीब 30 स्टाफ सदस्यों ने भाग लिया. प्रतियोगिता में मूल्यांकन क्षेत्रीय प्रबंधक श्री संजीव सिंह ने किया.

विशाखापट्टनम क्षेत्र द्वारा आशु भाषण प्रतियोगिता आयोजित

दिनांक 17 नवम्बर, 2021 को विशाखापट्टनम क्षेत्र द्वारा रवीन्द्र भारती स्कूल, पेंदुर्ती के विद्यार्थियों के लिए 'आशु भाषण और निबंध प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया एवं विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार व प्रमाण पत्र से सम्मानित किया गया.

बड़ौदा शहर क्षेत्र-2 द्वारा आशु भाषण प्रतियोगिता आयोजित

दिनांक 25 नवंबर, 2021 को नड़ा शाखा एवं बड़ौदा शहर क्षेत्र 2 द्वारा श्री एम. एम. ए. आदर्श विद्यालय, नड़ा में 9 वीं एवं 10 वीं कक्षा के विद्यार्थियों हेतु 'हिन्दी आशु भाषण प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया एवं विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया.

बीकानेर क्षेत्र द्वारा हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित

बीकानेर क्षेत्र द्वारा दिनांक 30 नवंबर, 2021 को ऑनलाइन हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. विजेताओं को क्षेत्रीय प्रमुख श्री योगेश यादव एवं उप क्षेत्रीय प्रबंधक श्री नितिन अग्रवाल द्वारा दिनांक 07 दिसंबर, 2021 को प्रमाण-पत्र भेंट कर सम्मानित किया गया.

करनाल क्षेत्र में निबंध प्रतियोगिता का आयोजन

दिनांक 29 नवंबर, 2021 को करनाल क्षेत्रांतर्गत राम लाल चौक पानीपत शाखा द्वारा सैंट मैरी सीनियर सेकेंडरी स्कूल में निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया एवं विजेता विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया.

‘सामर्थ्य’ आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रम

बैंक की राजभाषा टीम द्वारा एक नवोन्मेषी पहल के रूप में नवीनतम भाषा संबंधी तकनीकी सुविधाओं को शामिल करते हुए ‘सामर्थ्य–भाषायी तकनीक संबंधी टूलकिट’ को तैयार किया गया है. इस टूलकिट में डिजिटल रूप से हिन्दी के उपयोग में सहायक नवीनतम तकनीकी माध्यमों की विस्तृत जानकारियों को शामिल किया गया है. इस टूलकिट को तैयार करने का उद्देश्य बैंक के स्टाफ सदस्यों को डिजिटल प्लेटफॉर्म पर हिन्दी के उपयोग को सरल बनाना है. तदनुसार, इस टूलकिट के माध्यम से पिछली तिमाही में प्रत्येक अंचल के स्टाफ सदस्यों के लिए ऑनलाइन कार्यशाला के जरिए अंचलवार आवश्यक जानकारी दी गई. प्रस्तुत हैं विभिन्न अंचलों में आयोजित कार्यक्रमों की झलकियां: – संपादक

चैन्ने अंचल

बड़ौदा अंचल

एर्णाकुलम अंचल

बेंगलुरू अंचल

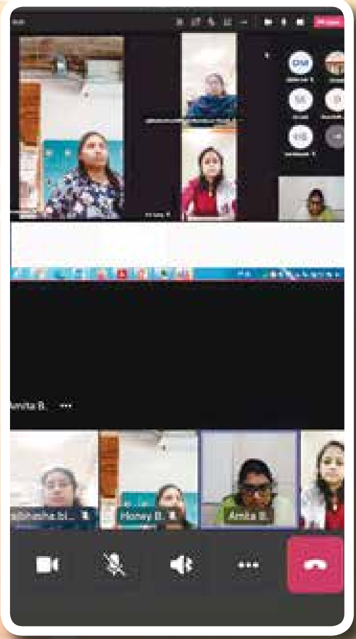

भोपाल अंचल

मंगलुरू अंचल

प्रशिक्षण कार्यक्रम

जयपुर अंचल

अहमदाबाद अंचल

बड़ौदा एपेक्स अकादमी, गांधीनगर

कोलकाता अंचल

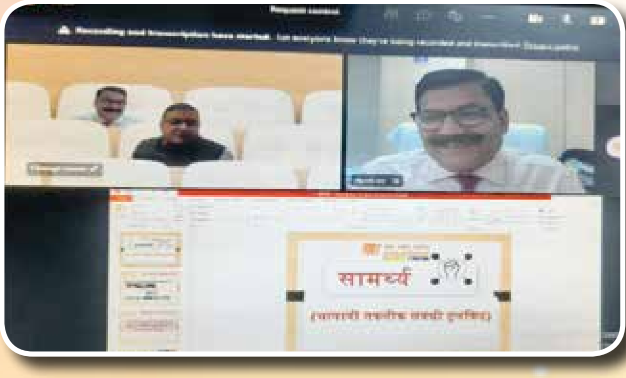

चंडीगढ़ अंचल

मुबई अंचल

पटना अंचल

प्रशिक्षण कार्यक्रम

राजकोट अंचल

लखनऊ अंचल

बैंक के कार्यपालकों को भारत सरकार का गौरव पुरस्कार

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा नई दिल्ली में आयोजित हिन्दी दिवस समारोह के दौरान बैंक के तत्कालीन मुख्य महाप्रबंधक एवं वर्तमान कार्यपालक निदेशक (पंजाब एण्ड सिंध बैंक) डॉ. रामजस यादव, सहायक महाप्रबधंक (मा.सं.प्र.), नई दिल्ली डॉ. दिनेश कुमार, सेवानिवृत्त उप क्षेत्रीय प्रबंधक श्री धर्मेन्द्र कुमार नीरज को उनकी पुस्तक ''कृषि एवं एमएसएमई – आत्मनिर्भर भारत'' में महत्वपूर्ण योगदान के लिए मौलिक लेखन हेतु गौरव पुरस्कार से सम्मानित किया गया. इसके अतिरिक्त सेवानिवृत्त शिक्षण प्रमुख (बड़ौदा अकादमी, जयपुर) एवं सहायक महाप्रबंधक डॉ. सुबह सिंह यादव को उनकी पुस्तक 'आधुनिक बैंकिंग प्रबन्धन' हेतु गौरव पुरस्कार प्रदान किया गया. ये सम्मान माननीय केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह, केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री श्री नित्यानंद राय, श्री अजय कुमार मिश्रा एवं श्री निशिथ प्रामाणिक के कर कमलों से प्रदान किए गए.

भाषा बहता नीर

क्र.	हिंदी	तेलुगु	तमिल	मलयालम
1	यह शहर काफी स्वच्छ और सुंदर है.	ई नगरं चाला शुभ्रंगा मरियु अंदंगा उंदि.	इन्त नकरम् मिकवुम् चुत्तमाकवुम् अऴकाकवुम् इरुक्किऱ्तु.	ई नगरं वळरे वृत्तियुळ्ळतुं मनोहरवुमाण्.
2	इस गांव में सभी लोग स्वस्थ हैं.	ई ग्रामंलो अंदरू आरोग्यंगा उन्नारु.	इन्त किरामत्तिल् अनैवरुम् नलमाक उळ्ळऩर्.	ई ग्रामत्तिल् ऐल्लावरुं आरोग्यवान्माराण्.
3	यहां बीमारियाँ काफी कम हैं.	इक्कडा चाला तक्कुव व्याधुलु उन्नायि.	इङ्कु मिकक् कुऱैवाऩ नोय्कळ् उळ्ळऩ.	इविटे रोगङ्ङळ् वळरे कुऱवाण्.
4	कृपया यहां कचरा मत फेंकिए.	दयचेसि इक्कड चत्त वेयकंडि.	तयवु चेय्तु इङ्कु कुप्पैकळै कोट्टातीर्कळ्.	दयवायि इविटे मालिन्यं वलिच्चेरियरुत्.
5	क्या आप बताएंगे कि कचरा-पेटी कहाँ है?	चेत्त कुंडी ऐक्कड उंदी चेप्पगलरा?	कुप्पैत् तोट्टि ऐङ्के ऐऩ्ऱु चोल्ल मुडियुमा?	चवट्टुकुट्ट ऐविटयाणेन्न् परयामो?
6	यहां से सीधा जाने पर आपको कचरा-पेटी मिलेगी.	इक्कडि नुंचि नेरुगा वेळ्ते चेत्त पेट्टे दोरुकुतुंदि.	इङ्किरुन्तु नेराक चेऩ्ऱाल् कुप्पै पट्टि इरुक्कुम्.	इविटे निन्न् नेरे पोयाल् ओरु चवट्टुकोट्ट ओंडु
7	कृपया कचरे को कचरा-पेटी में ही फेंके.	दयचेसि चेत्तनु चत्तकुंडीलो मात्रमे वेयंडि.	तयवु चेय्तु कुप्पैकळै कुप्पै तोट्टियिल् मट्टुम् पोटुङ्कळ्.	दयवायि मालिन्यं चवट्टुकट्टयिल् मात्रं इडुक
8	इस जगह पर काफी गंदगी रहती है.	ई प्रदेशंलो चाला मुरिकि उंदि.	इन्त इडत्तिल् अऴुक्कु अतिकम् उळ्ळतु.	ई स्थलत् धाराळं मालिन्यम ओंडु.
9	कृपया इस जगह को गंदा न करें.	दयचेसि ई स्थलान्नि मुरिकिगा चेयवद्दु.	तयवुचेय्तु इन्त इटत्तै अऴुक्काक्कातीर्कळ.	दयवायि ई स्थलं वृत्तिहीनमाक्करुत्.
10	गंदगी से काफी बीमारियाँ बढ़ती है.	मुरिकि अनेक व्याधुलकु कारणमवुतुंदि.	अऴुक्कु पल नोय्कळै उण्टाक्किऱ्तु.	अऴुक्क् पल रोगङ्ङळ्कुं कारणमाकुन्नु.
11	इस जगह कई दिनों से साफ-सफाई नहीं हुई है.	चाला रोजुलुगा ई स्थलं शुभ्रं चेयडं लेदु.	इन्त इडम् पल नाट्कळाग चुत्तम् चेय्यप्पटामल् उळ्ळतु.	ऐऱे नाळुकळायि इविटं वृत्तियाक्कियिट्टिल्ल.
12	चलो, इस जगह की साफ-सफाई करते हैं.	रंडि, ई स्थलान्नि शुभ्रं चेद्दां.	वारुङ्कळ्, इन्त इटत्तै चुत्तम् चेय्वोम्.	वरू, नमुक्क् ई स्थलं वृत्तियाक्कां.
13	जहां स्वच्छता रहती है वहां ईश्वर का निवास होता है.	ऐक्कड परिशुभ्रत उंटुंदो अक्कड भगवंतुडु उंटाडु.	ऐङ्के तूय्मै इरुक्किऱ्तो अङ्के कडवुळ् वसिक्किऱार्.	ऐविट वृत्तियुण्टो अविट दैवं वसिक्कुन्नु.
14	स्वच्छता से सकारात्मक माहौल बनता है.	परिशुभ्रत सानुकूल वातावरणान्नि सृष्टिस्तुंदि.	तूय्मै ओरु नेर्मैयाऩ चूऴलै उरुवाक्कुकिऱ्दु.	शुचित्वं ओरु नल्ल अन्तरीक्षं सृष्टिक्कुन्नु.
15	जब स्वच्छता रहेगी तभी हम स्वस्थ रहेंगे.	परिशुभ्रत उन्नप्पुडे आरोग्यंगा उंटां.	तूय्मै इरुन्ताल्ताऩ् आरोक्कियमाग इरुप्पोम्.	शुचित्वं उण्टायाले नम्मळ् आरोग्यमुळ्ळवराकू.

आइये ! सीखें भारतीय भाषाएं

क्र.	कन्नड	गुजराती	बांगला	मराठी
1	ई नगरवु अत्यंत स्वच्छ मत्तु सुंदरवागिदे.	आ शहेर खूब ज स्वच्छ अने सुंदर छे.	एइ शहरटि खुब परिष्कार एबं सुन्दर.	हे शहर अतिशय स्वच्छ आणि सुंदर आहे.
2	ई ग्रामदल्लि एल्लरू आरोग्यवागिद्दारे.	आ गाममां दरेक व्यक्ति स्वस्थ छे.	एइ ग्रामेर सबाइ सुस्थ आछे.	ह्या गावात सर्वजण निरोगी आहेत.
3	इल्लि रोगगळु बहळ कडिमे इवे.	अहीं बहु ओछा रोगो छे.	एखाने खुब कम रोग आछे.	येथे फार कमी आजार आहेत.
4	दयविट्टु इल्लि कसवन्नु एसेयबेडि.	महेरबानी करीने अहीं कचरो फेंकशो नहीं.	दया करे एखाने आबर्जना फेलबेन ना.	कृपया येथे कचरा टाकू नका.
5	कसद बुट्टि एल्लिदे एंदु नीवु हेळबल्लिरा?	शुं तमे कही शको के कचरापेटी क्यां छे?	आपनि कि बलते पारबेन आस्तकूर कोथाय आछे?	कचरापेटी कुठे आहे ते सांगता येईल का?
6	इल्लिंद नेरवागि होदरे निमगे कसद बुट्टि सिगुत्तदे.	अहींथी सीधा जशो तो तमने कचरा पेटी मळशे.	एखान थेके सोजा गेलेइ आस्तकूर पाबेन.	इथून सरळ गेल्यास एक कचरापेटी मिळेल.
7	दयविट्टु कसवन्नु कसद बुट्टियल्लि मात्र हाकिरि.	महेरबानी करीने कचरो फक्त कचरापेटीमां ज फेंको.	अनुग्रह करे आबर्जना शुधुमात्र आस्तकूर फेलुन.	कृपया कचरा फक्त कचरा पेटीतच टाका.
8	ई स्थळदल्लि साकष्टु कोळकु इरुत्तदे.	आ जग्याए खुब गंदकी रहे छे.	एइ जायगाय प्रचुर आबर्जना थाके.	या ठिकाणी मोठ्या प्रमाणात घाण आहे.
9	दयविट्टु ई स्थळवन्नु कोळकु माडबेडि.	महेरबानी करीने आ जग्याने गंदी न करो.	दया करे एइ जायगाटिके मइला करबेन ना.	कृपया ही जागा अस्वच्छ करू नका.
10	कोळकु अनेक रोगगळन्नु उंटुमाडुत्तदे.	गंदकीथी अनेक रोगो थाय छे.	मयला अनेक रोगेर कारण.	घाणीमुळे अनेक आजार होतात.
11	हलवु दिनगळिंद ई स्थळवन्नु स्वच्छगोळिसिल्ला.	घणा दिवसोथी आ जग्यानी सफाई करवामां आवी नथी.	अनेक दिन धरे एइ जायगाटि परिष्कार करा हयनि.	अनेक दिवसांपासून या ठिकाणी स्वच्छता करण्यात आलेली नाही.
12	बन्नि, ई स्थळवन्नु स्वच्छगोळिसोणा.	आवो, आ जग्याए साफ-सफाई करीए.	चलो, एइ जायगाटा परिष्कार करि.	चला, ही जागा स्वच्छ करूया.
13	एल्लि स्वच्छते इरुत्तदो अल्लि भगवंता नेलेसुत्ताने.	ज्यां स्वच्छता होय छे त्यां भगवाननो वास होय छे.	जेखाने परिच्छन्नता, सेखानेइ भगबानेर बास.	जिथे स्वच्छता असते तिथे देवाचा वास असतो.
14	स्वच्छतेयु सकारात्मक वातावरणवन्नु सृष्टिसुत्तदे.	स्वच्छताथी सकारात्मक वातावरण बने छे.	परिच्छन्नता एकटि इतिबाचक परिबेश तैरि करे.	स्वच्छतेमुळे सकारात्मक वातावरण निर्माण होते.
15	स्वच्छते इद्दाग मात्र नावु आरोग्यवागिरुत्तेवे.	स्वच्छता हशे त्यारे ज आपणे स्वस्थ रहीशुं.	परिष्कार थाकलेइ आमरा सुस्थ थाकबो.	स्वच्छता असेल तेव्हाच आपण निरोगी राहू.

स्पर्श

बाबू जी कहते थे, इंसान को उदास होना ही नहीं चाहिए. सुख और दुख तो केवल हमारे मन का भाव है जो कि क्षणिक होता है. जब कभी अकाल आए तो सोचना कहीं कई दिनों से बारिश हो रही है. जब गर्मी से चिड़िया चहचहाना छोड़ दे, तो सोचना कि दुनिया के किसी कोने में बर्फ भी गिर रही है. जब कहीं चार मजबूत कंधे किसी को उसके अंतिम स्थान तक ले जा रहें होंगे तो कोई नाजुक सा बच्चा दुनिया में आ भी रहा होगा.

वैदही को गुजरे आज पूरे पांच साल हो गए थे. पांच साल का विराज आज सुबह भागता हुआ मेरे पास आया, पापा-पापा मुझे टॉफियां दिलवा दो, दोस्तो में बाटनी हैं. सभी अपने जन्मदिन पर बाटते हैं. मुझे भी चाहिए प्लीज पापा. समझ नहीं आ रहा था कि उस पांच साल के लड़के को मैं कैसे समझाऊं कि आज ही के दिन उसकी माँ का देहांत हुआ था, तो वो अपनी माँ की बरसी पे टॉफियां कैसे बांट सकता है. मैंने बोला आज नहीं कल बांट देना, प्रॉमिस. उसने धीरे स्वर में बोला, पापा आज आपके पास पैसे नहीं हैं क्या? मैंने कहा नहीं, कल सब खर्च हो गए. उसने बोला कोई बात नहीं पापा, कल दिला देना. मैं बोल दूंगा कि मेरा जन्मदिन कल है. विराज अक्सर मुझे अपनी समझदारी भरी बातों से चकित कर देता था और मैं वैदही की याद में खो जाता था. समझदारी में विराज बिलकुल अपनी माँ पर गया है. वैदही से भी अगर मैं प्यार से किसी बात के लिए बोलता था तो वह मान जाती थी.

वैदही, 'शांत स्वभाव की सुंदर सी लड़की' माँ ने ही पसंद की थी मेरे लिए. जब मैं दिवाली की छुट्टियों में घर आया था. माँ ने कहा, मैंने तेरे लिए एक लड़की देखी है, बहुत ही गुणी है, तुझे उसी से शादी करनी होगी. माँ ने तो फैसला कर लिया था, अब मैं क्या कहता. मैंने बोला, तुझे जैसा ठीक लगे माँ. वैदही को मैंने विवाह से पहले नहीं देखा था, सच बोलूं तो मुझे माँ की पसंद पर कुछ संदेह भी था, न जाने कैसी लड़की होगी? गांव की है तो बिल्कुल देहाती होगी. कहीं मेरे ऑफिस के दोस्त मेरा मज़ाक ना उड़ाएं उसे लेकर. शादी से पहले तक मैं इन्हीं सब बातों को सोच कर दिन काटता था.

पर जब शादी में मैंने उसे पहली बार देखा तो मेरे सारे संदेह दूर हो गए, मेरी कल्पनाओं से बिलकुल विपरीत वैदही गुलाब की पंखुडियों सी कोमल, तितली सी चंचल, झील सी आंखें उसकी, मासूम सा चेहरा उसका, प्यारी सी सूरत उसकी, चांद सी शीतल, मानो चांदनी से नहाई हो, मानो आसमान से कोई परी उतर आई हो. नाजुक सी, भोली सी, हिरनी सी, मासूम सी. ऐसी थी मेरी वैदही. मैंने शादी के दिन वैदही के रूप को समझा और शादी के बाद उसके गुणों को. लगाव तो मुझे उससे इतना था कि वो दो पल के लिए भी मेरी आंखों से ओझल हो जाती थी तो मेरा मन नहीं लगता था. वैदही को अपने से दूर मैंने कभी नहीं रहने दिया. इन बातों पर कई बार वो मुझपे गुस्सा भी हुई कि मैं उसे मायके नहीं जाने देता. पर वो मेरे मनाने पर थोड़ी देर में मान भी जाती थी और अगले दिन मैं दफ्तर में बड़े साहब से छुट्टी लेकर खुद उसे उसके घरवालों से मिलाने जाता और कुछ दिन बाद साथ ही वापस ले आता.

वैदही अक्सर मुझे छेड़ते हुए कहती थी कि इतना लगाव ठीक नहीं है. अगर कभी तुम्हें मेरे बगैर रहना पड़ा तो क्या करोगे? मैं तुरंत कहता था, ऐसा दिन कभी नहीं आएगा, तुम देख लेना. तुम मेरे पास ही रहोगी हमेशा. एक बार वैदही ने मुझसे कहा था कि अगर मुझे कभी कुछ हो गया तो, मैं न रही तो? मुझे उसकी इस बात पर बड़ा गुस्सा आया. मैंने बोला, तुम ऐसी बाते क्यों करती हो? जानती हो ना मुझे इस तरह की बातें अच्छी नहीं लगती. फिर तो वैदही मुझे अपनी गोद में सुला लेती जैसे कि मैं कोई छोटा बच्चा हूं और फिर अपने मुलायम हाथों से मेरे बाल सहलाती घंटो तक. मुझे अच्छा लगता था उसके ये प्यार करने का अंदाज़. समय के साथ मेरा वैदही के लिए प्यार और भी बढ़ता गया. वैदही के सिवा मुझे कुछ और सूझता ही नहीं था. कहते हैं कि हर चीज की एक पराकाष्ठा होती है जिसके बाद वो स्थिर या सामान्य हो जाती है. मेरा वैदही के लिए प्यार या तो उस पराकाष्ठा पर पहुंचा नहीं था या यह परिकल्पना ही गलत है.

धीरे-धीरे समय बीतता गया, एक दिन अचानक वैदही कुछ काम करते-करते गिर गई. चक्कर आ गया था शायद मैं बहुत घबरा गया था. माँ सब समझ गई वो बोली घबराने वाली बात नहीं है, खुशी की बात है तू बाप बनाने वाला है. मैंने वैदही को अस्पताल ले जाना ठीक समझा. वहां पता चला कि माँ का अंदेशा ठीक था. मैं कुछ देर तक सोचता रहा कि कही संतान होने के बाद वैदही का प्यार मेरे लिए बंट तो नहीं जाएगा. उसी पल मैंने

वैदही की ओर देखा, उसके चेहरे पर खुशी थी, और उसकी खुशी में मेरी खुशी. माँ भी बहुत खुश थी. उसके बाद तो मैं उसका और भी ध्यान रखता था, माँ भी उसका बहुत ख्याल रखती. उसे ना तो कोई भारी सामान उठाने देती और ना ही ज्यादा देर कोई काम करने देती.

वैदही को अक्सर पेट में दर्द होता था, कभी-कभी तो वह रो देती. उसकी यह तकलीफ मुझसे देखी नहीं जाती थी. समय-समय पर मैं उसे अस्पताल जांच के लिए ले जाता. डॉक्टर साहिबा बोलती सब कुछ ठीक है बच्चा भी ठीक है. मेरे समझ में यह नहीं आता था कि जब सब कुछ ठीक है तो इसे इतना दर्द क्यों होता है. डॉक्टर साहिबा उसे कुछ दवा लिख देती और मैं उसे ले कर घर चला आता. एक दिन अचानक वैदही को बहुत दर्द हुआ माँ ने कहा कि समय आ गया है. मैं भी तेरे साथ अस्पताल चलती हूं. हम वैदही को लेकर अस्पताल पहुंचे, उसे भर्ती कराया, वो दर्द से कराह रही थी. उसे सीधे ओ. टी. में ले जाया गया. डॉक्टर साहिबा ने चेकअप किया और बाहर आई. मेरे कुछ पूछने से पहले बोली ऑपरेशन करना पड़ेगा. आप काउंटर पर जा कर औपचारिकता पूरी कर दीजिए. मैं सीधे काउंटर पर गया कुछ कागजात पर अपने हस्ताक्षर बनाए और ऑपरेशन के पैसे जमा किए. मेरे लौटते ही माँ ने बताया कि डॉक्टर साहिबा ने ऑपरेशन शुरू कर दिया है. मैं और मेरी माँ ईश्वर से वैदही के लिए दुआ मांगने लगे. ओ. टी. में बहुत समय लग रहा था. सामान्य तौर पर डिलीवरी आधे घंटे में हो जाती है पर अभी एक घंटे से कुछ ज्यादा हो गया. घबराहट से मेरा मन बैठा जा रहा था माँ का भी कुछ यही हाल था. कुछ समझ नहीं आ रहा था कि अंदर क्या चल रहा है.

कुछ समय बाद डॉक्टर साहिबा बाहर आई कुछ उदास दिख रही थी, मैं दौड़ कर उनके पास गया, वो बोली मुझे माफ कर देना. वैदही की ब्लीडिंग रुक ही नहीं रही थी. हमने तुम्हारे बेटे को तो बचा लिया पर वैदही को न बचा सके. मेरे पांव के नीचे से मानो जमीन खिसक गयी हो. मैं अपना आपा खो दिया और ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा, डॉक्टर साहिबा और अस्पताल वालों को भी भला बुरा कहने लगा. रो-रो कर माँ का भी यही हाल था पर उन्होंने मुझे संभाला, वो अंदर गयी और अपने पोते को गोद में ले कर मेरे पास आयी, मैं पागल हो चुका था. मैंने अपने बेटे की ओर देखा भी नहीं, मेरा सिरफिरा दिमाग यही सोच रहा था कि अगर ये लड़का न होता तो मेरी वैदही मेरे साथ होती. मैं वही अस्पताल में बेहोश हो गया उसके बाद क्या हुआ मुझे नहीं पता.

जब होश आया तो, अपने घर पर था. मेरे ससुराल वाले और बाकी के रिश्तेदार आ चुके थे सब मुझे दिलासा दे रहे थे पर इससे क्या होता मेरी वैदही तो जा चुकी थी किसी दूसरी दुनिया में जहां से कोई लौट कर नहीं आता. सब मेरी वैदही को घाट ले जाने को तैयार थे पर मैं इस अंतिम यात्रा के लिए बिलकुल तैयार नहीं था. मेरे मन में चल रहा था कि काश मैं उसे किसी तरह रोक पाता. मेरे मामा ने मुझे संभाला और अपने साथ घाट ले गए, मुझसे वैदही के शरीर को आग दिलवाई, मैं बेसुध वही गिर पड़ा. वैदही की चिता के जलाने तक सब वहा खड़े रहे फिर सभी जाने लगे मुझसे सहानुभूति प्रकट करते हुए. मामा मुझे घर लाए. कई दिन तक मैं घर पर ही पड़ा रहा. होश था मुझे, फिर भी एक बेहोशी थी. वैदही की माँ विराज को मेरे पास ले आई, ताकि बेटे को देखकर शायद मैं कुछ ठीक हो जाऊं, पर मैंने मुह फेर लिया. मैं अब भी वैदही की मौत के लिए विराज को ही जिम्मेदार मान रहा था.

फिर धीरे-धीरे मैंने साधारण दिनचर्या शुरू कर दिया. पर अब भी मैं विराज को पसंद नहीं करता था. धीरे-धीरे साल बीत गए. माँ ही विराज की देखभाल करती थी. एक दिन माँ रसोई में कुछ काम कर रही थी, मैं अपने कमरे में बैठा था. दरवाजे से देखा तो विराज गेंद से खेल रहा था. मैं देखता रहा थोड़ी देर में खेलते-खेलते विराज सीढ़ियों के पास पहुंच गया, उसकी गेंद सीढ़ियों से निचे गिर गई थी शायद. विराज सीढ़ियों के किनारे पहुंच गया. मुझे कुछ सुझा नहीं, मैंने दौड़ कर विराज को पकड़ लिया और गोद में उठा लिया. मुझे समझ नहीं आया कि मैंने ऐसा कैसे किया. यह था मेरा विराज को पहला स्पर्श, उसके स्पर्श में मुझे वैदही की अनुभूति हुई.

उस दिन के बाद से मेरा विराज के प्रति रवैया बदलने लगा क्योंकि उसका चेहरा मुझे वैदही की याद दिलाता था. एक वो दिन था और एक आज का दिन मैंने सोचा वैदही को तो गुज़रे अरसा हो गया. मैं क्यों विराज को उसकी खुशियों से महरूम रखूं. मैं उठ कर बाजार गया, विराज के लिए टॉफियां, चॉकलेट खरीद लाया. भगवान के पास रखे हुए रोरी और अक्षत ले आया. विराज बाहर खेल रहा था, उसे अंदर बुलाया. रोरी और अक्षत उसके माथे पर लगाया और बोला हैप्पी बर्थडे बेटा, सदा खुश रहो और टॉफियों का पैकेट उसके हाथों में रख दिया. विराज मुझसे लिपट गया बोला थैंक यू पापा, आई लव यू. माँ वहीं खड़ी देख रही थी. उसके आंखों में आंसू थे. वो खुशी के आंसू थे.

देखता हूं, दूर क्षितिज पे सूरज ने मुंह जमीन में आधा धासा लिया है. विराज हाथ जोड़ के बोलता है 'जय'. उसकी दादी ने सिखाया है कि उगते सूरज को प्रणाम करते हैं. उसे मालूम ही नहीं की सूरज उग नहीं, डूब रहा है. फिर सोचता हूं, क्या अंतर है उगते और डूबते सूरज में. चिड़िया चहचहा रही है, आसमान वैसे ही केसरिया है. बाबूजी की बात याद आती है, कहीं ये उग भी रहा होगा.

मैं भी हाथ जोड़ लेता हूं. कहता हूं 'जय'. विराज ताली पीट के हंसने लगता है.

प्रांजल जायसवाल
अंचल कार्यालय, लखनऊ

बढ़ती जनसंख्या और पारिस्थितिकी सन्तुलन

भारत देश क्षेत्रफल की दृष्टि से विश्व का सातवां सबसे बड़ा देश है. देश की बढ़ती जनसंख्या के आधार पर इसका विश्व में दूसरा स्थान है. यहां विश्व की लगभग 17.55% जनसंख्या निवास करती है. विश्व बैंक की एक रिपोर्ट के मुताबिक सन् 2050 तक विश्व की दो तिहाई आबादी नगरों में रहने लगेगी और तब ऊर्जा, पानी तथा आवास की मांग और बढ़ेगी. विश्व की एक तिहाई आबादी समुद्रों के तटीय इलाकों में रहने को विवश हो जाएगी और इतनी जगह भी नहीं बचेगी कि लोग सुरक्षित भूमि पर घर बना सकें.

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत में तीव्र गति से बढ़ती जनसंख्या के कारण इसे जनसंख्या विस्फोट का नाम दिया गया. भारत में बढ़ती आबादी के बढ़ते खतरों को इसी से बखूबी समझा जा सकता है कि दुनिया की कुल आबादी का करीब छठा हिस्सा विश्व के महज ढ़ाई फीसदी भू-भाग पर ही निवास करता है. जाहिर है कि किसी भी देश की जनसंख्या तेज गति से बढ़ेगी तो वहां उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव भी उसी के अनुरूप बढ़ता जाएगा. आज दुनियाभर में करीब एक अरब लोग भुखमरी के शिकार हैं और अगर आबादी इसी प्रकार बढ़ती रही तो भुखमरी की समस्या एक बहुत बड़ी वैश्विक समस्या बन जाएगी, जिससे निपटना इतना आसान नहीं होगा.

बढ़ती आबादी के कारण ही दुनियाभर में तेल, प्राकृतिक गैसों, कोयला इत्यादि ऊर्जा के संसाधनों पर दबाव अत्यधिक बढ़ गया है, जो भविष्य के लिए बड़े खतरे का संकेत हैं. जिस अनुपात में भारत में आबादी बढ़ रही है, उस अनुपात में उसके लिए भोजन, पानी, स्वास्थ्य, चिकित्सा इत्यादि सुविधाओं की व्यवस्था करना किसी भी सरकार के लिए आसान नहीं है. जनसंख्या विस्फोट होने के कारण भारत में भुखमरी, बेरोजगारी, आवास संबंधी जैसी कई समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं जिससे देश के सामाजिक, आर्थिक एवं पर्यावरणीय स्थिति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है.

भारत में जनसंख्या वृद्धि के कारण

- जन्म-दर के कारण
- मृत्यु दर के कारण
- बाल विवाह के कारण
- अन्धविश्वास के कारण
- अशिक्षा एवं अज्ञानता के कारण
- जीवन प्रत्याशा के कारण
- प्रवास के कारण

भारत में जनसंख्या वृद्धि के निवारण / नियंत्रण

शिक्षा का प्रसार

शिक्षा किसी भी देश के सामाजिक, आर्थिक विकास के लिए आवश्यक है. भारत में जनसंख्या वृद्धि का प्रमुख कारण अशिक्षा है. जनसंख्या वृद्धि किसी भी देश के लिए बहुत हानिकारक मानी जाती है. इससे भुखमरी, बेरोजगारी जैसी कई समस्याएं उत्पन्न होती हैं. शिक्षा जनसंख्या वृद्धि के निवारण एवं नियंत्रण के लिए आवश्यक है. अतः देश में हर बच्चे के लिए शिक्षा को अनिवार्य किया जाना चाहिए जिससे वे देश में व्याप्त विभिन्न परिस्थितियों को समझ सके.

शिक्षा के माध्यम से न केवल जनसंख्या वृद्धि का निवारण एवं नियंत्रण किया जाता है बल्कि देश के विकास के लिए भी यह महत्वपूर्ण है. अशिक्षा के कारण लोग अपनी समस्याओं को किसी के सम्मुख रखना सही नहीं समझते हैं अर्थात् शिक्षा के माध्यम से जनसंख्या वृद्धि रोकी जा सकती है.

सामाजिक सुरक्षा

भारत देश में वृद्धावस्था, बेकारी या दुर्घटना से सुरक्षित रहने के नियमित साधन ना होने के कारण लोगों में उनकी सुरक्षा से संबंधित भय बना रहता है जिसके कारण वे बड़े परिवार की इच्छा रखते हैं ताकि उनका परिवार उनकी सुरक्षा कर सके. सामाजिक सुरक्षा के कार्यक्रमों में बेरोजगारी भत्ता, वृद्धा पेंशन, वृद्धा आश्रम चलाकर लोगों की सुरक्षा के माध्यमों को अपनाना चाहिए जिससे उनमें सुरक्षा की भावना जागृत होगी और वे छोटे परिवार से संतुष्ट रहेंगे.

परिवार नियोजन जानकारी

परिवार नियोजन के उपायों को लोगों तक पहुंचाने के लिए इसका प्रचार-प्रसार किया जाना चाहिए जिससे लोगों में जागरूकता की भावना उत्पन्न होगी और यह जनसंख्या वृद्धि के नियंत्रण एवं निवारण के लिए आवश्यक है.

सन्तति सुधार कार्यक्रम

जनसंख्या वृद्धि के नियंत्रण के लिए सन्तति सुधार कार्यक्रमों को अपनाया जाना चाहिए.

जीवन-स्तर का विकास

देश में लोगों के जीवन स्तर को बढ़ाने के लिए कृषि एवं औद्योगिक उत्पादन को बढ़ावा देना चाहिए. लोगों के जीवन स्तर में विकास होने से वे स्वयं ही छोटे परिवार को महत्व देने लगेंगे जिससे जनसंख्या वृद्धि नियंत्रित होगी.

स्वास्थ्य सेवा के साधन

स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार भी जनसंख्या वृद्धि के नियंत्रण एवं निवारण के लिए आवश्यक है. स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार लोगों की कार्यकुशलता एवं आर्थिक उत्पादन की क्षमता को बनाये रखने के लिए आवश्यक है. इससे उनके जीवन का विकास होगा.

संतानोत्पत्ति की सीमा निर्धारण

चीन विश्व में जनसंख्या की दृष्टि से प्रथम स्थान पर है और उसने जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करने के लिए संतानोत्पत्ति की सीमा का निर्धारण किया है जिसमें उन्होंने प्रत्येक परिवार के लिए संतान की संख्या 1 या 2 निर्धारित की है. भारत देश में जनसंख्या विस्फोट को देखते हुए यहां भी संतानोत्पत्ति की सीमा पर ध्यान देने की जरूरत है. इससे जनसंख्या को आसानी से नियंत्रित किया जा सकता है.

महिला जागरूकता पर बल

भारत देश में आज भी महिलाओं में जागरूकता की कमी है. वे देश के विकास में अपना योगदान देने में हर तरह से पीछे रह जाती हैं. यदि शिक्षा या अन्य किसी माध्यम जैसे प्रचार-प्रसार से महिलाओं को जागरूक किया जाए तो वे जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करने के लिए बहुत बड़ा योगदान कर सकती हैं. महिलाओं में जागरूकता से जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित किया जा सकता है.

इसके अलावा जनसंपर्क जैसे - नुक्कड नाटक, सांस्कृतिक कार्यक्रमों तथा तरह-तरह की प्रतियोगिताओं के माध्यम से भी जनसंख्या वृद्धि के कारणों एवं समस्याओं की जानकारी दी जा सकती है.

हालांकि, हम इस बात पर थोड़ा संतोष व्यक्त कर सकते हैं कि जनसंख्या वृद्धि दर के वर्तमान आंकड़ों की देश की आजादी के बाद के शुरूआती दो दशकों से तुलना करें तो 1970 के दशक से जनसंख्या वृद्धि दर में निरन्तर गिरावट दर्ज की गई है, लेकिन यह गिरावट दर काफी धीमी रही है. पिछले कुछ दशकों में देश में शिक्षा और स्वास्थ्य के स्तर में निरन्तर सुधार हुआ है, उसी का असर माना जा सकता है कि धीरे-धीरे जनसंख्या वृद्धि दर में थोड़ी गिरावट आई है लेकिन यह उतनी भी नहीं है, जिस पर संतोष व्यक्त किया जा सके. बेरोजगारी और गरीबी ऐसी समस्याएं हैं, जिनके कारण भ्रष्टाचार, चोरी, अनैतिकता, अराजकता और आतंकवाद जैसे अपराध पनपते हैं और जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण किए बिना इन समस्याओं का समाधान संभव नहीं है.

इन सब बातों पर विमर्श करते हुए आज इस बात की आवश्यकता महसूस होने लगी है कि दुनिया के ऐसे प्रत्येक देश में जो जनसंख्या विस्फोट की समस्या से जूझ रहा है, जनसंख्या नियंत्रण कार्यक्रम युद्धस्तर पर चलाए जाए और जनता को जागरूक करने के लिए विशेष अभियान चलाए जाए. भारत जैसे विकासशील देश में तो इसकी और भी ज्यादा जरूरत है क्योंकि हमारे यहां ऐसे कार्यक्रम प्रायः बड़े जोश के साथ शुरू तो होते हैं किन्तु अक्सर ऐसी योजनाएं शुरू होने के कुछ ही समय बाद धीमी होने लगती हैं. अतः जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण पाने के लिए हमें कुछ कठोर और कारगर कदम उठाते हुए ठोस जनसंख्या नियंत्रण नीति पर अमल करने हेतु संकल्प लेना होगा ताकि कम से कम हमारी भावी पीढ़ियां तो जनसंख्या विस्फोट के विनाशकारी दुष्परिणामों को भुगतने से बच सकें.

किरन सिंह

हेड कैशियर

कतारगाम शाखा, सूरत शहर क्षेत्र

लुधियाना क्षेत्र द्वारा स्कूल में सुलेख प्रतियोगिता का आयोजन

दिनांक 01 दिसंबर, 2021 को लुधियाना क्षेत्र की अबोहर शाखा द्वारा नवयुग सीनियर सेकेंडरी स्कूल, अबोहर में सुलेख प्रतियोगिता का आयोजन किया गया और बच्चों के खाता खोलने हेतु शाखा द्वारा स्कूल के स्टाफ से संपर्क किया गया.

अंचल कार्यालय, बेंगलूरु द्वारा कन्नडा भाषा प्रशिक्षण कार्यक्रम

दिनांक 24 नवंबर, 2021 को अंचल कार्यालय, बेंगलूरु में कन्नड राज्योत्सव एवं कन्नडा प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया. इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री दुडीराज, कन्नडा साहित्यकार को औपचारिक रूप से सम्मानित किया गया. कार्यक्रम में अंचल प्रमुख एवं महाप्रबंधक श्री सुधाकर डी नायक ए, उप अंचल प्रमुख श्री बी शिवराम, नेटवर्क उप महाप्रबंधक श्री मुरली कृष्ण ए, बेंगलूरु सिटी स्थित सभी क्षेत्रीय कार्यालयों के क्षेत्रीय प्रमुख एवं अंचल कार्यालय एवं क्षेत्रीय कार्यालयों के स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे.

नराकास बैठकें

सीतामढ़ी

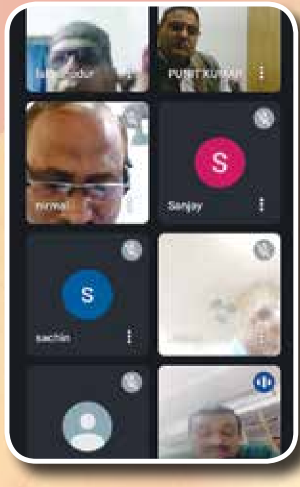

दिनांक 08 दिसंबर, 2021 को श्री लालबहादुर पासवान, अग्रणी जिला प्रबंधक, सीतामढ़ी की अध्यक्षता में नराकास, सीतामढ़ी की छमाही बैठक का आयोजन किया गया. बैठक में उप निदेशक, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, कोलकता श्री निर्मल दुबे एवं प्रधान कार्यलय से सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री पुनीत कुमार मिश्र उपस्थित रहे.

हल्द्वानी

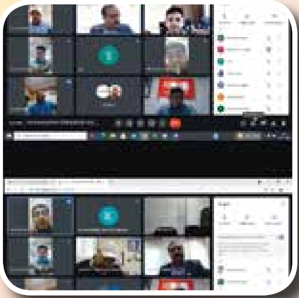

दिनांक 22 नवंबर, 2021 को नराकास, हल्द्वानी की 8वीं बैठक क्षेत्रीय प्रमुख श्री रितेश पंत जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई. इस अवसर पर प्रधान कार्यालय से श्री संजय सिंह प्रमुख, (राजभाषा एवं संसदीय समिति) द्वारा विशेष मार्गदर्शन प्राप्त हुआ.

बालोद

दिनांक 23 दिसंबर, 2021 को नराकास, बालोद की पंद्रहवीं बैठक का आयोजन माइक्रो सॉफ्ट टीम्स के माध्यम से किया गया. उक्त बैठक की अध्यक्षता श्री प्रणय दुबे, अग्रणी जिला प्रबन्धक एवं अध्यक्ष, नराकास, बालोद द्वारा की गई.

फ़ैज़ाबाद

दिनांक 26 नवंबर, 2021 को नराकास, फ़ैज़ाबाद की 13वीं अर्द्ध-वार्षिक बैठक का आयोजन किया गया. बैठक की अध्यक्षता समिति के अध्यक्ष श्री अनिल कुमार झा ने की. इस अवसर पर अंचल कार्यालय, लखनऊ से अंचल प्रमुख श्री ब्रजेश कुमार सिंह एवं सहायक महाप्रबंधक (मा. सं. प्र.) श्री गिरीश कुमार उपस्थित थे. प्रधान कार्यालय से प्रमुख (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री संजय सिंह का विशेष मार्गदर्शन प्राप्त हुआ.

धमतरी

दिनांक 23 दिसंबर, 2021 को नराकास, धमतरी की पंद्रहवीं बैठक का आयोजन माइक्रो सॉफ्ट टीम्स के माध्यम से आयोजित किया गया. बैठक की अध्यक्षता श्री प्रबीर कुमार रॉय, अग्रणी जिला प्रबन्धक एवं अध्यक्ष, नराकास, धमतरी द्वारा की गई.

आणंद

दिनांक 26 नवंबर, 2021 को नराकास, आणंद की छमाही बैठक आयोजित की गयी. बैठक में डॉ. सुस्मिता भट्टाचार्य, (उप निदेशक, कार्यान्वयन) भारत सरकार, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय प्रमुख रूप से मार्गदर्शन देने हेतु उपस्थित थीं. प्रधान कार्यालय से प्रमुख (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री संजय सिंह ने प्रमुख मुद्दों पर बात करते हुए उपयोगी मार्गदर्शन दिए.

नराकास, अलीराजपुर

दिनांक 30 नवंबर 2021 को श्री सौरभ जैन, अग्रणी जिला प्रबंधक, अलीराजपुर की अध्यक्षता में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अलीराजपुर की 7वीं अर्द्धवार्षिक समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया. उक्त बैठक में क्षेत्रीय प्रमुख श्री सुबोध इनामदार, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी के संयोजक श्री अशोक, नराकास, अलीराजपुर के सदस्य कार्यालयों के स्टाफ सदस्य जुड़े.

पुरस्कार एवं सम्मान

अंचल कार्यालय, बेंगलूरु को नराकास का पुरस्कार

राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन हेतु अंचल कार्यालय, बेंगलूरु को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बेंगलूरु का द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ. ऑनलाइन रूप से आयोजित समिति की बैठक में इस पुरस्कार की घोषणा की गई. बैठक में अंचल प्रमुख श्री सुधाकर डी नायक, एवं मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) श्रीमती सुमि पी यु ने प्रतिभागिता की.

लुधियाना क्षेत्र को क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार

भारत सरकार, गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग द्वारा श्री नित्यानंद राय, गृह राज्यमंत्री के मुख्य आतिथ्य एवं श्री अजय कुमार मिश्रा,गृह राज्यमंत्री की उपस्थिति में दिनांक 27 नवम्बर 2021 को कानपुर में आयोजित क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह में क्षेत्रीय कार्यालय, लुधियाना को 'ख क्षेत्र' के अंतर्गत बैंक श्रेणी में वर्ष 2018-19 हेतु द्वितीय पुरस्कार स्वरूप शील्ड एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया जिसे क्षेत्रीय प्रमुख श्री विपिन कुमार ने ग्रहण किया.

क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरु दक्षिण को नराकास का पुरस्कार

राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन हेतु क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरु दक्षिण को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बेंगलूरू का तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ. ऑनलाइन रूप से आयोजित समिति की बैठक में इस पुरस्कार की घोषणा की गई. बैठक में अंचल प्रमुख श्री सुधाकर डी नायक, एवं मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) श्रीमती सुमि पी यु ने प्रतिभागिता की. इस कार्यक्रम में क्षेत्रीय प्रमुख श्री रितेश कुमार एवं उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री मनोज कुमार सिन्हा भी उपस्थित रहे.

जयपुर क्षेत्र द्वारा पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित

जयपुर क्षेत्र द्वारा सितम्बर 2021 तिमाही के दौरान शाखा स्तर पर राजभाषाई रेटिंग में शीर्ष पर रही शाखाओं को दिनांक 06 अक्तूबर, 2021 को आयोजित समारोह के दौरान पुरस्कृत किया गया. उप महाप्रबंधक एवं क्षेत्रीय प्रमुख श्री एस के बंसल द्वारा प्रशस्ति पत्र प्रदान कर आमेर रोड, आदर्श नगर एवं गोपालपुरा बाईपास शाखा को सम्मानित किया गया.

कोलकाता अंचल द्वारा पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित

दिनांक 08 अक्तूबर, 2021 को हिन्दी दिवस 2021 माह की समाप्ति पर माह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिता के विजेताओं को सम्मानित करने हेतु काव्य गोष्ठी एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया. उक्त कार्यक्रम का शुभारंभ अंचल प्रमुख, श्री देबब्रत दास, उप अंचल प्रमुख, श्री पी.के. दास, कोलकाता अंचल एवं मुख्य अतिथि के रूप में श्री जितेंद्र जितांशु, कवि, लेखक और 'सदीनामा' पत्रिका के संपादक उपस्थित रहे.

अंचल कार्यालय, मुंबई को नराकास का पुरस्कार

दिनांक 30 नवंबर, 2021 को बैंक नराकास, मुंबई द्वारा वर्ष 2020-21 के लिए राजभाषा शील्ड पुरस्कार की घोषणा के अंतर्गत अंचल कार्यालय, मुंबई को तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया. यह पुरस्कार महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख श्री जगदीश तुंगारिया एवं मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) श्रीमती रेशमा जलगांवकर ने उप-निदेशक, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय पश्चिम, गृह मंत्रालय डॉ. सुस्मिता भट्टाचार्य, उप-निदेशक, हिन्दी शिक्षण योजना पश्चिम श्री राकेश कुमार पराशर के कर-कमलों से प्राप्त किया.

वाराणसी में प्रथम अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा आजादी के अमृत महोत्सव के एक भाग के रूप में दिनांक 13-14 नवंबर, 2021 को वाराणसी में प्रथम अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस दो दिवसीय सम्मेलन का शुभारंभ माननीय केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह के कर-कमलों से हुआ।

कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ, केंद्रीय गृह राज्य मंत्रीगण श्री नित्यानंद राय, श्री अजय कुमार मिश्र, श्री निशीथ प्रमाणिक और संसदीय राजभाषा समिति के कई सदस्य उपस्थित रहे। बैंक की ओर से इस कार्यक्रम में प्रधान कार्यालय से मुख्य महाप्रबंधक (परिचालन) श्री अजय कुमार खोसला, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री पुनीत कुमार मिश्र, राजकोट अंचल के अंचल प्रमुख श्री वी के बसेठा, वाराणसी क्षेत्र -1 के क्षेत्रीय प्रमुख श्री नीलमणि तथा कई अन्य अंचलों के राजभाषा प्रभारियों ने प्रतिभागिता की।

अपने संबोधन में माननीय केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने हिंदी के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए हिंदी की लघुता ग्रंथि से बाहर निकल कर उसके विकास और प्रचार- प्रसार के लिए योगदान हेतु सभी भारतीयों का आह्वान किया। उन्होंने उपस्थित जनसमूह को यह आश्वस्त किया कि अगले कुछ वर्षों में देश में एक ऐसा माहौल स्थापित होगा जहां हिंदी न जानने वालों को लघुता का बोध होगा।

उद्घाटन सत्र के पश्चात सम्मेलन को तीन समानांतर सत्रों सहित कुल 6 चर्चा सत्रों में आयोजित किया गया जिसमें देश के मूर्धन्य विद्वानों, भाषाविदों, मीडिया कर्मियों व राजनेताओं ने सहभागिता की। चर्चा सत्रों में ''स्वतंत्रता संग्राम और स्वतंत्र भारत में संपर्क भाषा एवं जन भाषा के रूप में हिंदी की भूमिका'', ''मीडिया में हिंदी - प्रभाव एवं योगदान'', ''राजभाषा के रूप में हिंदी की विकास यात्रा और योगदान'', ''वैश्विक संदर्भ में हिंदी - चुनौतियां और संभावनाएं'', ''भाषा चिंतन की भारतीय परंपरा और संस्कृति के निर्माण में हिंदी की भूमिका'' और ''न्यायपालिका में हिंदी - प्रयोग और संभावनाएं'' जैसे समसामयिक और प्रासंगिक विषयों पर विशद चिंतन एवं विचार-विमर्श हुआ जो भविष्य में हिन्दी की विकास यात्रा को आगे बढ़ाने में सहायक सिद्ध होंगे।

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग की सचिव सुश्री अंजली आर्य तथा संयुक्त सचिव डॉ मीनाक्षी जौली सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारियों के मार्गदर्शन और संयोजन में आयोजित यह सम्मेलन राजभाषा कार्यान्वयन को नई दृष्टि और दिशा देने में सफल रहा।

अभिप्रेरणा कार्यक्रम / कार्यशाला

बेंगलूरू उत्तर क्षेत्र

दिनांक 25 नवंबर, 2021 को बेंगलूरु उत्तर क्षेत्र में क्षेत्रीय प्रमुख श्री.सत्यनारायण नायक के एवं उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री सुनील के पै की अध्यक्षता में शाखाओं के हिंदी प्रेरकों के लिए हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया.

बड़ौदा शहर-2 क्षेत्र

दिनांक 26 नवंबर 2021 को बड़ौदा शहर 2 क्षेत्र द्वारा राजभाषा अभिप्रेरणा कार्यक्रम का आयोजन किया गया. इस कार्यक्रम में क्षेत्र की 31 शाखाओं के शाखा प्रमुख उपस्थित थे. इस अवसर पर शाखा प्रमुखों को सामर्थ्य टूलकिट एवं राजभाषा रेटिंग के संबंध में भी जानकारी प्रदान की गई.

पुरस्कार एवं सम्मान

भारत सरकार, गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित विभिन्न क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलनों में हमारे बैंक के विभिन्न कार्यालयों एवं बैंक के संयोजन में कार्यरत विभिन्न नगर समितियों को प्राप्त पुरस्कार

नराकास (बैंक), बड़ौदा

नराकास (बैंक), राजकोट

नराकास (बैंक), जोधपुर

नराकास (बैंक), जयपुर

अंचल कार्यालय, पटना

अंचल कार्यालय, बड़ौदा

क्षेत्रीय कार्यालय, पणजी

क्षेत्रीय कार्यालय, वाराणसी

वेबिनार/ सेमिनार

‘साइबर धोखाधड़ी–समस्या एवं समाधान’ पर वेबिनार

दिनांक 28 अक्तूबर, 2021 को भोपाल अंचल द्वारा ’साइबर धोखाधड़ी–समस्या एवं समाधान’ विषय पर वेबिनार का आयोजन किया. इस वेबिनार में मुख्य अतिथि के रूप में डीएसपी, साइबर सुरक्षा सुश्री ऋचा जैन उपस्थित रहीं. कार्यक्रम की अध्यक्षता उप अंचल प्रमुख सुश्री मौसुमी मित्रा ने की.

चैन्नै अंचल द्वारा वेबिनार आयोजित

दिनांक 28 अक्तूबर, 2021 को बड़ौदा अकादमी के सह-संयोजन में चैन्नै अंचल के स्टाफ के लिए ‘शाखाओं में शून्य सहिष्णुता मदों का अनुपालन’ विषय पर वेबिनार का आयोजन किया गया. कार्यक्रम में प्रतिभागियों के साथ आंतरिक जोखिम रेटिंग के मापदंडों पर विस्तृत चर्चा की गई व तत्पश्चात प्रश्नोत्तरी सत्र रखा गया.

‘सृजनात्मक लेखन’ विषय पर वेबिनार का आयोजन

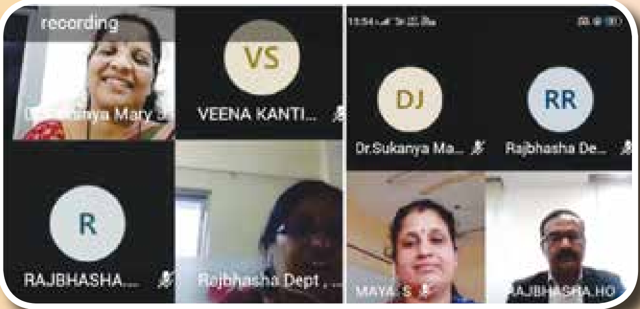

मंगलूरु अंचल द्वारा दिनांक 12 अक्तूबर, 2021 को ‘सृजनात्मक लेखन’ विषय पर वेबिनार का आयोजन किया गया जिसमें डॉ.सुकन्या मेरी, प्राचार्य एवं हिंदी विभागाध्यक्ष पूर्ण प्रज्ञा संध्या कॉलेज, उडुपी मुख्य अतिथि वक्ता के रूप में उपस्थित रहीं. वेबिनार का उद्घाटन श्री विनय गुप्ता, नेटवर्क उप महाप्रबंधक ने किया तथा श्री संजय सिंह, प्रमुख-राजभाषा एवं संसदीय समिति भी इस वेबिनार में विशेष रूप से उपस्थित रहे.

चंडीगढ़ अंचल द्वारा ‘ट्रैक्टर वित्तपोषण’ विषय पर वेबिनार का आयोजन

दिनांक 21 अक्तूबर, 2021 को अंचल कार्यालय, चंडीगढ़ द्वारा व्यवसाय प्रतिनिधियों के लिए – ‘कृषि उत्सव : व्यवसाय प्रतिनिधियों के लिए कार्यक्रम’ से संबंधित वेबिनार का आयोजन किया गया. इस कार्यक्रम में प्रतिभागियों को डिजिटल उत्पादों के संबंध में विस्तृत जानकारी प्रदान की गई.

क्षेत्रीय कार्यालय, जोरहाट द्वारा मेधावी विद्यार्थी सम्मान समारोह आयोजित

दिनांक 20 दिसंबर 21 को क्षेत्रीय कार्यालय, जोरहाट द्वारा मणिपुर विश्वविद्यालय में मेधावी विद्यार्थी सम्मान योजना का आयोजन किया गया. इस अवसर पर मणिपुर विश्वविद्यालय में एम. ए. हिन्दी में प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया. इस अवसर पर मणिपुर विश्वविद्यालय शाखा के वरिष्ठ प्रबन्धक श्री रतन लाइशरम तथा इंफाल शाखा की शाखा प्रमुख सुश्री निजोलता होबीजाम उपस्थित रहीं.

अभिप्रेरणा कार्यक्रम / कार्यशाला

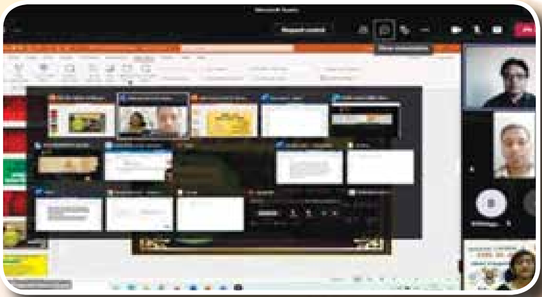

चेन्नई ग्रामीण क्षेत्र

दिनांक 5 अक्तूबर, 2021 को चेन्नई ग्रामीण क्षेत्र व पुदुच्चेरी क्षेत्र के स्टाफ सदस्यों के लिए बहुभाषी लीला व तकनीकी ई-टूल्स विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया.

बीसी केंद्र : निवारक सतर्कता

श्री कुमार का नाम क्षेत्र के अग्रणी शाखा प्रमुखों में गिना जाता था. सबसे पहले शाखा में पहुंचना उनकी आदतों में शुमार था. रोज की तरह ये सुबह 9 बजे ही अपनी शाखा में पहुंच गए. शाखा पहुंचने के बाद, पहला कार्य होता था समाचार पत्र पढ़ना. चाय की चुस्की के साथ जैसे ही पहले पृष्ठ पर नजर गयी, अपनी ही शाखा का नाम पढ़कर चौंक गए. क्षेत्रीय अखबार में एक खबर थी कि उनकी ही शाखा से लिंक बीसी केंद्र जोकि किसी गांव में स्थित है वहां कुछ ग्राहकों के साथ धोखाधड़ी हुई हैं. अखबार के अनुसार बीसी ने कुछ ग्राहकों से उनके लोन एवं बचत खातों में जमा करने के लिए पैसे लिए परंतु उनके खाते में जमा नहीं किया. चूंकि घटना का जिक्र अखबारों में था, क्षेत्रीय कार्यालय को स्वत: ही इसकी जानकारी मिल गयी. क्षेत्रीय प्रमुख ने त्वरित कार्रवाई की एवं कार्यालय से एक टीम को जांच के लिए भेजा. जांच से पता चला कि बीसी एजेंट नें ग्राहकों का रूपए 21.48 लाख गबन किया. उसने एक वर्ष से अधिक समय तक निम्नलिखित कार्य प्रणाली अपनायी :

बीसी एजेंट द्वारा अपनाई जाने वाली धोखाधड़ी की कार्यप्रणाली:

1. ग्राहकों से ऑफलाइन जमा स्वीकार करता था, सिस्टम से जनरेट की गई रसीद देने की जगह हस्तलिखित काउंटर-फाइल प्रदान करता था तथा पासबुक खुद से अद्यतन करता था.

ए) ग्राहकों से उसके बीकेसीसी खाते में जमा करने के लिए जमा राशि स्वीकार की और हस्तलिखित काउंटर-फाइल जारी किया परंतु उसे बीकेसीसी खाते में जमा नहीं किया और व्यक्तिगत उपयोग के लिए राशि का दुरूपयोग किया.

बी) स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) सदस्यों से ऋण खातों में किस्त जमा करने के लिए जमा राशि स्वीकार की और हस्तलिखित काउंटर-फाइल जारी किया परंतु उसे स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) खाते में जमा नहीं किया.

2. ग्राहक एकल लेनदेन अर्थात् निकासी या जमा या निधि अंतरण करना चाहता है. इस लेनदेन के लिए ग्राहक को अपना आधार नंबर और बायोमैट्रिक प्रमाणीकरण देना होता है. बीसी ग्राहक को सूचित करते हैं कि सर्वर काम नहीं कर रहा है, तकनीकी त्रुटि है, आदि के बहाने कई बार अतिरिक्त उंगली के निशान ले लेते हैं. पहला लेनदेन वास्तविक होता है किन्तु अतिरिक्त उंगली के निशान ग्राहकों के खाते से अतिरिक्त राशि आहरण के लिए किए जाते हैं अथवा ग्राहक के खाते से बीसी के रिश्तेदार अथवा उसके मित्र के खाते में निधि अंतरण किए जाते हैं.

बीसी ने रू. 21.48 लाख में से 5.2 लाख स्थानीय पंचायत के कुछ ग्राहकों को वापस लौटाया एवं बाकी रकम लौटाने के लिए पंचायत से एक समझौते पर हस्ताक्षर किया. बाद में बीसी एजेंट भाग गया.

पायी गयी अनियमितताएं :

- ग्राहकों से नकदी प्राप्ति की पावती हेतु बीसी एजेंट को बैंक की स्लिप उपलब्ध करायी गयी थी.
- बीसी एजेंट मैनुअल नकदी प्राप्ति की पावती देने के लिए उसके द्वारा बनायी गयी रबड़ स्टैम्प का उपयोग कर रहा था.
- बीसी केंद्र पर 'क्या करें, क्या न करें' बोर्ड प्रदर्शित नहीं किया गया था.
- बीसी केंद्र की नियमित आधार पर निगरानी नहीं की गई.
- ग्राहकों कों जागरूक नहीं किया गया .

धोखाधड़ी के रोकथाम के उपाय :-

बीसी केन्द्रों के निगरानी के लिए बीसी सुपरवाइजर को नियुक्त किया गया है एवं साथ में कॉर्पोरेट बीसी के द्वारा भी इन केन्द्रों की निगरानी की जाती है. हालांकि, ये इन केन्द्रों की निगरानी के लिए अतिरिक्त जरिया हैं एवं इससे जुड़ी मुख्य जवाबदेही लिंक शाखाओं, संबंधित क्षेत्रों एवं अंचल का है. इस संबंध में शाखाओं एवं नियंत्रण कार्यालयों के लिए मानदंड तय किए गए हैं जो निम्नलिखित है :-

शाखाएं :

1. शाखा के अधिकारियों द्वारा प्रत्येक महीने की 5 तारीख तक या उससे पहले अपनी शाखा से संबद्ध सभी बीसी केन्द्रों पर लेखापरीक्षा करना होता है.

2. बीसी केन्द्रों पर व्यवस्थित रखे जाने वाले विजिटर रजिस्टर में बीसी केन्द्रों के बारे में अपनी टिप्पणी एवं सुझाव देनी चाहिए. दौरा कर रहे अधिकारी को सुनिश्चित करना चाहिए कि –

क) बीसी केंद्र पर ऑफलाइन लेनदेन नहीं होता हो.

ख) बीसी केंद्र पर बैंक की स्टेशनरी का प्रयोग नहीं होता हो.

ग) ग्राहकों को कम्प्यूटर सृजित लेनदेन पर्ची जारी की जा रही हो.

घ) 'क्या करें, क्या न करें' का बोर्ड प्रदर्शित हो.

च) ओडी सेटलमेंट खाते का रोजाना निरीक्षण इत्यादि.

3. दौरा करने वाले अधिकारी यह भी जांच करें कि बीसी केन्द्रों पर कम से कम एक वित्तीय / गैर वित्तीय लेन-देन करना तथा उसका रिकॉर्ड रखना अनिवार्य है तथा इस दौरे की रिपोर्ट के साथ संलग्न करके क्षेत्रीय कार्यालय को महीने के 7 तारीख तक भेजना सुनिश्चित करें.

4. क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा महीने की 10 तारीख तक अंचल को एवं अंचल कार्यालय को 12 तारीख तक प्रधान कार्यालय को अनुपालन प्रमाण पत्र भेजना अनिवार्य है.

क्षेत्रीय कार्यालय :

क्षेत्रीय कार्यालयों द्वारा यह सुनिश्चित करने के लिए सक्रिय कदम उठाने चाहिए कि सभी शाखाओं में शाखा अधिकारियों द्वारा प्रत्येक महीने लेखापरीक्षा की जाती है तथा उनके दौरे की रिपोर्ट निर्धारित समयावधि में प्राप्त होती है.

क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा अपने स्तर से प्रत्येक तिमाही में शाखा की लेखापरीक्षा के साथ-साथ क्षेत्र के 10% बीसी केन्द्रों का औचक निरीक्षण किया जाना चाहिए एवं अवलोकन के आधार पर आवश्यक कार्रवाई करनी चाहिए. आगामी तिमाही में उसी बीसी की लेखापरीक्षा न की जाए. अन्य शब्दों में, बीसी केन्द्रों की रोटेशन के आधार पर लेखापरीक्षा की जानी चाहिए.

लेखापरीक्षा एवं निरीक्षण प्रभाग:

संबंधित जेडआईएडी के आंतरिक लेखापरीक्षक द्वारा अपने नियमित शाखा निरीक्षणों के दौरान कुछ बीसी केन्द्रों का भी औचक निरीक्षण किया जाना चाहिए. निरीक्षण के दौरान यह सुनिश्चित करना चाहिए कि बैंक के द्वारा जारी संबन्धित दिशानिर्देशों का पालन बीसी केंद्र पर हो रहा है. यदि कोई अनियमितता पायी जाती है तो उनकी रिपोर्ट में इसका उल्लेख होना चाहिए.

व्यवसाय प्रतिनिधि हमारे शाखाओं के विस्तारित भाग के रूप में हैं एवं हर तरह से हमारे व्यवसाय वृद्धि में सहायक हैं. चूंकि अनेक तरह की वित्तीय एवं गैर वित्तीय लेनदेन संबंधी बैंकिंग सुविधाएं ग्राहकों को सीधे बीसी केन्द्रों पर दिए जाते हैं, अत: बैंक स्वत: ही वित्तीय, परिचालन, प्रतिष्ठा एवं अन्य जोखिमों के अधीन आ जाता है. अत: बैंक द्वारा जारी किए गए उल्लेखित नियमों का पालन करके न सिर्फ धोखाधड़ी से बचा जा सकता है बल्कि हितधारकों की नजर में हम अपनी छवि को भी बेहतर बनाए रख सकते हैं.

सचिन
वरिष्ठ प्रबंधक
बड़ौदा अकादमी, बड़ौदा

बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान समारोह

अहमदाबाद क्षेत्र-2

दिनांक 17 दिसंबर, 2021 को अहमदाबाद क्षेत्र 2 द्वारा गुजरात विद्यापीठ में बैंक की मेधावी विद्यार्थी सम्मान योजना के अंतर्गत कार्यक्रम का आयोजन किया गया. कार्यक्रम की अध्यक्षता उप क्षेत्रीय प्रमुख, श्री पराग गोगटे ने की.

रायपुर क्षेत्र

दिनांक 20 नवंबर, 2021 को रायपुर क्षेत्र द्वारा बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान योजना का आयोजन किया गया. इस अवसर पर पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर के शैक्षणिक सत्र 2019-20 में एम.ए. (हिन्दी) में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली छात्रा को क्षेत्रीय प्रमुख श्री सत्यरंजन महापात्र एवं उप महाप्रबंधक (नेटवर्क), श्री रंजीत कुमार मंडल सम्मानित किया.

अनुभव-अभिव्यक्ति

संस्मरणः मॉल विजिट का पहला अनुभव

बात कुछ 17-18 वर्ष पुरानी है जब हर वर्ष की भांति इस बार भी गर्मी की छुट्टियों का बड़ी बेसब्री से इंतज़ार था और इंतज़ार होता भी क्यों नहीं? इस बार परीक्षा का बोझ हल्का होने के बाद सूरत वाले मामाजी के यहां जो जाना था. सूरत जाने की सारी तैयारियां हो चुकी थी. मैं बहुत खुश थी और अगले ही सप्ताह इतवार को सुबह मैं और मेरी बहन वीनू, अपनी माँ के संग सूरत जाने वाली रेलगाड़ी में सवार हो चुके थे. मन सूरत भ्रमण की ख्याली हिलोरों में इस कदर डूबा हुआ था कि मेरे गांव सतलाना से सूरत तक की दिन भर की यात्रा पलक झपकते ही पूरी हो चुकी थी.

मामाजी सूरत के कपड़ा बाजार में एक बड़े कारोबारी थे. सूरत में मामीजी और मेरे ममेरे भाई पीनू के साथ एक आलिशान फ्लैट में रहते थे. गांव में एक या दो मंजिला मकान देखते हुए ही अभी तक का बचपन गुज़रा था और ऐसी बहुमंजिला इमारत को देख ऐसा लगा मानो कोई सपना देख रही हूं. जब मामाजी के घर पहुंचे तब तक रात काफी हो चुकी थी. हम सभी खाना खाकर बिस्तर की ओर चल दिये. चकाचौंध युक्त शहर को देखने की आतुरता में भोर के पांच बजे ही आंखे खुल गयी. फ्लैट की बालकनी से सूर्योदय होते हुए देखने का अनुभव गांव के मकान की छत के अनुभव से बिल्कुल अलग था.

चाय-नाश्ता करते वक़्त मामाजी ने हमें शॉपिंग मॉल घूमाने के बारे में बताया. नाश्ता करके हम गाड़ी में मॉल के लिए निकल गये. अभी तक मुझे लग रहा था कि हम किसी कपड़े या खिलौने की दुकान से खरीददारी कर और किसी होटल में खा पीकर घर लौट जाएंगे लेकिन जैसे ही हमारी गाड़ी ने राहुल राज नामक कांच की एक बहुमंजिला इमारत की पार्किंग में प्रवेश किया तो पता चला कि मॉल के बारे में मेरी कल्पना असलियत के मॉल से कोसों दूर थी. जब लिफ्ट में खड़े होकर पार्किंग से मॉल में पहुंच कर देखा तो मानो आंखें ही चौंधिया गयी. यहां तो पूरा का पूरा बाज़ार ही सजा हुआ था. कपड़े, खिलौने, ज्वैलरी, जूते, कॉफी शॉप, बेकरी, इलेक्ट्रॉनिक, जनरल स्टोर क्या-क्या नहीं था. ऐसा लग रहा था मानो ब्रह्मांड की समस्त आवश्यक वस्तुएं एक स्थान पर एक ही छत के नीचे लाकर रख दी गयी हो. हर कोई सामान की बहुलता और विविधता तो गागर में सागर भरने के समान थी. अलग-अलग मंज़िलों में आवगमन के लिए एस्केलेटर (चलायमान सीढ़ियां) लगे हुए थे, जिस पर एक तरफ खड़े लोग आसमान पर जाते हुए मालूम होते थे तो दूसरी ओर जमीन में धंसते हुए. एक तरफ तो सुगमता इतनी कि कोई बिना पैर चलाये ही गंतव्य तक पहुंच जाए और मेरे जैसे नवागत के लिए दुर्गमता इतनी कि एस्केलेटर पर पांव रखते वक़्त नज़र हटी और दुर्घटना घटी. इन चलने वाली सीढियों पर चढ़ने में मुझे संकोच हो रहा था मगर बकरे की माँ कब तक खैर मनाएगी आखिर डरते-डरते ही सही पर एस्केलेटर पर सवार होकर हम पहली मंजिल पर पहुंच ही गये.

वहां पहुंचते ही मामाजी हमें आइसक्रीम पार्लर ले गए. मेन्यू कार्ड पकड़ाते हुए मामाजी ने हमें मनपसंद आइसक्रीम चुनने को कहा. हमारे गांव के मेले में मिलने वाली रंग-बिरंगी, खट्टी-मिट्ठी आइसक्रीम से परे पचासों आइसक्रीम की सूची देख मैं तो भौंचक्की ही रह गयी. मानो आइसक्रीम की सूची पढ़ते-पढ़ते ही पेट तृप्त हो गया. खैर मेरी और वीनू की झिझक और असमंजसता को भांपते हुए मामाजी ने पीनू की पसंद की ही बटर स्कॉच हमें भी दिलवा दी. पीनू मॉल की संस्कृति से हमारी तरह अनभिज्ञ थोड़े ही था. अपनी इसी ही बढ़त के कारण आज वह हम बच्चों का पथ-प्रदर्शक था किंतु गांव के हाट बाज़ार में मोलभाव करके आइसक्रीम खाने में जो आनंद मिलता है उसकी अनुभूति पीनू को नहीं थी.

मामाजी ने अपने और सभी बड़ों के लिए कापुचिह्नो और लैटे का ऑर्डर दिया. आज पहली बार इस बात का संज्ञान हुआ कि कॉफी में भी विकल्प होते हैं, और तो और इनके नाम पुकारने में जीभ को जो संघर्ष करना पड़ता है वह तो मानों परिश्रम की पराकाष्ठा है. जब मामाजी को कापुचिह्नो का कप लाकर दिया गया तो उसमें मात्र घूंट भर कॉफी थी. ऐसा लग रहा था जैसे कॉफी के स्थान पर कोई मर्ज़ की दवा देकर चला गया हो.

खैर यह मॉल की अपनी संस्कृति है, अपनी बाज़ार प्रणाली है. यहां से हम एक कपड़े की दुकान पर गए जहां पर अलग-अलग ब्रांड के कपड़े टंगे हुए थे. अभी तक मैंने गांव में सिले हुए कुर्ते, सलवार-कमीज, बुश्शर्ट और पैंट को पहनने का ही रिवाज़ देखा था और यहां एक साथ रेडीमेड कपड़ों की कतार देख आंखें फटी की फटी रह गईं. हर प्रयोजन के लिए अलग-अलग कपड़े थे, शादी-त्यौहार के लिए अलग कपड़े तो खेलने के लिए अलग तो वहीं घूमने-फिरने से लेकर सोने तक के लिए अलग-अलग कपड़े थे. इससे पहले कि मैं कुछ समझ पाती, मामीजी ने मेरे लिए एक ड्रेस निकाली और मुझे चेंजिंग रूम में जाकर पहनने के लिए कहा. चेंजिंग रूम में जब ड्रेस पर लगा हुआ प्राईस टैग देखा तो पैरों तले जमीन खिसक गयी. भला कपड़े भी कोई इतने महंगे होते हैं क्या? ज़नाब यहां कपड़े चुनने का विकल्प दिया जाना तो मात्र एक ढोंग है, असल में तो वही लोग यहां स्वच्छंद रूप से विचरण कर पाते हैं जिनकी ज़ेबें भारी होती हैं. हम सभी ने कुछ खरीददारी की और खरीद का सारा सामान पेमेंट काउंटर पर पहुंच गया था. भुगतान कर और बिल लेकर हम ऊपर आ गये.

शॉपिंग मॉल में फूड कोर्ट, मूवी थियेटर, प्ले ज़ोन और कई आकर्षण के केंद्र थे. कपड़े-लतों की खरीददारी करने के बाद हमने एक-एक कर इन सभी स्थानों का भ्रमण किया और यह वाकई में एक अनोखा अनुभव था. वैसे देखा जाए तो यह गांव के मेले या हाट बाज़ार का एक शहरीकृत रूप था. जहां एक ओर गांव की पानी-पूड़ी, चाट और चुस्की की रेहडियों के स्थान फूड कोर्ट ने ले लिया था वहीं दूसरी ओर कठपुतली खेल और नुक्कड नाटक का स्थान मूवी थिएटर ने. मेले के खुले आसमान में झूला झूलने की परम्परा को बंद चारदीवारी में कैद प्ले एरिया की संस्कृति ने विस्थापित कर दिया था. एक-एक कर हम मॉल के सभी स्थानों पर घूम रहे थे किंतु यह विशालकाय मॉल सुरसा के मुख की भाँति बढ़ता ही जा रहा था, खत्म होने का नाम ही नहीं ले रहा था. पर जो भी हो मॉल वाक़ई लाज़वाब और चकित कर देने वाला था. जो कुछ भी मॉल में दिख रहा था वह गांव से पूरी तरह अलग था और मैं एक जिज्ञासु की भांति मॉल को निहार रही थी. शाम को हम सभी वापस घर को लौट आए. वर्तमान में, मैं बैंक ऑफ़ बडौदा में कार्यरत रहते हुए भरूच शहर की वासी बन चुकी हूं जहां शॉपिंग मॉल रोजमर्रा के जीवन का एक अभिन्न अंग बन चुका है किंतु मॉल की पहली यात्रा का अनुभव और इससे जुड़ी यादें आज भी मेरे मन-मस्तिष्क में सूर्य की पहली किरण की भांति तरोताज़ा है.

मोनिका सोनी
बिजनेस एसोसिएट
एम एस एम ई, अंकलेश्वर

पुरस्कार एवं सम्मान

क्षेत्रीय कार्यालय, उदयपुर को नराकास का सम्मान

दिनांक 04 अक्तूबर, 2021 को हिन्दी पखवाड़े के समापन के दौरान नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, उदयपुर द्वारा वार्षिक राजभाषा समारोह में क्षेत्रीय कार्यालय, उदयपुर को राजभाषा हिन्दी के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया.

अभिप्रेरणा कार्यक्रम / कार्यशाला

तिरुच्चिरापल्ली क्षेत्र द्वारा एक दिवसीय राष्ट्रीय हिंदी संगोष्ठी

दिनांक 01 अक्तूबर, 2021 को तिरुच्चिरापल्ली क्षेत्र द्वारा एक दिवसीय राष्ट्रीय हिंदी संगोष्ठी का आयोजन हुआ. कार्यक्रम का उद्घाटन क्षेत्रीय प्रमुख श्री एम जयकिशन के स्वागत संबोधन के साथ हुआ. प्रमुख (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री संजय सिंह इस संगोष्ठी में ऑनलाईन माध्यम से मुख्य अतिथि के रूप में जुड़े. इस आयोजन में सहायक महाप्रबंधक श्री पद्मनाभ अय्यर भी शामिल रहे.

संप्रेषण की आवश्यकता एवं महत्त्व

अपने भावों, विचारों, संदेश एवं सूचनाओं को दूसरे तक प्रेषित करना संचार कहलाता है. संदेश एक स्थान से दूसरे लक्ष्य तक, समाचार पत्रों, सूचना पट्ट, पेम्पलेट, फोन, ईमेल या आमने-सामने बैठकर प्रेषित किया जाता है. सही संचार के लिए आवश्यक है कि संदेश पाने वाला व्यक्ति संदेश को उसी अनुरूप समझे जैसे संदेश देने वाला कहना/बताना चाहता है, इसे ही संप्रेषण कहते हैं.

संदेश को हम बोलकर, लिखकर, चित्रात्मक, इशारों आदि माध्यमों के द्वारा साझा करते हैं. संदेश के महत्व के अनुसार उसे उचित समय पर पहुंचाना भी संचार का प्रमुख उद्देश्य है. इसी क्रम में संचार तकनीक ने हमें इतना विकसित कर दिया है कि आज हम दुनिया के किसी भी कोने में बैठे व्यक्ति के साथ एक ही समय में संचार स्थापित करत सकते हैं.

संप्रेषण मतलब सामने वाले व्यक्ति की बात को उसी अनुरूप समझना जैसे वह कहना या बताना चाहता है. दो व्यक्तियों के बीच सही संचार ही संप्रेषण है.

संप्रेषण को हम उदाहरण के साथ समझते हैं-

जैसे- किसी व्यक्ति को किसी कार्य के बारे में पूछा जाये - क्या तुम यह कर सकते हो?

व्यक्ति का जवाब हो- नहीं कर सकता हूं (इस वाक्य में उत्तर देने वाला व्यक्ति एक वाक्य को एक भाग में ही पूर्ण कर देता है कि वह नहीं कर सकता है) (व्यक्ति कार्य करने में अक्षम है)

व्यक्ति का जवाब हो- नहीं, कर सकता हूं (इस वाक्य में उत्तर देने वाला व्यक्ति वाक्य को दो भागों में पूर्ण करता है कि नहीं, कर सकता हूं) (व्यक्ति कार्य करने में सक्षम है) (इस वाक्य का प्रांरम्भ भले ही नहीं से हुआ है लेकिन वाक्य का अर्थ कार्य करने की सक्षमता को दर्शाता है)

इस बात को हम अन्य उदाहरण से समझने की कोशिश करते हैं-

जैसे- 'कल दुकान को बन्द रखा जाएगा.'
'कल दुकान को बन्दर खा जाएगा.'

एक जरा सी चूक अर्थ का अनर्थ कर देती है, इसीलिए संचार में संप्रेषण की आवश्यकता है जिससे कहने वाले/लिखने वाले व्यक्ति के भाव/अर्थ को सामने वाला व्यक्ति उसी भाव/अर्थ में समझे जैसे वह कहना चाहता है/या उसने लिखा है.

हम सभी एक माध्यम के जरिये अपने दैनिक जीवन के अनुभव को साझा करते हैं, यह हमारी अभिव्यक्ति, हमारे हावभाव, हमारे बोलने के तरीके आदि के बारे में बताता है. ये सभी संचार के विभिन्न तरीके हैं. मैं बस अपने विचारों को एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक साझा करने के लिए एक माध्यम के रूप में संचार कर सकता हूं.

हम किसी भी मदद के बिना अकेले नहीं रह सकते हैं. जीवन में कहीं न कहीं हमें कुछ चीजों की आवश्यकता होती है और उसे व्यक्त करने के लिए हमें एक माध्यम की आवश्यकता होती है. यह संचार का एक तरीका है. संचार दूसरों को हमारे विचारों को बताने की एक प्रक्रिया है. मान लीजिए अगर बोलना ही संवाद करने का माध्यम होगा तो गूंगा व्यक्ति कैसे संवाद करेगा. इसका अर्थ है कि संप्रेषण में बोलना, पढ़ना, लिखना, इशारे, चित्र, हाव-भाव आदि सभी शामिल है.

संचार के विभिन्न माध्यमों में सबसे महत्वपूर्ण है मौखिक संवाद अर्थात् बोलकर. हममें से ज्यादातर लोग अपनी जरूरतों को बात करके या कहकर पूरा करते हैं. जिस माध्यम से आपके विचारों को आसानी से समझा जा सकता है, वह आपके संचार का सबसे अच्छा माध्यम है.

आज के प्रतिस्पर्धात्मक युग में संप्रेषण की बहुत महत्ता है. हर क्षेत्र में संप्रेषण का बहुत ही महत्व है और आज हर कोई क्षेत्र संप्रेषण पर बहुत अधिक जोर दे रहा है. सबको पता है कि ग्राहक ही बाजार का राजा होता है. यदि उसके साथ सही संप्रेषण स्थापित नहीं हुआ तो ग्राहक को स्वयं से जोड़े रखना मुश्किल हो जाएगा.

इसलिए आज हर व्यवसाय, चाहे किसी भी क्षेत्र से संबंधित हो, में संप्रेषण के लिए अलग से विभाग होता है. जहां से ग्राहकों को उत्पाद या सेवा की सही और सटीक जानकारी समय-समय पर दी जाती है. ग्राहकों से बात करके, उनकी जिज्ञासाओं, आवश्यकताओं को जानकर उसके अनुरूप कार्य करना या उत्पाद बनाना ही सफल संप्रेषण है.

आज के प्रतिस्पर्धतात्मक युग में सबके पास समयाभाव है इसलिए हर व्यक्ति विशेष जिसमें आम व्यक्ति, व्यवसायी, उद्योग व्यवसाय वाले, सेवा क्षेत्र और उनमें कार्य करने वाले कर्मचारी हैं, सब कम समय में सही उत्पाद उचित कीमत पर खरीदना पसंद करते है.

आज हम भी कोई वस्तु या सेवा का उपयोग वहीं से करना पंसद करते है, जहां के व्यवसायी या सेवा प्रदाता के साथ हमारा अच्छा संप्रेषण स्थापित हो चुका होता है. यही व्यवसायी और उपभोक्ता के बीच सार्थक संप्रेषण है.

जैसे बात करते हैं हम प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र की जिसमें किसान

वर्ग आता है. किसान जो सब्जी या अनाज बेचता है, अपने उत्पाद की गुणवत्ता, उसकी खूबियों के बारे में ग्राहकों को अवगत कराता है, साथ ही उत्पाद की सही जानकारी ग्राहकों को देता है जिससे किसान और ग्राहक के बीच अच्छा संप्रेषण स्थापित हो जाता है.

बात करते हैं उद्योग व्यवसाय या विनिर्माण क्षेत्र की किसी उत्पादनकर्ता को उचित कीमत पर समय पर कच्चे माल की आपूर्ति हो और उचित स्थान पर हो जाये और उस कच्चे माल की आपूर्ति के लिए कोई व्यवसायी संप्रेषण स्थापित कर लेता है तो उन दोनों के बीच लम्बे समय तक व्यवसायिक संबंध स्थापित हो जाते हैं. इस प्रकार संप्रषण के जरिए दोनों पक्षों की आवश्यकताएं पूरी हो रही हैं. किसी भी व्यवसाय और दो व्यक्तियों के बीच अच्छे संबंध संप्रेषण से ही सम्भव है.

संप्रेषण के माध्यम से ही व्यवसाय को ऊंचाइयों तक पहुंचाया जा सकता है. आज हर क्षेत्र संप्रेषण पर ज्यादा जोर दे रहा है. सभी को पता है संप्रेषण जितना अधिक और अच्छा होगा व्यवसाय का विकास भी उसी अनुरूप बढ़ेगा. इसीलिए आज के समय में संप्रेषण पर अधिकाधिक जोर दिया जा रहा है.

अब हम बात करते हैं ऐसे क्षेत्र की जिसमें संप्रेषण के बिना कुछ भी कार्य सम्भव नहीं है. इसमें सभी सेवा प्रदाता क्षेत्र आ जाते है. मार्ट-माल, शो-रूम, होटल, बैंक, पोस्ट आफिस, बीमा कम्पनी, सर्विस सेन्टर, डिलर, हॉस्पिटल, होटल इत्यादि.

जैसे हम कोई कार खरीदते हैं तो कंपनी के व्यक्ति के द्वारा कंपनी द्वारा प्रदान की गई सेवाओं के बारे में हमारे विचार जानने हेतु आपसे व्यक्तिगत रूप से या फोन के माध्यम से सम्पर्क किया जाता है, जिसके तहत कुछ सुधार इत्यादि की आवश्यकता हो तो उसमें सुधार किया जा सके. ग्राहकों की संतुष्टि को सर्वोपरि रखा जाता है. गाड़ी की सर्विसिंग, बीमा इत्यादि अनेक कार्यों के लिए समय-समय पर कंपनी के व्यक्ति द्वारा आपको अवगत कराया जाता है. यही संप्रेषण है.

हम किसी होटल-रेस्तरां आदि में खाना खाने जाते हैं तो होटल के प्रतिनिधि के द्वारा व्यक्ति से फोन आदि के द्वारा खाने की गुणवत्ता आदि के बारे में हमारी राय जानते हैं. यह संप्रेषण का भाग है. रोज मर्रा की जिन्दगी में ऐसे कई उदाहरण मिल जायेगें जिसमें संप्रेषण का अधिकाधिक उपयोग किया जाता है.

अब हम बात करते हैं हमारे बैंकिंग क्षेत्र की. कोई ग्राहक बैंक में बैंक संबंधित कार्य के लिए आता है और वह बैंक कर्मचारी से बात करता है. दोनों के बीच बातचीत तभी सार्थक कहलायेगी जब ग्राहक की उचित आवश्यकता की पूर्ति हो या उसको हो रही उचित समस्या का हल निकल सके.

कई बार ऐसा होता है कि ग्राहक को किसी सेवा की आवश्यकता होती है लेकिन उसको पता नहीं होता है और वह उसका लाभ नहीं ले पाता या पता होता है तो उसका उपयोग करना नहीं आता या उपयोग करने में संकोच करता है. यदि हम उसे अपने उत्पाद और सेवा के बारे में पहले से ही पूर्ण जानकारी अच्छी तरीके से बता दें तो उसकी समस्या का समाधान स्वतः ही हो जाएगा.

यदि ग्राहक के साथ अच्छे से संप्रेषण स्थापित हो जाता है तो वह हमसे लगातार जुड़े रहते हैं, हमारी सेवाओं का लाभ लेते रहते हैं जिससे अपना व्यवसाय चलता रहता है और ग्राहक का कार्य भी हो जाता है.

अभी डिजिटलाईजेशन के समय में इन्टरनेट और मोबाईल की सहायता से ग्राहक घर बैठे बैंकिंग की सेवाओं का लाभ ले सकते हैं. लेकिन जब तक हम उन्हें उनके बारे में बताएंगे नहीं तब तक ग्राहकों और हमारे बीच संप्रेषण स्थापित नहीं होगा और वो उन सेवाओं का लाभ नहीं ले पाएंगे और हमारे उत्पाद का भी कोई पूर्ण उपयोग नहीं होगा. इसलिए ग्राहकों के साथ संप्रेषण आवश्यक है. संप्रेषण से ही हम उनकी आवश्यकता और जरूरतों को जान सकते हैं. और उनको यथाशक्ति पूर्ण करने की कोशिश कर सकते हैं ये तभी सम्भव है जब ग्राहक और हमारे बीच अच्छा संप्रेषण स्थापित हो.

आज के समय में समय की समस्या सभी के साथ है, चाहे वह ग्राहक या उपभोक्ता है या चाहे कोई सेवा प्रदाता या उत्पादक. समय के साथ-साथ ग्राहकों को जागरूक करते हुए उन्हें नए-नए उत्पादों के बारे में जानकारी देने से दोनों के समय का सदुपयोग होता है.

यदि ग्राहक के साथ आपका संप्रेषण अच्छा है तो वह लगातार आपकी सेवाओं और उत्पादों का लाभ लेता है. यदि उसे कोई समस्या होगी तो वह बिना किसी झिझक के आपसे कहेगा. यदि समस्या उचित है और आप ग्राहक की समस्या का निराकरण कर देते हैं तो ग्राहक खुश हो जाता है.

नेतृत्व की भूमिका या प्रबंधकीय पद के लिए व्यक्ति में संचार कौशल का विशेष रूप से मूल्यांकन किया जाता है. टीम लीडर या प्रबधंक जिस तरह से संवाद करते हैं. वह काफी हद तक उनकी टीम के प्रदर्शन और व्यवहार पर निर्भर करता है. वह उनके लिए एक उदाहरण स्थापित करने और उनमें सर्वश्रेष्ठ होने के लिए माना जाता है.

प्रभावी ढंग से संवाद करने के लिए आवश्यक है कि सामने वाले व्यक्ति की बात को अच्छे से सुना जाए और उस बात को उसी अर्थ में समझा जाए. यही सटीक संप्रेषण है.

महेश कुमार परिहार
अधिकारी
रास शाखा, आणंद क्षेत्र

समर्पण और ऊहापोह का वृत्तांत : 'मल्लिका'

उपन्यास का नाम : मल्लिका,
उपन्यासकार : मनीषा कुलश्रेठ,
प्रकाशक : राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली,
प्रथम संस्करण : 2019, मूल्य : रु. 235/-

संसार अथाह सागर के समान है, जहां इसकी अनंत लहरें पल-पल उठती और गिरती रहती हैं. उफनती हुई ये लहरें कभी म ानवता के बेड़े को साहिल तक लाकर छोड़ देती हैं, तो कभी अनंत काल के लिए अपने अंदर समाहित कर डालती हैं. 'मल्लिका' नामक उपन्यास की नायिका की स्थिति भी कुछ ऐसी ही है.

मल्लिका नामक उपन्यास हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल के प्रणेता, अग्रगण्य एवं अग्रदूत साहित्यकार भारतेन्दु हरिश्चंद्र तथा इतिहास के पन्नों में विस्मृत एक सरल, स्निग्ध एवं हर स्पंदन से झरते कुलीन व्यवहार से ओतप्रोत बाल विधवा और उनकी प्रेमिका 'मल्लिका' के त्रासदीपूर्ण व संघर्षमयी जीवन पर आधारित एक जीवंत उपन्यास है, जिसकी रचना सुप्रसिद्ध कथाकार 'मनीषा कुलश्रेष्ठ' द्वारा की गई है.

सांसारिक सामाजिकता के परिप्रेक्ष्य में व्यक्तिगत रूप से मेरा यह मानना है कि ऐसे साहित्यकार कम मिलते हैं जो इस तरह के मानवीय संबंधों से परे रह पाए हों.

उपन्यासकार 'मनीषा कुलश्रेष्ठ' ने नायिका 'मल्लिका' की मनोदशा की अभिव्यक्ति उपन्यास के मुख्य द्वार पर अर्थात् आमुख में ही कर दिया है. ऐसे में भला कथानक कैसा हो सकता है, हमारे सोच से परे है. उपन्यास का सांगोपांग अध्ययन यह स्थापित करता है कि भारतेंदु हरिश्चंद्र के जीवन में 'मल्लिका' का स्थान उनकी धर्मपत्नी से कहीं ऊपर था.

'मल्लिका' के जीवन में भारतेंदु हरिश्चंद्र के स्थान की प्रतीति ठीक वैसे ही होती है जैसे हिन्दी फिल्म के इस गीत के बोल से कलाकार की आत्मा की आवाज गुंजायमान होती है;

जिस पथ पे चला, उस पथ पे मुझे, आंचल तो बिछाने दे...
मैं बनूँगी पिया, तेरे पथ का दीया, दीया पथ में जलाने दे...।।

पुस्तक के कुछ ही पृष्ठों के पढ़ने से पाठक के अंतर्मन में 'आगे क्या हुआ...' को लेकर कौतुहल की लहरें उठने लगती हैं, और यह तब तक चलता है जबतक कि वह उपन्यास के अंतिम पृष्ठ पर नहीं पहुंच जाता. 'मल्लिका' के विषय में पाठकों के मन में कई प्रकार के प्रश्न आने लगते हैं. इस उपन्यास और उपन्यासकार दोनों की सफलता का प्रमाण तो इस बात में है कि उपन्यास के अध्ययन के दौरान मन में क्षण-प्रति-क्षण उठने वाले अथवा कथानक में आनेवाले सभी प्रश्नों के उत्तर भी कहीं-न-कहीं अवश्य मिल जाते हैं.

उपन्यास का आरम्भ नारी सुलभ गुण चिंता/चिंतन अर्थात् भारतेंदु हरिश्चंद्र के विषय में 'मल्लिका' की व्याकुलता, उनका कुछ पता नहीं चल पाना आदि जैसी स्थिति से हमारा परिचय कराता है. प्रसंग यह है कि भारतेंदु हरिश्चंद्र मेवाड़ की यात्रा पर चले जाने के कारण अचानक कुछ समय से 'मल्लिका' के दृष्टिपटल से बिना किसी सूचना दिए गायब हो जाते हैं.

भारतेंदु हरिश्चंद्र के जीवन में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त 'मल्लिका ' से उनके परिवार के सदस्य भी परिचित होते हैं और इनके परस्पर संबंधों की जानकारी भी उन्हें होती है. हालांकि उपन्यास में इसकी चर्चा अत्यंत संक्षिप्त रूप से की गई है.

उपन्यास के कथानक में भारतेंदु हरिश्चंद्र पहले से ही 'माधवी' के साथ अपने संबंधों को लेकर अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कराए हुए होते हैं. ऐसे में काशी जैसी नगरी में उनके साथ मल्लिका का भी उदय हो जाना, काशी के सम्भ्रान्त लोगों के बीच इस गल्प को पराकाष्ठा पर 'लाने का कार्य करता है. तभी तो काशी प्रवास के आरंभ में ही 'मल्लिका' के परिचित 'वसु दा' द्वारा मल्लिका को समझाया जाता है कि मल्लिका, ये हरिश्चंद्र जी हैं ना, उनकी जितनी सुकीर्ति है, उतनी ही दुष्कीर्ति भी है.'

बहरहाल, उपन्यास में भारतेंदु हरिश्चंद्र की सुकीर्ति और दुष्कीर्ति समानांतर चलती है. मन्नों देवी भारतेंदु हरिश्चंद्र की असमय मृत्यु के पश्चात् उनकी अंतिम इच्छानुसार उनकी पांडुलिपियां, पूर्व में स्थापित कंपनी, पुस्तकें आदि मल्लिका को सौंपना चाहती हैं. जब भारतेंदु हरिश्चंद्र ही नहीं रहे तो 'मल्लिका' के लिए इन चीजों का और काशी में प्रवास का कोई औचित्य नहीं रहा. इस प्रकार वह वैधव्यता को अपना प्रारब्ध मानकर उसे पुनः धारण कर लेती है और सदा के लिए वृंदावन प्रयाण कर जाती है. यहां अब हमारे मन में एक अपरिमित शून्य फ़लक पर सिर्फ अनेक प्रश्न बस कौंधते रह जाते हैं.

उपन्यास के गौण पात्रों में ईश्वर चन्द्र विद्यासागर और बंकिम चंद्र चटर्जी प्रमुख हैं. उपन्यास में मल्लिका को बंगाल के सुप्रसिद्ध साहित्यकार बंकिम चंद्र चटर्जी के रिश्ते में आने वाली बहन के रूप में दर्शाया गया है. ईश्वर चन्द्र विद्यासागर के साथ भी मल्लिका के अच्छे संबंध रहे हैं. मल्लिका के पिता मिताई चटर्जी को बांग्ला गीतों के गीतकार के रूप में प्रस्तुत किया गया है.

उपन्यासकार ने मल्लिका रचित उपन्यास 'कुमुदिनी', 'पूर्ण प्रकाश (कुलीन कन्या)', 'चंद्रप्रभा' आदि का भी उल्लेख किया

है. मल्लिका द्वारा रचित उपन्यास ‘कुमुदिनी’ को हिन्दी का प्रथम उपन्यास ‘परीक्षा गुरु’ से पहले का बताया गया है, जिससे मल्लिका की साहित्यिक अभिरुचि का पता चलता है.

भारतेंदु हरिश्चंद्र और मल्लिका के संबंधों की सबसे बड़ी त्रासदी तो यह है कि सब कुछ जगजाहिर होने के बावजूद भी भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा रचित अपनी जीवनी में मल्लिका की कोई चर्चा नहीं है.

तुलनात्मक दृष्टि से इस उपन्यास की नायिका की दारुण स्थिति मोहन राकेश के नाटक आसाढ़ का एक दिन की नायिका, जिसका नाम भी ‘मल्लिका’ ही है, के समान प्रतीत होती है.

प्रेम की त्रासदी पर आधारित इस उपन्यास में ऐसा नहीं है कि केवल रुदन अथवा वियोग की झलक ही आपको मिलेगी, इसमें कहीं-कहीं हास्य की टपकती बूँदें भी पड़ी हैं. समाज में असहाय का शोषण कई तरह से किया जाता है, इसका जीता जागता प्रसंग तत्कालीन मेदिनीपुर जिले के जिला शिक्षा अधिकारी, रंजन मजूमदार द्वारा मल्लिका का शोषण के असफल प्रयासों में मिलता है.

इस उपन्यास में पाठकों के चित्त को स्पर्श कर चित्त के अंदर सदा के लिए घर कर जाने वाला यदि कोई पात्र है तो वह है, मल्लिका. मल्लिका के पिता के समक्ष भी संघर्षों की कमी नहीं रही. एक तरफ जहां उनका एक मात्र पुत्र क्रांतिकारियों से जुड़कर छुप-छुप कर जीवन व्यतीत करता है, तो वहीं दूसरी तरफ मल्लिका का प्रारब्ध उसे बाल वैधव्य धारण करने लिए विवश कर देता है. इस तरह के कथानक से तैयार पृष्ठभूमि में भला रोमांटिक दृश्यों का जन्म होना अर्थादेश का आमंत्रण ही कहा जाएगा. तथापि देशकाल और वातावरण के अनुरूप आपको ऐसे प्रसंग भी मिलेंगे, जिसे उपन्यासकार ने उपयुक्त स्थान दिया है.

यह उपन्यास सभी वर्ग के पाठकों के लिए लाभप्रद सिद्ध होगा. ऐसे में यदि मुझे कोई अंक देना हुआ तो मैं इस उपन्यास को 10 में से 10 अंक प्रदान करना चाहूंगा. सुप्रसिद्ध कथाकार ‘मनीषा कुलश्रेष्ठ’ की यह रचना उपन्यास की हर कसौटी पर खरी उतरती है.

जय प्रकाश तिवारी
प्रबंधक (राजभाषा)
प्रधान कार्यालय, बड़ौदा

अपने ज्ञान को परखिए उत्तर (पृष्ठ सं. 45)

1.	घ	8.	ग	15.	ख
2.	ग	9.	क	16.	क
3.	क	10.	क	17.	ग
4.	ख	11.	ख	18.	ख
5.	ग	12.	ग	19.	घ
6.	ख	13.	ग	20.	ख
7.	घ	14.	घ		

नराकास, बड़ौदा द्वारा ‘‘सयाजी साहित्य सम्मान’’ का शुभारंभ

दिनांक 22 दिसंबर 2021 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), वडोदरा द्वारा वार्षिक राजभाषा समारोह-2021 का आयोजन किया गया. इस दौरान बैंक के संयोजन में कार्यरत नराकास (बैंक), वडोदरा द्वारा वर्ष 2021 से शुरु किए गए ‘सयाजी साहित्य सम्मान’ के तहत वडोदरा के सुप्रसिद्ध भाषाविद् एवं साहित्यकार डॉ. बंसीधर शर्मा को सयाजी साहित्य सम्मान-2021-22 सम्मानित किया गया. इस अवसर पर मुख्य महाप्रबंधक (परिचालन) श्री अजय कुमार खोसला, निदेशक (सेवा/ कार्यान्वयन) भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, नई दिल्ली श्री. बी एल मीना एवं उप निदेशक (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पश्चिम), मुंबई डॉ. सुस्मिता भट्टाचार्य, प्रमुख (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री संजय सिंह तथा अंचल प्रमुख, बड़ौदा अंचल श्री राजेश कुमार सिंह विशेष रूप से उपस्थित रहे.

अपने ज्ञान को परखिए

1. हाल ही में, किस राज्य के 'पोचमपल्ली' गांव को संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन ने दुनिया का सर्वश्रेष्ठ पर्यटन गांव चुना है?
   (क) गुजरात (ख) केरल
   (ग) कर्नाटक (घ) तेलंगाना
2. बैडमिंटन विश्व महासंघ (BWF) ने किसे इस वर्ष लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार के लिए चुना है?
   (क) साईना नेहवाल (ख) केरोलिना मरीन
   (ग) प्रकाश पादुकोण (घ) तौफीक हिदायत
3. हाल ही में, सोशल मीडिया कंपनी Facebook का नाम बदलकर क्या रखा गया है?
   (क) Meta (ख) Hepy
   (ग) Deca (घ) Dote
4. मोटर गाड़ियों से निकलने वाली गैस कौन सी है?
   (क) हाइड्रोजन गॅस
   (ख) कार्बन मोनोक्साइड गॅस
   (ग) कार्बन डाइऑक्साइड गॅस
   (घ) नाइट्रोजन गॅस
5. हाल ही में, जारी ताजा रिपोर्ट के मुताबिक अमेरिका को पछाड़कर कौन दुनिया का सबसे अमीर देश बन गया है?
   (क) जापान (ख) ऑस्ट्रेलिया
   (ग) चीन (घ) रूस
6. भारत में सबसे बड़ा सोने का उत्पादक राज्य कौनसा है?
   (क) आंध्र प्रदेश (ख) कर्नाटक
   (ग) तेलंगाना (घ) छत्तीसगढ़
7. हाल ही में, किसे वर्ष 2021 का साहित्य का नोबेल पुरस्कार मिला है?
   (क) अल्जारी फेनोलेक्स (ख) रीडो मार्किनसन
   (ग) आदिल फारूकी (घ) अब्दुलरजाक गुरनाह
8. प्रतिवर्ष विश्व टेलीविज़न दिवस नवम्बर महीने की किस तारीख को मनाया जाता है?
   (क) 18 को (ख) 20 को
   (ग) 21 को (घ) 22 को
9. किस राज्य में भारत का पहला 'घास संरक्षण केंद्र' खुला है?
   (क) उत्तराखंड (ख) मध्यप्रदेश
   (ग) हरियाणा (घ) मणिपुर
10. भाखड़ा नांगल परियोजना किस नदी पर है?
   (क) सतलुज (ख) कृष्णा
   (ग) यमुना (घ) कावेरी
11. BCCI ने हाल ही में, किसे राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी (NCA) का अगला प्रमुख बनाया है?
   (क) सचिन तेंदुलकर (ख) वीवीएस लक्ष्मण
   (ग) वीरेंदर सहवाग (घ) गौतम गंभीर
12. भारत में इनमें से कौनसा पद एक निर्वाचित पद है ?
   (क) भारत के मुख्य न्यायाधीश
   (ख) मुख्य चुनाव आयुक्त
   (ग) भारत के राष्ट्रपति
   (घ) राज्यपाल
13. भारत और सिंगापुर द्वारा संयुक्त रूप से किस नौसैनिक अभ्यास का आयोजन किया जाता है ?
   (क) मालाबार (ख) वरुण
   (ग) सिंबेक्स (घ) स्लिंक्स
14. इनमें से कौनसा खेल चार दीवारों से घिरे कोर्ट में खेला जाता है ?
   (क) बोल्स (ख) स्नूकर
   (ग) लैक्रोस (घ) स्कैश
15. वीणापाणी किस देवी का एक और नाम है ?
   (क) दुर्गा (ख) सरस्वती
   (ग) सीता (घ) लक्ष्मी
16. इनमें से कौन सा ब्रिटिश वाहन ब्रांड एक भारतीय कंपनी के स्वामित्व में है ?
   (क) लैंड रोवर (ख) रोल्स रॉयस
   (ग) एस्टन मार्टिन (घ) बेंटले
17. हाल ही में, किसे भारतीय नौसेना के नए प्रमुख के रूप में नियुक्त किया गया है?
   (क) एम जमन महेश्वरी (ख) एल श्री गजानंद
   (ग) आर हरि कुमार (घ) वाई आर निलेश
18. इनमें से किस पर्यटक स्थल का नाम उसे घेरे हुए पांच पहाड़ियों के कारण पड़ा ?
   (क) पणजी (ख) पंचगनी
   (ग) पुडुचेरी (घ) पुरी
19. हाल ही में, राष्ट्रीय कंपनी कानून अपीलीय न्यायाधिकरण (NCLAT) के नए अध्यक्ष कौन बने है?
   (क) नरेश गौतम (ख) विमल शर्मा
   (ग) गजेन्द्र त्रिपाठी (घ) अशोक भूषण
20. योग के संदर्भ में, सूर्य नमस्कार में कितने आसन होते हैं?
   (क) 10 (ख) 12
   (ग) 14 (घ) 16

(उत्तर के लिए पेज नं. 44 देखें)

बैंकिंग शब्द मंजूषा

Affinity Card - संबद्धता कार्ड

ऐसा कार्ड, जो दो संगठनों द्वारा संयुक्त रूप से जारी किया जाता है जिसमें से एक क्रेडिट कार्ड जारीकर्ता होता है और दूसरा कोई व्यावसायिक संघ, विशेष हितधारी समूह अथवा कोई अन्य गैर-बैंकिंग कंपनी.

Collateralized Mortgage Obligation (CMO) संपार्श्विक बंधक दायित्व

संपार्श्विक बंधक दायित्व ऐसे बांड हैं जो बंधक द्वारा अंतरित प्रतिभूतियों या बंधक ऋणों के समूह द्वारा समर्थित होते हैं. सामान्यतया ऐसी प्रतिभूतियों की परिपक्वता अवधि पंद्रह से तीस वर्ष की होती है. इन प्रतिभूतियों के संबंध में एक इकाई के रूप में मासिक आधार पर ब्याज और मूलधन का भुगतान किया जाता है.

Credit Swap - ऋण-अदलाबदली

एक प्रकार का ऋण व्युत्पन्नी लिखत. ऋण अदलाबदली करार में एक पार्टी तभी भुगतान करती है जब विनिर्दिष्ट कर्ज की स्थिति उत्पन्न होती है. ऋण-चूक-स्वैप में विनिर्दिष्ट कर्ज की स्थिति उत्पन्न होने पर सुरक्षित खरीदार की क्षतिपूर्ति करने के लिए अपफ्रंट या आवधिक शुल्क हेतु प्रोटेक्शन विक्रेता सहमत होता है. क्रेडिट-चूक-स्वैप परंपरागत वित्तीय गारंटियों के समान है, लेकिन यह ज्यादा लचीला होता है. यह ज्यादा लचीला इसलिए है कि क्रेडिट-स्वैप वास्तविक चूक के मामले में क्षतिपूर्ति तक सीमित नहीं रहता. प्रत्येक स्वैप में विनिर्दिष्ट कर्ज उत्पन्न होने की स्थिति को उनकी विनिर्दिष्ट जरूरतों के अनुरूप परिभाषित किया जाता है. इस परिभाषा में बताई गई आधारभूत संरचना के विभिन्न अंतरों का भी उल्लेख किया जाता है. यह चूक-स्वैप या कर्ज-चूक-स्वैप कहलाता है.

Exchange Rationing विनिमय-प्रतिबंध/ विनिमय-राशनिंग

विनिमय-प्रतिबंध की आवश्यकता तब होती है जब किसी देश-विशेष की भुगतान-संतुलन की स्थिति लंबे समय से काफी प्रतिकूल बनी हुई हो. इस प्रकार की नियंत्रण-प्रणाली में विदेशी मुद्रा बाजार काम करना बंद कर देता है और विदेशी मुद्रा का लेनदेन एक सरकारी एजेंसी में केन्द्रित हो जाता है. अन्य देशों को किए जाने वाले भुगतानों पर नियंत्रण आयातों, विदेश-यात्राओं तथा शिक्षा एवं अन्य प्रयोजनों के लिए विदेश जाने वाले निवासियों के भत्तों पर प्रतिबंध लगा कर किया जाता है. अन्य देशों से प्राप्त होनेवाली राशियों को यह सुनिश्चित करने के लिए विनियमित किया जाता है कि विदेशी मुद्रा में अर्जित आय प्राधिकृत व्यापारों को दे दी जाए.

Intrinsic Value आंतरिक/ अंतर्निहित मूल्य

किसी विकल्प के मूल्य का वह हिस्सा, जो इस बात से उत्पन्न होता है कि विकल्प धन में निहित है. विकल्प के प्रयोग-मूल्य और आधार-मूल्य के बीच का अंतर. विकल्प के मूल्य का एक और प्राथमिक संघटक है उसका समय-मूल्य.

Liquidity Reserves आरक्षित चलनिधि

किसी भी इकाई के पास उपलब्ध संसाधनों में से अप्रयुक्त वे संसाधन, जिनकी सहायता से भविष्य में अचानक सामने आनेवाली निधियन की नई अपेक्षाओं को पूरा किया जा सके अथवा निधियन में अचानक आई कमी की प्रतिपूर्ति की जा सके. बीसवीं सदी में अधिकांशतः आरक्षित चलनिधि को प्राथमिक आरक्षित (बैंकों से देय नकदी एवं जमाराशियां) और गौण आरक्षित (लघु अवधि, विपणन-योग्य निवेश-प्रतिभूतियां) के रूप में जाना जाता रहा है.

Negative Convexity नकारात्मक अस्थिरता

एक लिखत की समयावधि के दौरान होनेवाली एक विशेष प्रकार की अस्थिरता का उल्लेख करने के लिए प्रयुक्त शब्द. नकारात्मक अस्थिरता का अर्थ है, जब प्रतिफल में वृद्धि होती है तो समयावधि बढ़ती है और जब प्रतिफल गिरता है तो समयावधि भी घटती है. एक लिखत की नकारात्मक अस्थिरता जितनी ज्यादा हो, उसकी समयावधि उतनी ही कम सटीक होगी. प्रतिदेय बांड, ऋण एवं बंधक-आधारित बांडों की नकारात्मक अस्थिरता होती है.

Remat शेयरों को मूर्त रूप में लाना

कोई भी निवेशक अपने डिपोजिटरी सहभागी के माध्यम से राष्ट्रिय प्रतिभूति डिपोजिटरी लिमिटेड (एनएसडीएल) से अनुरोध करके शेयरों को मूर्त रूप में प्राप्त कर सकता है. एनएसडीएल रजिस्ट्रार को सूचित करता है जो ऐसे शेयरों को प्रमाण-पत्र के रूप में प्रिंट करके देते हैं. यह प्रक्रिया डीमैट (इलेक्ट्रॉनिक स्वरूप में) शेयरों को मूर्त रूप प्रदान करने का ही दूसरा नाम है.

Special Economic Zone विशेष आर्थिक क्षेत्र

कर-मुक्त परिवेश करने वाले क्षेत्र, ताकि निर्यातक अन्य देशों के साथ समान स्तर पर अपने प्रतिस्पर्धियों का मुकाबला कर सकें. इन क्षेत्रों में आयातों पर कर से छूट रहती है. विशेष आर्थिक क्षेत्र देश के किसी भी भाग में स्थापित की जा सकने वाली निर्यातोन्मुख इकाइयों (ईओयू) के विपरीत विशेष स्थानों पर बनाए जाते हैं.

Trust Receipt न्यास-रसीद

जब बैंक माल के गिरवीकर्ता को इस प्रयोजन से मुक्त कर दे कि उस माल को बेचकर ऋण की चुकौती कर दी जाए या ऐसे माल को इस शर्त के साथ माल-गोदाम में रख दिया जाए अथवा उसका पुनः पोत-लदान कर दिया जाए कि माल को अथवा उसके बिकती-आगमों को बैंक के लिए न्यासस्वरूप रखा जाएगा.

साभार : भारतीय रिज़र्व बैंक पारिभाषिक कोश

कहानी

वक़्त

घने आम की झुरमुट से निकल कर पूरा चांद क्षितिज के ऊपर आ गया था क्षितिज पर आते ही वह अपनी सफेद चांदनी बिखेर चारो तरफ एक सुखद रमणीक सौंदर्य का ताना-बाना बुनने लगा लेकिन अपने घर की छत पर बैठे नवीन कुमार को लगा कि आज का चन्द्रोदय कुछ ज्यादा ही पथराया, रूखा और बेआवाज है. आकाश से बरसती सफेद चांदनी उन्हें सुख देने के बदले काफी रहस्यमयी और दुख समेटे नजर आ रही थी. चांदनी के पूरी तरह फैलते ही नीचे लम्बे-लम्बे आम के पेड़ की छाया और भी काली और गहरी हो उठी. उन्हें लगा कि पृथ्वी का यह काला सौंदर्य उनकी खुशियों को ही निगले बैठा था, जिसे वह वर्षों चांद का अवलोकन करते हुए कभी भांप नहीं पाए थे. कभी ऐसा भी था कि अपने घर-परिवार और नाते रिश्तेदारों के साथ उनका आत्मीय संबंध था. वे सभी से सहज भाव से मिलते जुलते थे. कच्चे धागे से बंधे प्यार, मोह और स्नेह के अनेक ऐसे बंधन थे, जो उन्हें मजबूत और अपने लगते थे. उनसे मान-सम्मान और प्यार पाकर वह खुद को दुनिया का सबसे खुशनसीब आदमी समझते थे लेकिन वही नवीन कुमार जाने किन विध्वंसक ग्रहों और नक्षत्रों की मार झेलते अब जीवन के सबसे कठिन दौर से गुजर रहे थे. दुखों की आंधी ने सारे रिश्ते बिखेर दिए थे. अब उनके पास रह गया था मर्मात्मक पीड़ा की नींव पर खड़ा उनका घर और उस घर में उनकी मजबूरी में उनका साथ निभाते उनकी पत्नी प्रिया और उनके बच्चे.

आज उन्हें वह क्षण भी याद आ रहा था, जिस पल उन्होंने मल्टीनेशनल कंपनी के फाइनेंस मेनेजर के पद से इस्तीफा देकर व्यापार करने का फैसला लिया था.

क्या कुछ नहीं था उनके पास. ऊंचा पद, धन-संपत्ति, मान-सम्मान और चार बच्चों वाला भरा पूरा परिवार. उनकी तीनों बेटियां सपना, स्वाति, मिष्टी और बेटा रोहित शहर के जाने माने स्कूलों में पढ़ते थे. हर समय व्यापार से जुड़े रहने के कारण उनकी रूचि व्यापार में कुछ ज्यादा ही बढ़ गई थी. जल्दी ही उन्होंने नौकरी से त्याग पत्र देकर भारी कर्ज लेकर अपना व्यापार शुरू कर दिया. कुछ दिन तक सब ठीक ठाक चला मगर अचानक उन्हें भारी नुकसान का सामना करना पड़ा. व्यापार क्या बिखरा, उनका पूरा अस्तित्व ही बिखर गया. रातों रात परिवार सड़क पर आ गया. कर्ज चुकता करते-करते मकान, गाड़ी, पत्नी के गहने और सभी कीमती सामान निकल गए. हमेशा से सुख और समृद्धि में जीने वाला उनका परिवार गरीबी की मार झेलने लगा. ऐसे समय में जब अपनों के सहारे और सहानुभूति की सबसे ज्यादा जरूरत थी, सभी क़रीबी रिश्तेदार यह सोचकर किनारा करने लगे कि जाने कब वे पैसों की मांग कर बैठे. कल तक सबसे घिरा रहने वाला परिवार नितांत अकेला हो गया. जल्दी ही वे बंगले से निकलकर दो रूम वाले किराये के फ्लैट में शिफ्ट हो गए. उनकी हैसियत अब फ्लैट का किराया चुकाने की भी नहीं रह गई थी. लेकिन एक बार उच्च वर्गीय जीवन जी लेने के बाद चाह कर भी वे उससे छोटे फ्लैट में नहीं रह सकते थे, इसलिए बाकी के खर्चों में उन्हें भारी कटौती करनी पड़ी.

पहले जहां बच्चों का दिन ब्रेड बटर और जूस से शुरू होता था, अब बमुश्किल नमक वाली दो-दो रोटियां और अचार मिलता. दूध के गिलास के बजाय सादा पानी पीना पड़ता. दो तीन महीने किसी तरह मुहल्ले में उन लोगों का इज्जत के साथ निर्वाह हुआ, फिर तो लोगों के सामने धीरे-धीरे उनकी गरीबी उजागर होने लगी. इसके बाद दुकानदार से लेकर पड़ोसी तक की नज़रें बदलने लगी. कुछ ही दिन पहले तक घर पर राशन बांध कर पहुंचाने वाले दुकानदार की नज़र तक बदल गई थी. अब उनकी आंखों में व्यंग्य नजर आता. छोटी-छोटी चीजों के लिए भी उसे देर तक खड़ा किए रहता और दूसरे ग्राहकों से बात करता. बार-बार मांगने पर मांगे गए समान का आधा सामान देता, वह भी कुछ ना कुछ सुना कर. जैसे, आइंदा जल्दी रहे तो दूसरे दुकान से सामान खरीद लेना. हां पिछले महीने के हिसाब में दस रूपये बाकी थे, दे जाना, वरना आगे से यह उधार भी बंद ही समझना.....

घर परिवार की दुर्दशा देख सपना की माँ प्रिया टूटने लगी थी. कभी उसके पांव गाड़ी से नीचे नहीं उतरते थे. आज रिक्शा पर बैठने के लिए भी सोचना पड़ता. बच्चों को एसी के बिना नींद नहीं आती थी पर अब बिजली बिल समय पर न भरने के कारण लाइट भी कट जाती. प्रचंड गर्मी में बच्चों को किसी तरह यहां-वहां बैठकर गुजारा करना पड़ता था. बच्चों की तक़लीफ नेहा से देखी नहीं जाती थी. उसने बहुत सोचा और फिर निर्णय लिया कि जब तक नवीन कुमार जी का व्यापार फिर से नहीं संभलता, अपने दो बच्चों रोहित व मिष्टी को देवर राजेश के घर छोड़ देगी. हालांकि इससे पहले एक दिन के लिए भी उसने कभी बच्चों को खुद से अलग नहीं किया था. देवर- देवरानी से मदद का आश्वासन पाकर वह लौट आई थी. पर महीने दो महीने गुजरते ही उनकी नजरें भी बदलने लगी. देवरानी प्रियंका तो रोहित और मिष्टी के सामने ही अपने बच्चों को फल, दूध

और मिठाइयां दे देती जबकि वे दोनों टुकुर-टुकुर देखते रहते. वह कई बार उन्हें भी कुछ फल व मिठाइयां दे देती मगर साथ में दो बातें भी सुना देती. नवीन कुमार को बच्चों की स्थिति का अंदाजा हुआ तो उन्होंने उन्हें वापस बुलवा लिया. अपनों के बर्ताव ने प्रिया को डिप्रेशन में डाल दिया. प्रिया से ज्यादा हिम्मती तो उसके बच्चे निकले. उन्होंने परिस्थिति की विकटता को समझ कर बड़े स्कूल से नाम कटवा लिया और बगल के साधारण स्कूलों में एडमिशन ले लिया. पढ़ाई के अलावा वे घर पर ही कुछ- कुछ काम करके पापा का हाथ बंटाने लगे. सपना ने घर-घर जाकर सामान बेचना शुरू किया. इसके अलावा एकाध घंटे घर पर बच्चों को ट्यूशन देने लगी, बचे हुए समय में वह लिफाफे बनाती. स्कूल में लंच टाइम में जब बच्चे अपने टिफिन खोलते, सपना अपने हाथ से बनाई रोटी का निवाला पानी से गटकती और सोचती रहती कि पता नही मां ने कुछ खाया होगा या नहीं.

बहरहाल, बच्चों की हिम्मत की बदौलत घर की माली हालत में काफी सुधार आ गया था. मगर पैसा कमाने की धुन ने सबको व्यस्त कर दिया था. रिश्तेदारों द्वारा पहले ही पागल करार दी गई प्रिया अपने परिवार में भी अकेली होती जा रही थी. उसका ड्रिपेशन इतना बढ़ गया कि उसने खाना पीना छोड़ दिया. वह बिस्तर से जा लगी. अब न तो उस पर बच्चों के समझाने का असर होता, न पति के समझाने का. किसी तरह पैसों का इंतजाम कर डॉक्टर को बुलाया तो वह नर्सिंग होम में दाखिल देने की सलाह देकर चला गया. घर की स्थिति ऐसी नहीं थी कि नर्सिंग होम का खर्च वो उठा पाते. बच्चे और नवीन कुमार मिलकर बारी-बारी प्रिया का ख्याल रखते पर उसकी स्थिति दिन प्रतिदिन बिगड़ती जा रही थी. एक दिन प्रिया की सबसे छोटी बेटी मिष्टी का जन्मदिन था. सभी ने मिलकर एक छोटा सा आयोजन किया, जिसमें उसकी दो सहेलिया भी शामिल हुई. लंबे अरसे बाद परिवार में कोई समारोह हो रहा था प्रिया बिस्तर पर लेटे-लेटे सब कुछ देख रही थी और मुस्करा रही थी. मिष्टी ने केक काटने के बाद छोटा सा टुकड़ा मम्मी को खिलाना चाहा. जैसे ही उसने केक आगे बढ़ाया, प्रिया का मुस्कराता चेहरा एक ओर को लुढ़क गया. न जाने किस घड़ी व काल के गाल में समा गई थी, किसी को आभास तक नहीं हुआ. क्षण भर में खुशियों भरा माहौल मातम में बदल गया. बच्चों की चीखों से घर गूंज उठा. दुख की घड़ी में किसी ने उनसे यह नहीं पूछा कि घर में पैसे है भी या नहीं. न चाहते हुए भी उन्होंने प्रिया की अंतिम निशानी उसके सोने के कड़े को बेच दिया, जिसे अंत तक प्रिया ने नहीं उतारा था. उन्हीं पैसों से उन्होंने तेरहवीं तक का सारा इंतजाम छोटे पैमाने पर करवा दिया. उस दिन घर में अच्छे और स्वादिष्ट पकवान बनाये जा रहे थे. सबसे छोटी मिष्टी मां को खोकर सबसे ज्यादा दुखी और मायूस थी. अचानक घर में पकते स्वादिष्ट भोजन को देख उसका दुख जाने कहा तिरोहित हो गया और भूख प्रबल हो उठी. जी भर खाना खाने के लिए उसका जी ललचा उठा. वह चोरी चोरी भंडार में घुस गुलाब जामुन निकालने लगी, तभी दादी की तेज आवाज आई कौन है? वहां डर के मारे मिष्टी ने कटोरी मेज के नीचे लटका दी ओर बाहर निकल आई. दादी उसे देख गुस्से से चिल्लाई ब्राह्मणों के खाना खाने के पहले कोई भी खाने को हाथ नहीं लगाएगा. जाने कैसे दादी ने उसके मनोभाव पढ़ लिए थे. तब दादी की आवाज सुन सपना का ध्यान मिष्टी की तरफ गया. सामने खड़ी मिष्टी की आंखों से छलकती भूख और असंतोष की भाषा उसे समझने में जरा सी भी देर नहीं लगी. पास बैठे स्वाति और रोहित की आंखों में भी उसे कुछ वैसे ही भाव नजर आए. बड़े होने के कारण और माहौल का खयाल कर वे लोग अपनी भूख छिपाए बैठे थे.

इतने दिनों से मां की तरह अपने छोटे-छोटे भाई बहनों का खयाल रखती सपना उनके लिए मां जैसी हो गई थी. उसके तीनों छोटे भाई-बहनों ने घोर कष्ट झेला था. इस कारण भूख ने मां की मौत का दुख भी बच्चों के दिल से कम कर दिया था.

सपना को मां का चेहरा याद आ गया. कितना खयाल रखती थीं वह अपने बच्चों का. सभी भाई-बहन खाने में नखरे करते लेकिन मां उन्हें खिलाने को आतुर रहतीं. वह सबकी पसंद का खाना बनातीं. समय ने उन्हें क्या बना दिया था.

मां को याद कर सपना की आंखें भर आईं. उसका दिल चाह रहा था कि फूट-फूट कर रोए लेकिन दिल पर जैसे आंसुओं का थक्का सा जम गया था. आज उसकी मां की तेरहवीं भोज में बच्चे खाने को लालायित थे तो भला उस मृत आत्मा को शांति कैसे मिल सकती थी... भले ही मां आज लोकातीत थी लेकिन सपना जानती थी कि अगर वह कहीं से बच्चों को देख रही होगी तो बच्चों को तृप्त देखकर ही उनकी आत्मा भी संतुष्ट होगी, फिर भले ही बच्चे पंडितों से पहले ही क्यों न खा ले .

सपना का व्याकुल मन भाई बहनों के लिए करूणा से भर उठा. वह झटके में उठी, तीन थालियां लाई और उनके सामने खाना परोस दिया. कुछ देर तीनों असमंजस में खड़े रहे मगर सपना की मुस्कुराहट देखते ही वह खाने पर टूट पड़े. भूखे भाई-बहनों को खाते देख आत्मसंतुष्टि के साथ-साथ एक अजीब सी वेदना उसके दिल में उठी. तभी उसे दादी का कर्कश स्वर फिर सुनाई दिया, अरे मूर्खों, ये तुमने क्या किया? पहले ब्राह्मणों को

जिमाया जाता है, मगर तुमने तो इसे पहले ही जूठा कर दिया. जीते जी तुम्हारी मां ने कितने कष्ट झेले थे, कम से कम मरने के बाद तो उसे शांति दे देते. दादी की बातों से सपना के दिल में विद्रोह की आग धधक उठी. सुबह से ही उन्हें नसीहतें मिल रही थीं पर कोई ऐसा नहीं था जो आगे बढ़ कर उन्हें गले लगा लेता. बस दादी, बच्चों को कुछ मत कहिए. अगर सचमुच मम्मी की आत्मा यहीं कहीं है तो भूखे बच्चों की तरसती निगाहों के सामने ब्राह्मणों के खा लेने मात्र से उनकी आत्मा को कभी शांति नहीं मिलेगी. उनकी सच्ची शांति तो बच्चों के सुख-दुख से जुड़ी थी. आपको मेरी बातें शायद न समझ आएं क्योंकि मां के जीते जी आपने कभी उनका खयाल नहीं रखा, कभी उनके दिल में झांकने की कोशिश नहीं की. जिंदगी ने पिछले कुछ वर्षों में सपना को इतने दुख दिए थे कि वह समय से पहले ही बड़ी हो गई थी. अब उसे धर्म कर्म की बातें बेबुनियादी लगती थी. बस उसे दुख था तो यह कि उसकी मां ने परिस्थितियों के आगे हथियार डाल दिए. तभी अचानक पापा की तेज मगर खनकती सी आवाज आई. वह तेजी से उनकी ओर आ रहे थे. पास आते ही बोले, बच्चों तुम्हें जान कर खुशी होगी कि एक मल्टीनेशनल कंपनी मे मुझे उंचे ओहदे पर नियुक्ति मिल गई है. अब हम जल्दी ही पटना से कोलकत्ता शिफ्ट कर जाएंगें.

पापा की बात सुनकर थोड़ी देर के लिए सपना जड़ सी हो गई. उसे लगा, मानो सारी कायनात ही थम गई है. बरसों से दिल में जमा आंसुओं का थक्का सैलाब बन आंखों के रास्ते उमड़ पड़ा.

अब तक जिस आत्मशक्ति के सहारे वह सबको संभाले हुए थी, अचानक वह मलिन होने लगी. तीन बरसों में परिवार में इतना कुछ घटित हो गया था कि सपना पत्थर बन चुकी थी. आज पापा के मुंह से यह खुशखबरी सुन कर खुद पर काबू न रख सकी. मम्मी की मृत्यु के बाद से अब तक रोकी हुई रूलाई बांध तोड़कर बाहर निकल आई और वह फूट-फूट कर रो पड़ी. पापा ने उसे चुप कराने की बहुत कोशिश की पर उसका रूदन आज हद पार करने पर आमादा था.

तभी एक तेज ठंडी हवा का झोंका सपना को छूकर गुजर गया. उसे अपने कंधे पर किसी का स्पर्श महसूस हुआ तो वह चौंक उठी. न जाने क्यों उसे लगा मानो पंचतत्व में विलीन उसकी मां का एक तत्व उसे छूकर दिलासा दे रहा है.

शीला केलवानी
व्यवसाय सहायक
निरीक्षण व अंकेक्षण विभाग
क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल

विविध

पुणे अंचल की तिमाही हिंदी पत्रिका 'सह्याद्रि' का विमोचन.

बड़ौदा अंचल की हिंदी पत्रिका 'बड़ौदा दर्पण' का विमोचन

नराकास, जोधपुर द्वारा प्रश्नावली प्रतियोगिता आयोजित

भरूच क्षेत्र में ग्राहक सम्मान कार्यक्रम का आयोजन

चित्र बोलता है.

1

कुछ बदला है और बदलना है.
कदम मिलाकर चलना है.
बाधा रोक नहीं सकती अब,
निरंतर आगे बढ़ना है.

अमरेंद्र कुमार, मुख्य प्रबंधक
डिजिटल ग्रुप, बीसीसी, मुंबई

2

अब हर घर टेक्नालजी का फेरा है,
मिटा हर घर का अंधेरा है,
अब हर घर मोबाइल-कंप्यूटर का बसेरा है,
तभी तो घर-घर खुशहाली का डेरा है,
ये मेरे नए भारत का नया सवेरा है.

सिद्धांत सिंह, वरिष्ठ प्रबन्धक,
सरकारी संपर्क एवं पी.एस.यू.
व्यवसाय विभाग, नई दिल्ली

3

चलो साथियों साथ चलें,
साथ पढें और साथ बढें.
जब डिजिटल शिक्षा पाएंगे हम,
विश्वविजेता बन जाएंगे हम.

सुनीता हेमब्रम, वरिष्ठ प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय, रायपुर

आपदा ने खोल दिए दूरस्थ शिक्षा की खिड़की
शिक्षा से न वंचित हो कोई लड़का या लड़की.
तकनीक की समावेशी ताकत का क्या कहना
हर जगह पहुंची तकनीक राजमहल हो या झोपड़ी।।

गौतम कुमार,
बड़ौदा अकादमी, वडोदरा

गांव गांव एक लहर चली,
डिजिटल शिक्षा गली-गली.
किताब क्लास स्कूल कहां,
कर शिक्षा हासिल, जीत सारा जहां.

अरविंद मिश्रा, अधिकारी
क्षेत्रीय कार्यालय, रायपुर

कोरोना रूपी दीमक ने जब कतर दिए सारे अरमान,
तकनीकी रूपी संजीवनी का, शिक्षा जगत को मिला वरदान.
जाति भाषा का भेद मिटा,शिक्षा बनी सुगम और आसान,
सात समंदर की दूरियां मिटी,परिवार बना सारा जहान.

मोनिका सोनी,
व्यवसाय सहयोगी, भरूच क्षेत्र

प्रथम तीन विजेताओं को पुरस्कार स्वरूप रू. 500 का गिफ्ट कार्ड / राशि दी जा रही है

'चित्र बोलता है' के स्थायी स्तंभ के अंतर्गत जुलाई-सितंबर, 2021 अंक में प्रकाशित चित्र पर पाठकों से काफी उत्साहवर्धक प्रतिक्रियाएं/रचनाएं प्राप्त हुई हैं. पाठकों से अनुरोध है कि इस श्रृंखला में प्रकाशित इस चित्र पर आधारित अपने विचार पद्य के रूप में हमें अधिकतम चार पंक्तियों में लिख कर भेजें. श्रेष्ठ तीन रचनाओं को पुरस्कृत (प्रत्येक को रू. 500/-) किया जाएगा और उन्हें हम 'अक्षय्यम्' के आगामी अंक में भी प्रकाशित करेंगे. पाठक अपने विचार हमें डाक से या ई-मेल पर अपने व्यक्तिगत विवरण और स्वरचित घोषणा सहित 15 मार्च 2022 तक भेज सकते हैं.

संसदीय राजभाषा की तीसरी उप समिति द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, सिलीगुड़ी का निरीक्षण दौरा

दिनांक 29 दिसंबर, 2021 को संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति ने बैंक के क्षेत्रीय कार्यालय, सिलीगुड़ी का राजभाषा विषयक निरीक्षण किया. बैठक में माननीय लोकसभा सांसद डॉ. मनोज राजोरिया एवं राज्यसभा सांसद डॉ. अमि याज्ञिक सहित बैंक के महाप्रबंधक (कोलकाता अंचल) श्री देवब्रत दास, प्रमुख (राजभाषा एवं संसदीय समिति) तथा श्री संजय सिंह तथा क्षेत्रीय प्रमुख, सिलीगुड़ी क्षेत्र श्री दिलीप कुमार प्रसाद उपस्थित रहे.

वित्तीय सेवाएं विभाग, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रधान कार्यालय, बड़ौदा का राजभाषायी निरीक्षण

वित्तीय सेवाएं विभाग, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रधान कार्यालय, बड़ौदा का राजभाषायी निरीक्षण किया गया. यह निरीक्षण उप सचिव (राजभाषा), श्री संजय कुमार एवं उप निदेशक (राजभाषा), श्री भीम सिंह ने किया. इस अवसर पर प्रधान कार्यालय से मुख्य महाप्रबंधक द्वय श्री वेणुगोपाल मेनन, श्री अजय कुमार खोसला, प्रमुख (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री संजय सिंह, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री पुनीत कुमार मिश्र सहित प्रधान कार्यालय के अन्य कार्यपालकगण उपस्थित रहे.

नए साल की शुभकामनाएँ!

खेतों की मेड़ों पर धूल भरे पाँव को
कुहरे में लिपटे उस छोटे से गाँव को
नए साल की शुभकामनाएं!

जाते के गीतों को बैलों की चाल को
करघे को कोल्हू को मछुओं के जाल को
नए साल की शुभकामनाएँ!

इस पकती रोटी को बच्चों के शोर को
चौके की गुनगुन को चूल्हे की भोर को
नए साल की शुभकामनाएँ!

कोट के गुलाब और जूड़े के फूल को
हर नन्ही याद को हर छोटी भूल को
नए साल की शुभकामनाएँ!

उनको जिनने चुन-चुनकर ग्रीटिंग कार्ड लिखे
उनको जो अपने गमले में चुपचाप दिखे
नए साल की शुभकामनाएँ!

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना